लोक कथाओं में अक्लमन्द स्त्रियाँ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title : Lok Kathaon Mein Aklamand Striyan (Intelligent Women in Folktales)
Cover Page picture : King Shahariyaar and His Queen Shaharzaad
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

लोक कथाओं में अक्लमन्द स्त्रियाँ 7

1 कहानी सुना कर जान बचाने वाली लड़की 9

2 किसान की होशियार बेटी 18

3 चालाक देहाती लड़की कैथरीन 26

4 अक्लमन्द कैथरीन 42

5 छोटी अक्लमन्द लड़की 61

6 सरदार जो बेवकूफ नहीं था 70

7 चतुर बेटी 78

8 पहली तलवार और आखिरी झाड़ू 89

9 रत्न जड़ा जूता 103

10 दो बेटियाँ 116

11 चालाक पत्नी 126

12 चॉग कू लाओ का इम्तिहान 130

13 सौ जानवर 137

14 लालच से खाने वाला अन्सीगे करम्बा 151

15 राक्षस के लिये काम 163

16 मछली हँसी क्यों 172

17 बागीचे की जादूगरनी 184

18 होशियार लड़की 194

19 गुलाम बादशाह और उसका बेटा गुल 203

20 एक राजा और चार लड़कियों की कहानी 234

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं"और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में अक्लमन्द स्त्रियॉ

दुनियॉ मे दो तरह के लोग होते हैं – एक तो अक्लमन्द और दूसरे बेवकूफ। ये लोग आदमी, औरत या जानवर कोई भी हो सकते हैं। अक्लमन्द लोग अपनी अक्लमन्दी से खराब से खराब हालतों में भी अपना काम बना लेते हैं और बेवकूफ लोग अच्छे से अच्छे हालात में भी अपने काम बिगाड़ लेते हैं और अपना बहुत कुछ खो देते हैं। एक अक्लनम्द आदमी या जानवर एक ताकतवर आदमी या जानवर से ज्यादा अच्छा होता है।

इससे पहले हमने दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं जिसमें हमने जानवरों और आदमियों की बेवकूफी की कुछ लोक कथाऐं दी थीं। इस पुस्तक में हम केवल स्त्रियों की अक्लमन्दी या बेवकूफी की कुछ लोक कथाऐं दे रहे हैं। अक्लमन्दी केवल आदमियों के पास ही नहीं होती बहुत सारी स्त्रियॉ भी बहुत अक्लमन्द होती हैं और वे अपनी अक्लमन्दी से आदमियों को पछाड़ देती है।

अक्ल्मन्दी की लोक कथाऐं भी दो तरह की पायी जाती हैं। एक तो वे जिनमें उन्होंने अपनी अक्लमन्दी या बेवकूफी का इस्तेमाल अपने लिये किया है और वे उसकी वजह से या तो किसी परेशानी में से निकल आये हैं या फॅस गये हैं। और दूसरी वे जिनमें उन्होंने अपनी अक्लमन्दी या बेवकूफी का इस्तेमाल दूसरों के लिये इस्तेमाल किया है और उससे दूसरे लोगों को फायदा या नुकसान कराया है। इस पुस्तक में दोनों तरह की कथाऐं दी गयी हैं।

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं स्त्रियों की अक्लमन्दी की... । ये सारी लोक कथाएॅ हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं।

1 कहानी सुना कर जान बचाने वाली लड़की[1]

स्त्रियों की अक्लमन्दी की यह पहली कहानी जिस पुस्तक से ली गयी है वह पुस्तक बहुत पुरानी है और सबसे पुरानी और सबसे ज़्यादा मशहूर लोक कथाओं की पुस्तकों में से एक है। यह पुस्तक ईराक देश की 12वीं शताब्दी की कहानियों का संग्रह है।

क्या तुमने "बगदाद का चोर" और "बसरे की हूर" जैसे नाम सुने हैं? शायद न सुने हों पर हमें यकीन है कि तुम सब लोगों ने "अलादीन और उसका जादुई चिराग", "सिन्दबाद की सात समुद्री यात्राऐं", "अली बाबा चालीस चोर" की कहानियाँ तो सुनी भी होंगी और शायद पढ़ी भी होंगी।

ये सब कहानियाँ इसी पुस्तक से ली गयी हैं जिसका नाम है "अरेबियन नाइट्स"। इस पुस्तक की एक विशेषता है कि इस पुस्तक की सब कहानियाँ, यानी 1001 कहानियाँ, केवल एक ही आदमी की कही गयी हैं और एक ही आदमी से कही गयी हैं। कैसी अजीब बात है। कोई ऐसा क्यों करेगा और कोई ऐसा कैसे कर सकता है।

ज़रा सोचो तो कि जिसने भी ये कहानियाँ सुनायी होंगी उसका कितना दिमाग और कितना समय लगा होगा इन सब कहानियों को

---

[1] Girl Who Saved Herself by Telling Stories. From Arabian Nights.

सोचने में और फिर इनको सुनाने में। और जिसने भी सुनी होंगी उसके पास भी कितना धीरज होगा इनको सुनने का।

इसके अलावा ये कहानियाँ ऐसे ही नहीं कही गयी थीं जैसे माँ बाप अपने बच्चों को कहानियाँ सुनाते हैं बल्कि इनको कहने का एक उद्देश्य था और वह उद्देश्य क्या था यह तुम अभी इस कहानी को पढ़ कर जानोगे।

अरेबियन नाइट्स में फारस के बादशाह शहरयार की रानी शहरज़ाद हर रात उसको कहानी सुनाती थी। यह अरेबियन नाइट्स उन्हीं कहानियों का संग्रह है।[2] तो लो जानो कि ये आखिर ये **1001** कहानियाँ शुरू ही कैसे हुईं। यह एक लड़की की अक्लमन्दी की कहानी है।

फारस में एक राजा था जिसका नाम था शहरयार जिसका राज्य भारत और चीन तक फैला हुआ था। एक बार उसको पता चला कि उसके भाई की पत्नी अपने पति, यानी उसके भाई के प्रति, वफादार नहीं थी। यह जान कर उसको अच्छा नहीं लगा।

फिर बाद में पता चला कि उसकी अपनी पत्नी तो उसके भाई की पत्नी से भी ज़्यादा बेवफा थी सो उसने उसको मरवा दिया। जिसने भी उसके हुक्म को नहीं माना उसने उसको भी मरवा दिया।

---

[2] Read some of these stories in English at the Web Site : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/index-arabian-nights.htm

इसके बाद उसने यह निश्चय किया कि वह हर शाम एक नयी कुँआरी लड़की से शादी करेगा और इससे पहले कि वह उसको धोखा दे वह अगली सुबह उसको मरवा देगा।

उसके इस हुक्म से उसके राज्य में बहुत ज़्यादा डर और तबाही फैल गयी और खलबली मच गयी। दिनों दिन कुँआरी लड़कियों की कमी होने लगी क्योंकि जिस लड़की की भी राजा शहरयार से शादी होती वह केवल एक रात ही ज़िन्दा रहती। अगले दिन उसे मार दिया जाता और एक दूसरी कुँआरी लड़की उसके पास ले जायी जाती।

आखिर उसका वज़ीर[3] जिसका काम उन लड़कियों को उसके पास लाना था उसको और लड़कियों को लाने में परेशानी होने लगी।

उसके अपनी भी दो बेटियाँ थीं – शहरज़ाद और दीनारज़ाद। शहरज़ाद उसकी बड़ी बेटी थी। वह बहुत सुन्दर समझदार और अक्लमन्द थी। राज्य भर में यह डर और तबाही फैली देख कर एक दिन उसने अपने पिता से कहा — “अब्बा हुजूर, आप मुझे सुलतान को दे आयें।”

वज़ीर यह सुन कर हक्का बक्का रह गया। उसने अपनी बेटी से पूछा — “बेटी तू जानती भी है कि तू क्या कह रही है?”

[3] Vazir – Vazeer is the Urdu or Arabic word used for the Prime Minister

शहरज़ाद बोली — "जी अब्बू[4] मैं जानती हूँ कि मैं क्या कह रही हूँ।"

वज़ीर बोला — "इसका मतलब है अगले दिन तेरी मौत। नहीं बेटी मैं इसके तैयार नहीं हूँ।"

शहरज़ाद बोली — "आप बिल्कुल फिक न करें अब्बू। बस आप मुझे सुलतान के पास ले चलें। मुझे अपने ऊपर पूरा यकीन है कि मैं खुद को ही नहीं बल्कि बची हुई लड़कियों को भी बचाने में सफल हो जाऊँगी।"

पर वज़ीर इस तरह से अपनी बेटी को खोने के लिये कतई तैयार नहीं था। पर जब उसकी बेटी ने बहुत जिद की तो उसको तैयार होना ही पड़ा। सो वह वज़ीर सुलतान के पास गया और उससे कहा कि अगली शाम वह उसके पास अपनी बेटी को ले कर आयेगा।

सुलतान भी यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है वज़ीर? तुम ऐसा सोच भी कैसे सके? क्या उसको मेरी शर्त का नहीं पता?"

"मालूम है जहाँपनाह। उसको सब मालूम है।"

"फिर?"

"बस वह ऐसी ही जिद कर रही है।"

---

[4] Abboo is the word used to address father in Urdu and Arabic

"देख लेना अगर वह बाद में मना करेगी तो तुम्हें उसकी जान खुद ही लेनी पड़ेगी वरना मैं तुम्हारी जान ले लूँगा।"

"यकीनन जहॉपनाह।"

इस बीच शहरज़ाद ने अपनी छोटी बहिन से कहा — "बहिन मुझे तेरी सहायता चाहिये। आज मेरी शादी सुलतान से हो जायेगी और कल सुबह सुलतान मुझे मरवा देंगें।

मेरे मरने से पहले तुझे मेरी सहायता करनी है। शादी के बाद मैं उनसे प्रार्थना करूँगी कि वह तुझे मेरे साथ जाने दें जो कि मैं उम्मीद करती हूँ कि वह मान लेंगे।

तेरा काम बस इतना है कि सुबह सूरज निकलने से एक घंटा पहले तू मुझे जगा दे और कहे — "बहिन अगर तुम सो न रही हो तो मुझे अपनी मजेदार कहानियों में से कोई एक कहानी सुना दो।"

मैं उठ जाऊँगी और फिर मैं कहानी कहना शुरू कर दूँगी। मुझे पूरी उम्मीद है कि इस तरह से मैं अपने लोगों को बचाने में कामयाब हो जाऊँगी।"

उसकी बहिन तैयार हो गयी। सो अगले दिन शहरज़ाद के पिता ने बहुत दुखी होते हुए रोते रोते अपनी बेटी की शादी सुलतान से कर दी। शादी की रस्म होने के बाद शहरज़ाद ने रोना शुरू कर दिया।

जब उससे यह पूछा गया कि वह क्यों रो रही थी तो उसने बताया कि वह अपनी छोटी बहिन दीनारज़ाद के लिये रो रही थी।

वे केवल दो ही बहिनें थीं और शहरज़ाद अपनी छोटी बहिन को बहुत प्यार करती थी।

सुलतान के नियमों के मुताबिक कल सुबह उसको मरवा दिया जायेगा और फिर वह उसको कभी नहीं मिल पायेगी। सुलतान की बड़ी मेहरबानी होगी अगर वह उसके साथ उसकी छोटी बहिन को भी जाने देगा। कम से कम एक रात तो वे और साथ रह लेंगे।

सुलतान ने इसमें कोई गड़बड़ नहीं समझी और वह इस बात पर राजी हो गया और दीनारज़ाद शहरज़ाद के साथ सुलतान के महल चली गयी।

अपने प्लान के मुताबिक सुबह सूरज निकलने से पहले दीनारज़ाद शहरज़ाद के पास गयी और बोली — "सुबह को तो तुम मर जाओगी बहिन। आज की अपनी ज़िन्दगी की आखिरी रात को तुम मुझे अपनी कोई सबसे अच्छी और मजेदार कहानी सुना दो ताकि यह रात खुशी खुशी कटे।"

शहरज़ाद ने अपनी बहिन को तो कोई जवाब नहीं दिया पर वह सुलतान से बोली — "क्या आप मुझे मेरी छोटी बहिन को एक कहानी सुनाने की इजाज़त देंगे?"

सुलतान बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जरूर जरूर।"

और उसने अपनी बहिन को कहानी सुनानी शुरू की तो एक कहानी में से दूसरी कहानी निकली पर सुलतान को तो सुबह अपने दरबार में जाना था और सुबह तक उसकी कहानी पूरी नहीं हुई थी

सो वह यह कह कर चला गया कि वह रात को उस कहानी का बचा हुआ हिस्सा सुनने के लिये वहाँ जरूर आयेगा।

कहानी सुनने की उत्सुकता में उस समय वह यह भूल गया कि उसे अपनी इस नयी रानी को सुबह होते ही मरवाना है। यह क्रम **1001** रात तक चलता रहा। कैसे?

शहरज़ाद एक बहुत ही होशियार लड़की थी। वह ये कहानियाँ कुछ ऐसे सुनाती थी कि या तो वह उस कहानी को उस रात अधूरा छोड़ देती थी ताकि सुलतान की उत्सुकता बनी रहे और वह फिर अगली रात भी उस कहानी को सुनने आये।

नहीं तो उस कहानी में से एक कहानी और निकालती थी जो सुलतान की उत्सुकता को जगाये रखती थी और वह फिर उस कहानी को सुनने के लिये अगली रात आता था।

इस तरह से समय गुजरता गया और वह वजीर की बेटी शहरज़ाद को अगले दिन सुबह जैसा कि उसका हुक्म था मरवा ही नहीं सका। इसी उत्सुकता की वजह से वह तीन साल तक बची रही। है न कुछ अजीब सी बात।

अब तीन साल तो किसी का दिल जीतने के लिये बहुत होते हैं। इसके अलावा इतने समय में शहरज़ाद के तीन बेटे भी हो गये – एक चलता हुआ, एक घुटनों चलता हुआ और एक गोद में।

इसके बाद सुलतान का वह हुक्म रद्द कर दिया गया और वे दोनों मिल जुल कर बहुत समय तक रहे।

930वीं रात को शहरज़ाद ने कहा — "आज मेरे दिमाग में औरत की धोखाधड़ी की एक कहानी है पर मुझे डर है कि इस कहानी को सुनाने के बाद सुलतान की नजर में मेरी इज़्ज़त कम रह जायेगी। पर मुझे यह भी पूरी उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा क्योंकि यह कहानी और कहानियों से बिलकुल ही अलग है।

औरतें शरारतें तो करती ही हैं पर उनको अपनी उन शरारतों को न किसी को बताना चाहिये और न ही कहना चाहिये।"

इस पर दीनारज़ाद बोली — "बहिन बताओ तो तुम्हारे दिमाग में क्या है। तुम सुलतान से बिल्कुल मत डरो क्योंकि औरतें तो जवाहरात की तरह होती हैं।

अगर वे जौहरी[5] के हाथ पड़ जाती हैं तो वह उनको अपने लिये रख लेता है और बाकी सबको अलग कर देता है। बल्कि वह उनमें से कुछ को ज़्यादा पसन्द भी करता है।

इसी तरह से वह एक कुम्हार की तरह भी होती है जो पकने के लिये भाड़ में अपने सारे बर्तन रख देता है और जब उनको निकालता है तो उसे कुछ तो तोड़ने पड़ते हैं, कुछ को दूसरे लोग इस्तेमाल करते हैं और कुछ जैसे थे वैसे ही वापस निकल आते हैं।"

तब शहरज़ाद बोली — "तब ओ सुलतान सुनो यह कहानी. . ."

देखो कितनी अक्लमन्दी से शहरज़ाद ने खुद को और बहुत सारी नौजवान लड़कियों को सुलतान के हाथों मरने से बचाया। और

[5] Translated for the word "Jeweler"

केवल मरने से ही नहीं बचाया बल्कि सुलतान की सुलताना बन कर उसके तीन बेटों की माँ भी बन गयी।

2 किसान की होशियार बेटी[6]

एक बार की बात है कि एक किसान था। उसके पास कोई जमीन नहीं थी पर उसके पास एक छोटा सा घर था और उसकी एक बेटी थी।

एक दिन बेटी ने अपने पिता से कहा — "पिता जी। हम लोग राजा के पास चलते हैं अगर वह हम लोगों को काई नयी साफ की हुई जमीन दे दे।"

सो वे राजा के पास गये और उससे जा कर एक छोटे से जमीन के टुकड़े को उन्हें देने की प्रार्थना की। राजा ने उनकी जरूरत समझते हुए उनको एक छोटा सा जमीन का टुकड़ा दे दिया। दोनों ने मिल कर उसे खोदा और उसमें कुछ मक्का और कुछ और अनाज बोने का इरादा किया।

जब उन्होंने वह सारा खेत खोद लिया तो उन्हें उसमें खालिस सोने की बनी एक ओखली मिली। उसे देख कर पिता ने बेटी से कहा — "हमारा राजा हमारे ऊपर कितना मेहरबान था कि उसने हमें यह जमीन का टुकड़ा दिया तो हमें यह ओखली उसे भेंट में दे देनी चाहिये।"

---

[6] Peasant's Wise Daughter. A German fairy tale written by Grimms No 94. Translated by Margaret Hunt in her "Grimms' Household Tales". Vol II. London: George Bell. 1884. Taken from : https://en.wikisource.org/wiki/Grimm%27s_Household_Tales,_Volume_2/The_Peasant%27s_Wise_Daughter

पर उसकी बेटी इस बात पर राजी नहीं थी।

उसने कहा — "पिता जी। अगर हमने उन्हें ओखली बिना मूसल के दी तो वह हमसे इसका मूसल माँगेंगे। इसलिये यही अधिक अच्छा होगा कि हम उनसे इस बारे में कुछ न कहें।"

पर किसान ने उसकी बात नहीं सुनी। वह उसे राजा के पास ले गया और उससे कहा कि "क्या वह उससे यह भेंट लेना स्वीकार करेगा?"

राजा ने उससे ओखली ले ली और उससे पूछा कि क्या उसको इसके अलावा और कुछ नहीं मिला। किसान बोला कि नहीं उसको इसके अलावा और तो कुछ नहीं मिला। यह सुन कर राजा बोला कि वह उसके लिये उसका मूसल ले कर आये।

किसान बोला कि उसे इसके अलावा और कुछ नहीं मिला। जब तक वह इसका मूसल ले कर नहीं आता तब तक उसे जेल में डाल दिया जायेगा। राजा के नौकर रोज उसके लिये खाना पानी ले जाते रहे।

किसान बराबर यही चिल्लाता रहता "काश मैंने अपनी बेटी की बात सुनी होती। काश मैंने अपनी बेटी की बात सुनी होती।"

एक दिन नौकरों ने जा कर यह राजा से कहा कि किसान इस तरह कह कह कर चिल्लाता रहता है। "काश मैंने अपनी बेटी की बात सुनी होती।" "काश मैंने अपनी बेटी की बात सुनी होती।" न वह खाता है न वह कुछ पीता है।"

यह सुन कर राजा ने किसान को उसके सामने लाने के लिये कहा। जब किसान राजा के सामने आ गया तो राजा ने उससे पूछा — "तुम हमेशा यह क्यों कहते रहते हो कि "काश मैंने अपनी बेटी की बात सुनी होती।" तुम्हारी बेटी ने तुमसे क्या कहा था।"

किसान बोला — "जनाब उसने मुझसे कहा था कि केवल यह ओखली राजा के पास मत ले जाओ क्योंकि राजा इस ओखली को देख कर इसका मूसल भी माँगेगा। फिर तुम मूसल कहाँ से लाओगे।"

राजा बोला — "अगर तुम्हारी बेटी इतनी होशियार है तो तुम उसे यहाँ ले कर आओ।" सो उसे राजा के सामने आना पड़ा। राजा ने उससे कहा कि अगर वह इतनी होशियार है तो वह उसे एक पहेली बूझने के लिये देगा। और अगर वह पहेली उसने बूझ दी तो वह उससे शादी कर लेगा।

लड़की ने तुरन्त कहा कि वह जरूर उसकी पहेली सुलझाने की कोशिश करेगी। तब राजा ने उससे कहा कि वह उसके पास ऐसे आये कि वह कपड़े पहने भी हो और न भी पहने हो। न तो किसी सवारी पर सवार हो और न ही पैदल हो। न तो वह सड़क पर चल कर आये और न ही वह बिना सड़क पर आये। जब वह इस तरह से आयेगी तभी वह उससे शादी कर सकेगा।

वह वहाँ से चली गयी और उसने वह सब कुछ उतार दिया जो वह पहने थी। उसने अपने आपको एक मछली पकड़ने वाले जाल में लपेटा। अब वह कपड़े पहने भी थी और नहीं भी पहने थी।

फिर उसने एक छोटा सा गधा लिया और मछली पकड़ने वाले जाल को उसकी पूँछ से बाँध दिया। इससे वह गधे की पूँछ के साथ घिसटती जा रही थी। इस तरह से वह न तो चल रही थी और न किसी सवारी पर सवार थी।

इस तरह से गधे को उसे सड़क से ऊपर खींचना पड़ रहा था। उसने अपने पैर के केवल अँगूठे ही जमीन से छुआ रखे थे जिससे वह सड़क पर थी भी और नहीं भी थी।

इस तरह से जब वह वहाँ आयी तो राजा ने समझ लिया कि उसने उसकी पहेली समझ ली है और बूझ भी ली है। तब उसने लड़की के पिता को जेल से आजाद कर दिया और उस लड़की से शादी कर ली। उसने लड़की को बहुत सारी शाही चीज़ें उपहार में दीं।

कुछ साल बीत गये तो एक दिन राजा अपनी सेना को परेड पर ले जा रहा था कि ऐसा हुआ कि कुछ किसान अपनी लकड़ी बेचने के लिये ले जा रहे थे कि वे अपनी अपनी गाड़ियों के साथ महल के सामने रुक गये।

उनमें से कुछ गाड़ियों को बैल खींच रहे थे और कुछ गाड़ियों में घोड़े जुते हुए थे। उनमें से एक किसान ऐसा था जिसके पास तीन

घोड़े थे जिनमें से एक घोड़ी ने बच्चा दिया। इत्तफाक से घोड़ी का वह बच्चा वहाँ से भाग गया और एक गाड़ी के सामने जुते हुए दो बैलों के बीच में जा कर बैठ गया।

जब दोनों किसान वापस लौट कर आये तो दोनों में झगड़ा शुरू हो गया। दोनों एक दूसरे को मारने पीटने लगे और शोर मचाने लगे। वे दोनों इसलिये लड़ रहे थे कि दोनों ही यह कह रहे थे कि घोड़े का बच्चा उनका था।

बैलों के मालिक ने कहा कि वह घोड़े का बच्चा उसका था क्योंकि वह उसके बैलों के पास बैठा था जबकि घोड़ों के मालिक का कहना था कि वह बच्चा उसका था क्योंकि उसके घोड़े ने उसे जन्म दिया था।

अब यह झगड़ा फैसले के लिये राजा के सामने लाया गया तो राजा ने फैसला सुनाया कि घोड़े का बच्चा उसी का है जहाँ वह पाया गया है। सो वह घोड़े का बच्चा बैलों वाले किसान को मिल गया हालाँकि वह उसका था नहीं।

घोड़े वाला बेचारा क्या करता। वह वहाँ से बहुत दुखी हो कर चला गया। उसने यह सुन रखा था कि रानी किसानों के समाज से आती थी सो वह रानी जी के पास गया और उससे अपना घोड़े का बच्चा वापस दिलवाने की प्रार्थना की।

रानी ने कहा कि वह उसे उसका घोड़े का बच्चा वापस दिलवाने में सहायता अवश्य करेगी अगर वह उसकी शिकायत नहीं करेगा

तो। उसने आगे कहा — "कल सुबह जब राजा साहिब अपनी सेना की परेड ले कर जायें तब तुम सड़क के बीचोबीच खड़े हो जाना जिससे हो कर राजा को गुजरना ही है।

अपने साथ एक बड़ा सा मछली पकड़ने वाला जाल ले जाना और उससे सड़क पर मछली पकड़ने का नाटक करना। जैसे जाल डाल कर मछली पकड़ने का फिर उसे एक तरफ को पलट देना।"

फिर उसने उसे यह भी बता दिया कि अगर राजा पूछे कि तुम यहाँ सूखी जमीन पर मछलियाँ कैसे पकड़ रहे हो तो उसे क्या कहना है। अगले दिन वह बीच सड़क पर जा कर खड़ा हो गया रानी के बताये अनुसार वहाँ सूखी जमीन पर से मछलियाँ पकड़ने लगा।

जब राजा ने उसे ऐसे अजीब ढंग से मछलियाँ पकड़ते देखा तो अपना एक आदमी भेज कर उससे पुछवाया कि वह उस आदमी से जा कर पूछे कि वह आदमी वहाँ क्या कर रहा है। आदमी बोला "मैं यहाँ मछलियाँ पकड़ रहा हूँ।"

राजा के आदमी ने उससे पूछा कि वह वहाँ मछलियाँ कैसे पकड़ रहा था जब वहाँ कोई पानी ही नहीं था। किसान बोला "सूखी जमीन पर मछली पकड़ना तो मेरे लिये उतना ही आसान काम है जितना कि एक बैल के लिये घोड़े के बच्चे को जन्म देना।"

राजा का आदमी किसान का जवाब पा कर राजा के पास लौट गया और उसे किसान का जवाब बताया। राजा ने उसे तुरन्त ही अपने सामने बुलवाया और उससे कहा — "यह सड़क पर मछली

पकड़ना और फिर यह जवाब तुम्हारा अपना विचार तो नहीं है। जल्दी बताओ यह सब तुम्हें किसने सिखाया। तुम्हें तुरन्त ही बताना है।

अब किसान इतनी आसानी से तो राजा को यह बताने वाला था नहीं कि यह तरकीब उसे किसने सिखायी सो उसने कहा कि उसे यह तरकीब किसी ने नहीं सिखायी। यह तरकीब उसकी अपनी ही है।

पर राजा को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ सो उसने उसको भूसे के ऊपर लिटा दिया और फिर उसे उसके ऊपर इतना मारा कि उसने यह स्वीकार कर लिया कि यह तरकीब उसकी नहीं थी बल्कि रानी की थी।

जब राजा घर पहुँचा तो वह रानी से बोला — "तुमने मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया। अबसे तुम मेरी पत्नी नहीं हो। तुम्हारा समय अब पूरा हो गया है अब तुम वहीं चली जाओ जहाँ से तुम आयी हो – अपनी किसान वाली झोंपड़ी में।"

उसने रानी पर एक कृपा की कि उसने उसे महल से केवल एक चीज़ ले जाने की इजाज़त दे दी – जो भी उसे सबसे ज़्यादा पसन्द हो। रानी ने सिर झुका कर उसकी आज्ञा मान ली। उसने राजा को गले लगाया चूमा और एक बार अन्तिम बार साथ साथ शराब पीने के इरादे से शराब मँगवायी जिसमें उसने बेहोशी की दवा मिला दी।

राजा ने तो वह शराब काफी पी जबकि रानी ने केवल एकाध घूँट ही पी। कुछ ही देर में राजा बेहोशी की नींद सो गया। जब

रानी ने देखा कि राजा गहरी नींद में सो गया तो उसने कुछ नौकरों को बुलवाया जिन्होंने उसे एक सफेद मुलायम चादर में लपेटा और गाड़ी में लिटा दिया जो दरवाजे के बाहर तैयार खड़ी थी।

रानी खुद भी उसी में बैठ गयी और गाड़ी उसके छोटे से घर की ओर चल दी। घर ले जा कर उसने राजा को अपने बिस्तर पर सुला दिया। वह वहाँ पूरे एक दिन और एक रात सोता रहा। जब वह उठा तो चिल्लाया "मैं कहाँ हूँ।"

उसने अपने नौकरों को भी आवाज लगायी पर कोई भी नहीं आया। आखिर उसकी पत्नी ही उसके पास आयी और बोली — "माई लौर्ड। मेरे प्रिय पति। आपने कहा था कि मैं महल से अपनी पसन्द की एक चीज़ ले कर अपने घर वापस चली जाऊँ सो मैंने आपको लिया और अपने घर चली आयी।"

यह सुन कर राजा की आँखों में आँसू आ गये। वह बोला — "प्रिये तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ। अब घर चलो।" और वह उसे अपने साथ शाही महल ले गया। वहाँ जा कर उसने उससे दोबारा शादी कर ली। वे लोग शायद अभी भी रह रहे होंगे।

3 चालाक देहाती लड़की कैथरीन[7]

अक्लमन्द स्त्रियों की यह पहली लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक दिन एक किसान अपने अंगूर के बागीचे में हल चला रहा था कि उसके हल का फल किसी सख्त चीज़ से टकरा गया। उसने झुक कर देखा तो वह तो एक बहुत ही बढ़िया ओखली[8] थी।

उसने उस ओखली को बाहर निकाल लिया और जब उसने उसकी मिट्टी साफ की तो देखा कि वह तो सोने की ओखली थी। उसने सोचा — "ऐसी ओखली तो केवल एक राजा के पास ही होनी चाहिये सो मैं इसको राजा को दे आता हूँ तो वह मुझे इसके बदले में अच्छा खासा इनाम देंगे।"

जब वह घर आया तो उसकी बेटी कैथरीन उसका इन्तजार कर रही थी। किसान ने अपनी बेटी को उस दिन की मिली सोने की ओखली दिखायी और उसको बताया कि वह उसको राजा को देने जा रहा था।

कैथरीन बोली — "हॉ हॉ इसमें क्या शक है। यह ओखली तो वाकई बहुत सुन्दर है जैसी कि इसको होना चाहिये। पर पिता जी,

---

[7] Catherine, Sly Country Lass – a folktale from Montale area, Italy, Europe. Translated from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956. Translated in English by George Martin

[8] Translated for the word "Mortar". See the picture of a mortar and a pestle above.

अगर आप इसको राजा के पास ले जायेंगे तो राजा तो इसमें कोई न कोई कमी निकाल ही देगा कि इसमें यह चीज़ नहीं है या इसमें वह चीज़ नहीं है और फिर आपको वह चीज़ उसको और देनी पड़ेगी।”

किसान बोला — “और ज़रा यह तो बताना कि इसमें क्या चीज़ नहीं है और राजा को इसमें क्या कमी दिखायी देगी, ओ मेरी सीधी सादी बेटी?”

“आप ज़रा इसको उसको दे कर देखियेगा तो वह कहेगा —

ओखली तो बड़ी भी है और सुन्दर भी, पर ओ बेवकूफ इसका मूसल कहाँ है?

किसान ने अपने कन्धे उचकाये और बोला — “एक राजा ऐसा बोलेगा ऐसा तूने सोचा भी कैसे? तू क्या समझती है कि क्या राजा तेरे जैसा बेवकूफ है?” यह कह कर उसने उस ओखली को अपनी बगल में दबाया और सीधा राजा के महल की तरफ चल दिया।

जब वह राजा के महल के दरवाजे पर पहुँचा तो पहले तो राजा के चौकीदारों ने उसको महल के अन्दर ही नहीं घुसने दिया। पर जब उसने कहा कि वह राजा के लिये एक बहुत बढ़िया भेंट ले कर आया है तब कहीं जा कर उन्होंने उसको महल में घुसने दिया। वे उसको राजा के पास ले गये।

किसान बोला — “ओ राजा, मुझे अपने अंगूर के बागीचे में यह सोने की ओखली मिली तो मैंने सोचा कि इस ओखली को तो

राजा के पास होना चाहिये इसलिये मैं इसको आपके पास ले आया हूँ, अगर आप इसे रखना चाहें तो।"

राजा ने वह ओखली किसान से ले ली। उसको घुमा फिरा कर देखने के बाद ना में सिर हिला कर बोला —

यह ओखली तो बड़ी भी है और सुन्दर भी, पर इसका मूसल कहाँ है?

वह कैथरीन के शब्द ही बोला बस फर्क इतना था कि उसने किसान को बेवकूफ नहीं कहा। वह शायद इसलिये क्योंकि राजा लोग कुलीन घरों के होते हैं और ऐसी भाषा नहीं बोलते।

किसान ने अपने सिर पर हाथ मारा और वह यह कहे बिना न रह सका — "शब्द ब शब्द उसने ठीक ही अन्दाज लगाया था।"

राजा यह सुन कर बोला — "किसने क्या अन्दाजा लगाया था?"

किसान बोला — "माफ कीजियेगा राजा साहब, मेरी बेटी ने मुझसे कहा था कि जब आप यह ओखली राजा को देंगे तो राजा आपसे यही कहेगा और उसने मुझसे यही कहा था जो अभी आपने मुझसे कहा पर मैंने उसका विश्वास ही नहीं किया।"

राजा बोला — "अरे तब तो तुम्हारी यह बेटी बड़ी होशियार लगती है। ऐसा करो कि तुम यह रुई ले जाओ और उसको बोलना कि वह मेरी सारी सेना के लिये इसकी कमीजें बना दे। पर उसको

कहना कि वह यह काम जल्दी ही कर दे क्योंकि मुझे वे अभी चाहिये।"

किसान तो यह सुन कर हक्का बक्का रह गया। पर जैसा कि तुम जानते हो अब तुम राजा से बहस तो कर नहीं सकते न, सो उसने वह ओखली तो वहीं छोड़ दी, रुई की वह छोटी सी गठरी उठायी और राजा को सिर झुका कर अपने घर की तरफ चल दिया।

वह सोच रहा था कि इस ओखली के बदले में कोई इनाम तो उसे क्या मिलता धन्यवाद भी नहीं मिला और उलटे राजा ने उसमें कमी भी निकाल दी और साथ में यह एक मुश्किल काम भी पकड़ा दिया। अब मेरी बेटी बेचारी यह सब कैसे करेगी।

घर आ कर वह कैथरीन से बोला — "बेटी, आज तू फँस गयी।" और उसने उसको राजा का हुक्म सुना दिया।

कैथरीन बोली — "पिता जी, आप तो इतनी छोटी छोटी बातों पर परेशान हो जाते हैं।" कह कर उसने पिता के हाथ से रुई की गठरी ले ली और उसको हिलाया।

चाहे रुई को कितने भी होशियार आदमी ने क्यों न साफ किया हो पर फिर भी रुई में हमेशा ही थोड़ी बहुत गन्दगी तो रह ही जाती है सो जैसे ही कैथरीन ने रुई की उस गठरी को उठा कर हिलाया उसमें से कुछ गन्दगी नीचे गिर पड़ी। वह गन्दगी इतने छोटे टुकड़ों में थी कि मुश्किल से ही दिखायी दे रही थी।

कैथरीन ने उस गन्दगी को उठा लिया और उसको अपने पिता को देती हुई बोली — "यह लीजिये पिता जी, आप अभी अभी राजा के पास वापस चले जाइये और मेरी तरफ से उनसे कहियेगा कि मैं उनके लिये कमीजें तो बना दूँगी पर क्योंकि मेरे पास कपड़ा बुनने की कोई चीज़ या मशीन नहीं है तो वह इन मुट्ठी भर तिनकों से मेरे लिये एक कपड़ा बुनने की मशीन बनवा दें। उनके हुक्म का शब्द ब शब्द पालन किया जायेगा।"

किसान की तो राजा के पास दोबारा जाने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी, खास कर कैथरीन का यह सन्देश ले कर, पर कैथरीन जब उसके पीछे पड़ी तो वह जाने के लिये तैयार हो गया।

वह राजा के पास गया और जा कर कैथरीन का वह सन्देश राजा को दिया तो राजा को लगा कि वह लड़की तो बहुत होशियार थी तो उसने उससे मिलने की इच्छा प्रगट की। अब वह उसे अपनी ऑख से देखना चाहता था।

उसने किसान से कहा — "तुम्हारी बेटी तो बहुत होशियार है। उसको महल में भेजो ताकि मैं भी उससे बात कर के कुछ आनन्द ले सकूँ।

पर ध्यान रहे कि जब वह मेरे पास आये तो न तो वह बिना कपड़ों के हो और न ही वह कपड़े पहने हो। उसका पेट न तो भरा हो और न खाली हो। न उस समय दिन हो न रात हो। न तो वह पैदल हो और न ही घोड़े पर।

वह मेरी हर बात को ध्यान में रख कर ही मेरे पास आये नहीं तो तुम दोनों के सिर काट लिये जायेंगे।"

किसान बेचारा यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ और यह सोच कर मुँह लटकाये हुए घर की तरफ चल दिया कि बस अब तो उन दोनों को मरना ही है अच्छा होता अगर वह अपनी बेटी की बात मान कर वह सोने की ओखली ले कर राजा के पास जाता ही नहीं।

पर अब क्या हो सकता था। अब तो तीर कमान से छूट चुका था। घर आ कर उसने अपनी बेटी से कहा — "बस अब हम तुम दोनों मरने के लिये तैयार हो जायें।"

बेटी ने आश्चर्य से पूछा — "अच्छा? वह क्यों भला? बोलिये पिता जी। वहाँ हुआ क्या मुझे भी तो कुछ बताइये?"

किसान ने राजा के महल में जो कुछ हुआ वह और राजा ने जो कुछ उससे कहा वह सब उसको बता दिया और बोला — यह सब तू कैसे करेगी बेटी?"

यह सुन कर कैथरीन हँस दी — "बस पिता जी इतनी सी बात? आप बिल्कुल परेशान न हों। यह सब बहुत आसान है। मुझे मालूम है कि यह सब कैसे करना है। बस आप मुझे थोड़ा सा मछली पकड़ने वाला जाल ला दें।" किसान ने उसको मछली पकड़ने वाला जाल ला दिया।

अगले दिन दिन निकलने से पहले उसने कपड़ों की बजाय अपने शरीर को मछली पकड़ने वाले जाल से ढका – इस तरह से न

तो वह बिना कपड़ों के थी और न ही उसने कोई कपड़ा पहना हुआ था।

उसने एक लूपिन[9] खायी जिससे उसका पेट न तो भरा और न खाली ही रहा।

अपनी बकरी पर चढ़ी और अपने एक पैर को जमीन पर घसीटते हुए और दूसरे पैर को हवा में उठा कर चली। इस तरह से वह न तो अपने पैरों पर चल रही थी और न ही घोड़े पर सवार थी।

जब वह राजा के महल पहुँची तो उस समय बस थोड़ा सा झुटपुटा ही हो रहा था। इस तरह उस समय न तो दिन ही था और न रात ही थी।

इस तरीके से आते देख कर महल के चौकीदारों ने उसको एक पागल लड़की समझा और महल के बाहर ही रोक दया। पर जब उनको यह पता चला कि वह तो केवल राजा के हुक्म का पालन कर रही थी तो चौकीदार उसको राजा के पास ले गये।

वहाँ जा कर कैथरीन बोली — "मैजेस्टी, मैं आपके हुक्म के अनुसार ही आयी हूँ।" उसको इस रूप में देख कर राजा का तो हँसते हँसते पेट ही फटने लगा।

[9] Lupin or Lupien is a flowering plant whose seeds are eaten, but never have they been accorded the same status as soybeans or dry peas and other pulse crops. See the Lupin beans and its plant images above.

जब उसका हँसना कुछ कम हुआ तो वह बोला — "कैथरीन, मैं तुम्हारे जैसी चतुर लड़की की ही तलाश में था। मैं तुमसे शादी करूँगा और तुमको अपनी रानी बनाऊँगा पर एक शर्त पर कि तुम मेरे कामों में दखल नहीं दोगी। बोलो क्या तुम्हें मंजूर है? मुझसे शादी करोगी?"

शायद राजा सोच रहा था कि कैथरीन उससे ज़्यादा होशियार है इसी लिये उसने यह शर्त रखी। कैथरीन ने कहा कि वह अपने पिता से पूछ कर बतायेगी।

पर किसान ने जब यह सुना तो बोला — "देखो बेटी, अगर राजा तुमको अपनी पत्नी बनाना चाहता है तो तुम्हारे पास और कोई चारा नहीं है सिवाय उससे शादी करने के।

पर यह भी ख्याल रखना कि अगर राजा ने इतनी जल्दी निश्चय किया है कि वह क्या चाहता है तो उतनी ही जल्दी वह यह भी निश्चय कर सकता है कि वह क्या नहीं चाहता है।

इसके साथ यह भी ख्याल रखना कि तुम अपने काम वाले कपड़े यहाँ खूँटी पर टाँग जाना क्योंकि अगर कभी तुमको घर वापस आना पड़ जाये तो कम से कम तुम्हारे पास पहनने के कपड़े तो हों।"

पर कैथरीन तो इतनी खुश और इतनी उमंग में थी कि उसने अपने पिता की बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। कुछ दिन बाद कैथरीन की शादी राजा से हो गयी।

राज्य भर में खुशियॉ मनायीं गयीं। मेले लगे। सराय लोगों से भर गयीं और बहुत सारे किसानों को तो चौराहों पर सोना पड़ा। वे चौराहे भी राजा के महल तक लोगों से भरे पड़े थे।

एक किसान अपनी एक गाय जिसको बच्चा होने वाला था वह वहॉ उसको बेचने के लिये ले कर आया था पर उसको ऐसी कोई जगह नहीं मिल रही थी जहॉ वह अपनी गाय रख सकता।

यह देख कर एक सराय के मालिक ने उससे कहा कि वह अपनी गाय उसके शैड में रख ले। उसके शैड में दूसरे किसानों का सामान भी रखा हुआ था सो वहॉ उस किसान ने अपनी गाय को एक दूसरे किसान की गाड़ी से बॉध दिया।

इत्तफाक की बात कि उसी रात को उसकी गाय को बच्चा बछड़ा हो गया। सुबह को गाय का मालिक अपने दोनों जानवरों को वहॉ से ले कर जाने लगा कि तभी उस गाड़ी का मालिक भी वहॉ अपनी गाड़ी ले जाने के लिये आ गया जिसकी गाड़ी से गाय वाले ने अपनी गाय बॉधी थी।

उसने गाय वाले से चिल्लाते हुए कहा — "गाय के लिये तो ठीक है कि वह तुम्हारी है पर बछड़े को मत छूना वह मेरा है।"

गाय वाला बोला — "तुम क्या कहना चाह रहे हो कि यह बछड़ा तुम्हारा है? यह बछड़ा मेरी गाय ने पिछली रात को ही तो दिया है।"

गाड़ी वाले ने पूछा — "पर यह बछड़ा मेरा क्यों नहीं है। गाय गाड़ी से बँधी थी और गाड़ी मेरी है इसलिये यह बछड़ा भी गाड़ी के मालिक का ही हुआ न?"

दोनों में गर्मा गर्म बहस शुरू हो गयी। गुस्से में आ कर उन दोनों ने पास में पड़ीं डंडियाँ उठा लीं और एक दूसरे को मारने लगे।

दोनों की लड़ाई का शोर सुन कर वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गयी। सिपाही भी दौड़ पड़े। उन्होंने दोनों को अलग अलग किया और दोनों को पकड़ कर सीधे राजा के दरबार में ले गये।

राजधानी की यह पुरानी रीति थी कि उन दिनों राज काज में राजा की रानियाँ भी अपनी राय दे सकती थीं पर रानी कैथरीन के साथ परेशानी यह थी कि जब भी राजा कोई फैसला सुनाता था तो रानी उसका विरोध करती।

राजा उसकी इस बात से थक गया था सो उसने उससे कहा — "मैंने तुमको पहले ही मना किया था कि तुम मेरे मामलों के बीच में नहीं बोलोगी पर तुम सुनती ही नहीं हो। आगे से तुम इस न्याय के दरबार[10] में नहीं बैठोगी।"

कैथरीन ने ऐसा ही किया सो जब वे दोनों किसान उस न्याय के दरबार में लाये गये तब कैथरीन वहाँ नहीं थी। दोनों तरफ की बातें सुन कर राजा ने अपना फैसला सुनाया कि बछड़ा गाड़ी के साथ रहेगा।

[10] Court of Justice

गाय के मालिक को यह फैसला बिल्कुल ही अन्यायपूर्ण लगा पर वह कर ही क्या सकता था। राजा का फैसला आखिरी फैसला था। किसान को इस तरीके से परेशान देख कर सराय के मालिक ने उसको सलाह दी कि वह रानी के पास जाये वही उसके लिये कोई आसान रास्ता निकालेगी।

वह किसान महल गया और वहाँ जा कर एक नौकर से कहा — "क्या मैं रानी साहिबा से बात कर सकता हूँ?"

नौकर ने कहा कि यह मुमकिन नहीं है क्योंकि राजा ने रानी को लोगों के मुकदमे सुनने से मना कर रखा है।

किसान यह सुन कर बागीचे की दीवार तक अकेला ही चलता चला गया। वहाँ उसको रानी दिखायी दे गयी तो वह बागीचे की दीवार कूद कर अन्दर पहुँच गया और रानी के सामने जा कर रो पड़ा। रो कर उसने रानी को बताया कि उसके साथ उसके पति ने कैसा अन्याय किया है।

रानी बोली — "मेरी सलाह यह है कि राजा कल शिकार के लिये जा रहे हैं। वह एक झील के पास शिकार करने जायेंगे। आज कल वह झील सूखी पड़ी रहती है तो तुम ऐसा करना कि एक मछली पकड़ने का जाल अपनी कमर की पेटी से लटका लेना और उस सूखी झील में नछली पकड़ने का बहाना करना।

जब राजा किसी को उस सूखी झील में मछली पकड़ते देखेगा तो वह हँसेगा और तुमसे पूछेगा कि तुम एक सूखी झील में मछली

कैसे पकड़ रहे हो तो तुम उनको यह जवाब देना — "मैजेस्टी, अगर एक गाड़ी एक बछड़े को जन्म दे सकती है तो मै सूखी झील में मछली क्यों नहीं पकड़ सकता?"

अगली सुबह वह किसान अपना मछली पकड़ने वाला जाल ले कर उस झील की तरफ चल दिया जहाँ राजा शिकार खेलने के लिये जाने वाला था।

वह उस सूखी झील के किनारे बैठ गया और मछली का जाल उस झील के अन्दर डाल कर मछली पकड़ने का बहाना करने लगा। पहले वह उस जाल को झील में नीचे गिराता और फिर उसको ऊपर उठाता जैसे कि वह उस जाल में फँसी मछली निकाल रहा हो।

तभी वहाँ राजा अपने सैनिकों के साथ शिकार के लिये आ गये और उस किसान को उस सूखी झील में मछली पकड़ते देखा तो हँस कर बोले — "भले आदमी, क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो तुम सूखी झील में मछलियाँ पकड़ रहे हो?"

किसान ने राजा साहब को वही जवाब दे दिया जो रानी ने उसे बताया था — "मैजेस्टी, अगर एक गाड़ी एक बछड़े को जन्म दे सकती है तो मैं सूखी झील में मछली क्यों नहीं पकड़ सकता?"

यह जवाब सुन कर राजा बोला — "भले आदमी, ऐसा लगता है कि यह जवाब तुमको किसी ने सिखाया है। लगता है कि तुमने रानी से बात की है।"

किसान ने स्वीकार किया कि हॉ उसने रानी से ही बात की है। इस पर राजा ने बछड़े के बारे में एक और नया फैसला सुना दिया कि बछड़ा गाय वाले किसान का था।

उसके बाद उसने कैथरीन को बुलाया और कहा — "तुम फिर सब गड़बड़ कर रही हो और तुमको पता है कि मैंने तुमको यह सब करने से मना किया है पर तुम मानती ही नहीं हो इसलिये तुम अब अपने घर जा सकती हो।"

कुछ पल रुक कर वह बोला — "और हॉ, जो तुमको यहॉ सब से ज़्यादा पसन्द हो वह एक चीज़ तुम अपने साथ अपने घर ले जा सकती हो। तुम इसी शाम को अपने घर चली जाओ और फिर से एक देहाती लड़की बन जाओ।"

कैथरीन ने बड़ी नम्रता से कहा — "मैं वैसा ही करूँगी जैसा आप कहेंगे पर आप मेरे ऊपर एक मेहरबानी करें कि आप मुझे कल जाने की इजाज़त दे दें क्योंकि अगर मैं आज गयी तो हम दोनों के लिये यह बड़े शर्म की बात होगी और आपकी प्रजा हमारे बारे में बातें बनायेगी।"

राजा बोला — "ठीक है। हम लोग आज शाम को आखिरी बार खाना एक साथ खायेंगे और फिर कल तुम चली जाना।"

कैथरीन तो बहुत होशियार थी। शाम को उसने रसोइये को भुना हुआ मॉस, सूअर का मॉस और दूसरा भारी खाना बनाने का हुक्म दिया। यह खाना खाने से राजा को नींद आती और उसको

प्यास भी लगती। फिर उसने उनसे कमरे में से सबसे अच्छी शराब लाने के लिये कहा।

जब वे दोनों खाना खाने बैठे तो राजा ने खूब पेट भर कर खाना खाया और जी भर कर शराब पी। कैथरीन उसके गिलास में शराब उँडेलती रही और राजा पीता रहा।

जल्दी ही राजा को ठीक से दिखायी देना बन्द हो गया और वह अपनी आराम कुर्सी पर ही गहरी नींद सो गया।

कैथरीन ने नौकरों को बुलाया कि वे राजा की आराम कुर्सी ले कर उसके पीछे पीछे आयें। साथ में उसने यह भी कहा कि वे यह काम बिल्कुल चुपचाप रह कर करें एक शब्द भी न बोलें।

वे सब महल से बाहर निकले फिर शहर के दरवाजे से बाहर निकले और फिर वह अपने घर ही आ कर रुकी। तब तक काफी रात जा चुकी थी।

उसने दरवाजे पर से ही आवाज लगायी — "पिता जी, मैं हूँ दरवाजा खोलिये।"

अपनी बेटी की आवाज सुन कर बूढ़ा किसान खिड़की की तरफ दौड़ा और बोला — "बेटी, रात को इस समय? मैंने तुझसे कहा था न कि इन लोगों का कोई भरोसा नहीं।

अच्छा हुआ कि मैंने अपनी अक्लमन्दी से तेरे काम करने वाले कपड़े यहाँ रखवा लिये थे। वे अभी यहीं हैं, खूँटी पर टँगे हुए हैं तेरे कमरे में।"

कैथरीन बोली — पिता जी, पहले मुझे अन्दर तो आने दीजिये। फिर बात करते हैं।"

किसान ने घर का दरवाजा खोल दिया तो देखा कि कुछ नौकर एक आराम कुर्सी पर राजा को बिठाये लिये चले आ रहे हैं। किसान की तो समझ में ही नहीं आया कि यह सब हो क्या रहा है।

कैथरीन राजा को अपने कमरे में ले गयी। उसके कपड़े उतारे और अपने बिस्तर में सुला दिया। यह कर के उसने सब नौकरों को वापस महल भेज दिया और वह खुद भी वहीं उसी कमरे में सो गयी।

आधी रात के करीब राजा की ऑख खुली तो उसको अपना बिस्तर का गद्दा कुछ सख्त सा लगा और चादरें कुछ खुरदरी लगीं। उसने करवट बदली तो देखा कि उसकी पत्नी भी वहीं पास में ही सो रही थी।

उसने कैथरीन को जगाया और उससे पूछा — "कैथरीन, क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम अपने घर चली जाओ?"

कैथरीन बोली — "हॉ राजा साहब। आपने कहा तो था पर अभी दिन नहीं निकला है इसलिये अभी आप सो जाइये। सुबह होने पर बात करेंगे।" राजा फिर सो गया।

सुबह को जब वह गधों के रेंकने आैर भेड़ों के मिमियाने की आवाज सुन कर उठा तो देखा कि दिन निकल आया था और सूरज की किरणें कमरे के अन्दर आ रहीं थीं।

वह चौंक कर उठा क्योंकि वह यह समझ ही नहीं पाया कि वह था कहाँ। पर यह वह यकीन से कह सकता था कि वह उसके अपने महल का उसका अपना कमरा नहीं था।

कैथरीन बोली — "पर आपने मुझसे यह भी तो कहा था कि मैं अपनी सबसे ज़्यादा पसन्द की एक चीज़ महल से ले कर अपने घर जा सकती हूँ। मुझे आप सबसे ज़्यादा पसन्द थे सो मैं आपको ले कर अपने घर चली आयी और अब मैं आपको अपने पास ही रखने वाली हूँ।"

राजा यह सुन कर खूब हँसा और फिर दोनों में सुलह हो गयी। वे दोनों अपने महल वापस चले गये। वे लोग अभी भी वहाँ रह रहे हैं और उसके बाद से राजा अपनी न्याय के दरबार में अपनी पत्नी के बिना नहीं बैठा।

4 अक्लमन्द कैथरीन[11]

देवियों और सज्जनों, पलेरमो शहर में लोग एक कहानी कुछ इस तरह से सुनते सुनाते हैं कि एक समय की बात है कि पलेरमो शहर में एक बहुत ही अमीर दूकानदार रहता था। उसके एक बेटी थी जो जबसे वह छोटी सी थी तभी से वह बहुत चतुर थी। घर में हर विषय पर लोग उसकी बात सुनते थे और उसको मानते थे।

उसकी अक्लमन्दी को देखते हुए उसके पिता ने उसका नाम अक्लमन्द कैथरीन रख दिया था। जब उसकी सारी भाषाओं को सीखने की और सब तरह की किताबों को पढ़ने की बारी आयी तो उसने उनको भी बहुत जल्दी ही सीख लिया और पढ़ लिया और उनमें कोई उसका मुकाबला नहीं कर सका।

जब वह लड़की सोलह साल की हुई तो उसकी माँ चल बसी। इससे कैथरीन इतनी दुखी हुई कि उसने अपने आपको एक कमरे में बन्द कर लिया और उसमें से बाहर निकलने को बिल्कुल मना कर दिया। वह वहीं अपना खाना खाती थी और वहीं सोती थी।

उसके दिमाग में बाहर घूमने की या कहीं थियेटर जाने की या फिर दिल बहलाने के किसी भी साधन की बात आती ही नहीं थी।

---

[11] Catherine the Wise – a folktale from Italy from its Palermo area.
Translated from the book : "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated in English by George Martin in 1980.

उसके पिता की ज़िन्दगी तो बस अपनी इसी एकलौती बच्ची के चारों तरफ ही घूमती थी सो वह उसके इस व्यवहार से बहुत दुखी हुआ।

वह सोचता रहा कि वह कैसे उसको पहले की तरह से हँसता खेलता देखे। जब उसकी समझ में कुछ न आया तो उसने इस बारे में कुछ बड़े लोगों से सलाह लेने का विचार किया।

हालाँकि वह खुद केवल एक दूकानदार ही था फिर भी उसकी जान पहचान बहुत बड़े बड़े लोगों से थी इसलिये उसने शहर के बड़े बड़े लौर्ड लोगों को बुलाया।

उसने उनसे कहा — "भले लोगों, जैसा कि आप सबको पता है मेरी एक बेटी है जो मेरी आँखों का तारा है। पर जबसे उसकी माँ गयी है तबसे उसने अपने आपको एक बिल्ली की तरह अपने कमरे मे बन्द कर रखा है और उसमें से बिल्कुल भी बाहर नहीं निकलती है। अब आप लोग ही मुझे कोई सलाह दें कि मैं क्या करूँ।"

लोग बोले — "तुम्हारी बेटी तो अपनी अक्लमन्दी के लिये संसार भर में मशहूर है। तुम उसके लिये एक बड़ा सा स्कूल क्यों नहीं खोल देते ताकि वह उनको उनकी पढ़ाई में मदद कर सके। शायद इससे वह अपने दुख से बाहर निकल आये।"

पिता को यह विचार बहुत पसन्द आया। वह बोला — "यह तो अच्छा विचार है। मै ऐसा ही करूँगा।"

यह सोच कर उसने अपनी बेटी के पास जा कर कहा — "सुनो बेटी, क्योंकि अब तुम कुछ और तो करती नहीं तो मैंने यह सोचा है कि मैं तुम्हारे लिये एक स्कूल खोल देता हूँ और तुम उसको चलाओ। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

इस बात से तो कैथरीन बहुत खुश हो गयी और उसने उस स्कूल के टीचरों की भी जिम्मेदारी खुद ही ले ली।

स्कूल जल्दी ही खुल गया। स्कूल के बाहर एक साइनबोर्ड लगा दिया गया – जो भी कोई यहाँ कैथरीन के पास पढ़ना चाहे मुफ्त पढ़ सकता है।

यह साइनबोर्ड देख कर बहुत सारे बच्चे – लड़के और लड़कियाँ दोनों ही कैथरीन के पास पढ़ने आने लगे। वह उनको बिना किसी भेदभाव के कुर्सी मेज पर बराबर बराबर बिठाने लगी।

जब उसने एक बच्चे को एक बच्चे के पास बिठाया तो वह बच्चा बोला — "पर यह लड़का तो एक कोयला बेचने वाले का है।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है। कोयला बेचने वाले का लड़का एक राजा की लड़की के पास भी बैठ सकता है। जो पहले आयेगा उसको सीट पहले मिलेगी।" और कैथरीन का स्कूल शुरू हो गया।

कैथरीन के पास एक कोड़ा[12] था जिससे वह बच्चों को काबू में रखती थी। वैसे वह सबको एक सा पढ़ाती थी पर उन लोगों पर ज़्यादा ध्यान देती थी जो पढ़ाई में कमजोर होते थे।

अब इस स्कूल की खबर राजा के महल तक पहुँची तो राजकुमार ने भी इस स्कूल में पढ़ने की सोची। उसने अपने शाही कपड़े पहने और स्कूल आया। कैथरीन ने उसके लिये एक जगह ढूँढी और उसको उस खाली जगह में आ कर बैठ जाने के लिये कहा।

जब उस राजकुमार की बारी आयी तो कैथरीन ने उससे एक सवाल पूछा। राजकुमार को उस सवाल का जवाब आता नहीं था तो उसने राजकुमार को एक चाँटा मारा जिससे उसका गाल सूज गया।

राजकुमार गुस्से से लाल हो कर उठा और उठ कर महल चला गया। वह अपने पिता के पास पहुँचा और उनसे बोला — "मैजेस्टी, मेरे ऊपर दया करें। मेरी शादी कर दीजिये और मुझे उस अक्लमन्द कैथरीन से ही शादी करनी है।"

[12] Translated for the word "Cat-nine-Tails" – means The cat o' nine tails, commonly shortened to the cat, is a type of multi-tailed whip that originated as an implement for severe physical punishment, notably in the Royal Navy and Army of the United Kingdom, and also as a judicial punishment in Britain and some other countries. See its picture above.

राजा ने कैथरीन के पिता को बुला भेजा। कैथरीन का पिता तुरन्त ही राजा के पास गया और सिर झुका कर बोला — "योर मैजेस्टी, हुक्म।"

राजा बोला — "उठो। मेरे बेटे को तुम्हारी बेटी कैथरीन पसन्द आ गयी है तो अब हम क्या कर सकते हैं सिवाय इसके कि हम उन दोनों की शादी कर दें।"

"जैसी आपकी मर्जी मैजेस्टी। पर मैं तो केवल एक दूकानदार हूँ और राजकुमार तो शाही खून वाले हैं।"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता जब मेरा बेटा खुद ही उससे शादी करना चाहता है तो।"

सो वह दूकानदार घर लौट आया और अपनी बेटी से कहा — "कैथरीन, राजकुमार तुमसे शादी करना चाहते हैं। तुम्हें इस बारे में क्या कहना है?"

"मुझे मंजूर है।"

किसी खास चीज़ की कोई जरूरत नहीं थी। एक हफ्ते में शादी की सब तैयारियाँ हो गयीं। राजकुमार ने कैथरीन की शादी के लिये बारह लड़कियाँ तैयार कीं। शाही चैपल[13] खोल दिया गया और दोनों की शादी हो गयी।

[13] A chapel is a religious place of fellowship, prayer and worship that is attached to a larger, often nonreligious institution or that is considered an extension of a primary religious institution.

शादी की रस्म के बाद रानी माँ ने उन बारह लड़कियों से कहा कि वे रात के सोने के लिये बहू के कपड़े उतार दें और उसको सोने के लिये तैयार कर दें।

पर राजकुमार ने अपनी माँ को मना करते हुए कहा — "किसी को उसके कपड़े उतारने या उसको कपड़े पहनाने की कोई जरूरत नहीं है और न ही उसके दरवाजे पर पहरा देने की ही कोई जरूरत है।"

जब राजकुमार कैथरीन के साथ अपने कमरे में अकेला रह गया तो उससे बोला — "कैथरीन, क्या तुम्हें याद है कि तुमने मुझे चाँटा मारा था? क्या तुम्हें उसके लिये कोई अफसोस है?"

"क्या? उसके लिये अफसोस? अगर तुम मुझसे पूछो तो मैं फिर ऐसा ही करूँगी।"

"अरे, क्या तुम्हें उसके लिये कोई अफसोस नहीं है?"

"नहीं, बिल्कुल भी नहीं।"

"और उसके लिये अफसोस करने का तुम्हारा कोई इरादा भी नहीं है?"

"उसके लिये कौन अफसोस करेगा?"

"तो यही तुम्हारा विचार है? कोई बात नहीं। अब मैं तुमको एक दो बात बताऊँगा।"

कह कर राजकुमार ने एक रस्सी का गोला खोलना शुरू किया। वह उस रस्सी के सहारे कैथरीन को एक चोर दरवाजे से नीचे उतारने वाला था।

जब उसने वह रस्सी खोल ली तो वह कैथरीन से एक बार फिर बोला — "या तो तुम अपना कुसूर मान लो कि तुम गलती पर थीं या फिर मैं तुम्हें इस गड्ढे में नीचे उतारता हूँ।"

कैथरीन बोली — "मैं इस गड्ढे में आराम से रहूँगी। तुम चिन्ता न करो।"

सो राजकुमार ने उसकी कमर में रस्सी बाँधी और उसको नीचे एक कमरे में उतार दिया जहाँ केवल एक मेज थी, एक कुर्सी थी, एक पानी का घड़ा था और थोड़ी सी डबल रोटी थी।

अगले दिन सुबह रीति रिवाज के अनुसार राजा और रानी नयी बहू के स्वागत के लिये वहाँ आये तो राजकुमार बोला — "आप लोग अभी अन्दर नहीं आ सकते क्योंकि कैथरीन की तबियत ठीक नहीं है।"

फिर वह उस चोर दरवाजे को खोलने गया और कैथरीन से पूछा — "तुम्हारी रात कैसी गुजरी?"

कैथरीन बोली — "बहुत सुन्दर और ताजगी भरी।"

राजकुमार ने फिर पूछा — "क्या तुम अभी भी अपने उस चाँटे के बारे में दोबारा सोच रही हो?"

"मैं तो उस चाँटे के बारे में सोच रही हूँ जो मुझे तुम्हें इसके बदले में देना चाहिये।"

दो दिन गुजर गये। अब भूख से कैथरीन का पेट ऐंठने लगा। उसको यह समझ ही नहीं आ रहा था कि अब उसको क्या करना चाहिये। पर फिर उसने अपने कपड़ों में से एक कील निकाली और उससे दीवार में छेद करना शुरू किया।

वह छेद करती रही, करती रही। चौबीस घंटे बाद उसको रोशनी की एक किरण दिखायी दी तब उसको थोड़ा चैन आया। उसने उस छेद को और बड़ा कर लिया और उसके बाहर झाँका तो उसे कौन दिखायी दिया? उसके पिता का मुनीम[14]।

उसने उसको आवाज दी "डौन टोमासो[15], डौन टोमासो।"

पहले तो डौन टोमासो यह समझ ही नहीं सका कि वह आवाज किसकी है और दीवार में से कहाँ से आ रही है। फिर उसने कैथरीन की आवाज पहचानी।

कैथरीन बोली — "डौन टोमासो, यह मैं हूँ अक्लमन्द कैथरीन। मेहरबानी कर के मेरे पिता से कहना कि मुझे उनसे अभी अभी बहुत जरूरी बात करनी है।"

कैथरीन की आवाज सुन कर डौन टोमासो तुरन्त ही कैथरीन के पिता के पास आया और उसको साथ ले कर उस दीवार के पास

[14] Translated for the word "Clerk".
[15] Don Tomasso – the name of the clerk of Catherine's father.

लौटा और उसको दीवार की वह छोटा सा छेद दिखाया जहाँ से उसने कैथरीन की आवाज सुनी थी।

कैथरीन बोली — "पिता जी, जैसी तकदीर होती है वैसा ही होता है। मैं यहाँ एक नीचे वाले कमरे में हूँ। आप हमारे महल से यहाँ तक एक सुरंग खुदवाइये जिसमें हर बीस फीट पर एक मेहराब[16] हो और एक रोशनी लगी हो। बाकी मैं देख लूँगी।"

दूकानदार ने ऐसा ही किया। इस बीच वह कैथरीन के लिये बराबर खाना लाता रहा – भुना हुआ मुर्गा और दूसरा ऐसा खाना जो उसको ताकत देता और उसे अपनी बेटी को उस छेद में से देता रहा।

उधर राजकुमार उस चोर दरवाजे से दिन में तीन बार उस गडढे में झाँकता और कैथरीन से पूछता — "कैथरीन, क्या तुमको अभी भी मुझे चाँटा मारने का अफसोस नहीं है?"

"अफसोस किस बात के लिये? तुम तो अब उस चाँटे के बारे में सोचो जो तुम्हें अब मिलने वाला है।"

कुछ दिनों में ही मजदूरों ने वह सुरंग तैयार कर दी जिसमें हर बीस फीट पर एक मेहराब थी और एक लालटैन थी। अब कैथरीन उस सुरंग से हो कर अपने पिता के घर पहुँच सकती थी।

[16] Translated for the word "Arch"

बहुत जल्दी ही राजकुमार कैथरीन को इस बात पर राजी करते करते थक गया कि वह अपना कुसूर मान ले सो एक दिन उसने वह चोर दरवाजा खोला और कैथरीन से कहा — "कैथरीन मैं नैपिल्स[17] जा रहा हूँ। तुमको मुझसे कुछ कहना है?"

"भगवान करे कि तुम्हारा समय अच्छा गुजरे और तुम वहाँ आनन्द से रहो। जब तुम नैपिल्स पहुँच जाओ तो मुझे लिखना।"

"तो मैं जाऊँ?"

कैथरीन ने पूछा — "अरे, तुम अभी भी यहीं हो? तुम गये नहीं?"

राजकुमार यह सुन कर चला गया।

जैसे ही उसने चोर दरवाजा बन्द किया कि कैथरीन अपने पिता के घर की तरफ दौड़ गयी और बोली — "पिता जी अब मेरी मदद कीजिये। मुझे एक दो मस्तूल वाली नाव ला कर दीजिये। उसमें एक सफाई करने वाला हो, कुछ नौकर हों कुछ बढ़िया पोशाकें हों और वह नाव नैपिल्स जाने के लिये तैयार हो।

नैपिल्स में मुझे वहाँ के महल के सामने एक घर किराये पर ले दें और फिर वहाँ मेरे आने का इन्तजार करें।"

दूकानदार ने अपनी बेटी के लिये तुरन्त ही एक नाव का इन्तजाम कर दिया। इस बीच राजकुमार भी अपने एक लड़ाई के जहाज़ पर नैपिल्स के लिये चल पड़ा।

---

[17] Naples is an important historical port city located on Italy's Western coast toards its Southern side.

कैथरीन ने अपने पिता के महल के छज्जे पर खड़े हो कर राजकुमार को उसके जहाज़ में जाते देखा। उसके जाने के बाद वह भी एक दूसरी दो मस्तूलों वाली नाव पर नैपिल्स की तरफ चल दी। वह राजकुमार से पहले नैपिल्स पहुँच गयी क्योंकि छोटे जहाज़ बड़े जहाज़ों से तेज़ जाते हैं।

अब नैपिल्स में कैथरीन रोज एक नयी पोशाक पहन कर अपने महल के छज्जे पर जा कर खड़ी हो जाती। उसकी हर दिन की पोशाक उसकी पहले दिन की पोशाक से ज़्यादा सुन्दर होती।

राजकुमार उसको रोज देखता और सोचता इस लड़की की शक्ल कैथरीन से कितनी मिलती है। उसको रोज देखते देखते वह उससे प्यार करने लगा सो उसने उसके पास अपना एक नौकर इस सन्देश के साथ भेजा कि अगर उसको कोई ऐतराज न हो तो वह उससे मिलने आना चाहता है।

कैथरीन ने जवाब में कहा कि "हॉ हॉ क्यों नहीं। मुझे बिल्कुल भी ऐतराज नहीं है। वह मुझसे मिलने जरूर आये।"

राजकुमार अपनी शाही शान से वहॉ आया और उससे बात करने बैठ गया। राजकुमार ने पूछा — "क्या तुम शादीशुदा हो?"

कैथरीन बोली — "नहीं। और तुम?"

"मैं भी नहीं। क्या तुमको ऐसा लग नहीं रहा कि मैं शादीशुदा नहीं हूँ? पर तुम्हारी शक्ल एक लड़की से मिलती है जो मुझे पलेरमो में अच्छी लगी थी। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी पत्नी बन जाओ।"

"खुशी से, राजकुमार।"

और एक हफ्ते बाद उन दोनों की शादी हो गयी। नौ महीने बाद कैथरीन ने एक बेटे को जन्म दिया जो देखने में बहुत सुन्दर था।

राजकुमार ने पूछा — "राजकुमारी, हम इसका नाम क्या रखें?"

कैथरीन बोली "नैपिल्स।" और उसका नाम नैपिल्स रख दिया गया।

दो साल बाद राजकुमार ने नैपिल्स से जाने का विचार किया। राजकुमारी का मन वहाँ से जाने का तो नहीं था पर राजकुमार ने तो अपना मन बना रखा था सो वह उसके इरादे को बदल नहीं सकी।

उसने कैथरीन के लिये अपने बेटे के लिये एक कागज लिखा कि यह उसका पहला बेटा था इसलिये उसके बाद वही राजा बनेगा और जिनोआ[18] के लिये रवाना हो गया।

जैसे ही राजकुमार वहाँ से गया कैथरीन ने अपने पिता को लिखा कि वह एक दो मस्तूल वाली नाव जिनोआ भेज दे जिसमें कुछ फर्नीचर हो, घर साफ करने वाले हों, नौकर हों और बाकी का सामान हो। वहाँ भी वह जिनोआ के महल के सामने एक घर किराये पर ले और उसके आने का इन्तजार करे।

कैथरीन के कहे अनुसार दूकानदार ने इस सब सामान से एक जहाज़ लादा और उसे जिनोआ भेज दिया। कैथरीन ने भी एक दो

[18] Genoa is another important known city of Italy.

मस्तूल वाली नाव ली और राजकुमार के जिनोआ पहुँचने से पहले ही वहॉ पहुँच गयी। वहॉ जा कर वह अपने नये घर में ठहर गयी।

जब राजकुमार ने इस सुन्दरी को उसके शाही रहन सहन और उसके हीरे जवाहरात में देखा और उसकी सम्पत्ति देखी तो फिर सोचा — "इस लड़की की शक्ल कैथरीन से और मेरी नैपिल्स वाली पत्नी से कितनी मिलती जुलती है।"

सो उसने फिर से उसके पास अपना एक नौकर भेजा कि वह उससे मिलना चाहता था जिसके जवाब में कैथरीन ने भी कह दिया कि हॉ हॉ क्यों नहीं। वह उसको अपने घर में देख कर बहुत खुश होगी।

सो राजकुमार एक बार फिर कैथरीन के घर पहुँचा और उससे बातें करनी शुरू की।

राजकुमार ने पूछा — "क्या आप यहॉ अकेली रहती हैं?"

कैथरीन बोली — "हॉ मैं एक विधवा हूँ। और आप?"

"मैं भी एक विधुर[19] हूँ और मेरे एक बेटा है। वैसे आप एक लड़की की तरह दिखायी देती हैं जिसको मैं पलेरमो में जानता था और वैसी ही एक लड़की को मैं नैपिल्स में भी जानता हूँ।"

"क्या सचमुच? वैसे लोगों का कहना है कि हम सब इस संसार में सात जोड़े पैदा होते हैं।"

[19] Translated for the word "Widower" – means whose wife has died.

उसके बाद राजकुमार ने उससे भी शादी कर ली। नौ महीने बाद कैथरीन ने एक और बेटे को जन्म दिया। उसका यह बेटा उसके पहले बेटे से भी ज़्यादा सुन्दर था। राजकुमार उसको देख कर बहुत खुश था।

उसने राजकुमारी से पूछा — "राजकुमारी, हम इसका नाम क्या रखेंगे?"

"जिनोआ।" और उन्होंने उसका नाम जिनोआ रख दिया।

एक बार फिर से दो साल निकल गये तो वह राजकुमार फिर से बेचैन हो उठा। वह फिर वहाँ से जाना चाहता था।

राजकुमारी ने पूछा — "क्या तुम मुझे और मेरे बच्चे को इस तरह अकेला छोड़ कर जा रहे हो?"

राजकुमार ने उसको तसल्ली दी — "मैं तुम्हारे लिये एक कागज लिख कर जा रहा हूँ कि यह मेरा बेटा है और मेरा छोटा राजकुमार है।"

इस कागज को लिखने के बाद जब वह वेनिस[20] जाने के लिये तैयार हुआ तो कैथरीन ने फिर से अपने पिता को पलेरमो में लिखा कि वह उसके लिये फिर से वैसे ही एक दो मस्तूल वाली नाव सब सामान के साथ, नौकर चाकर, फर्नीचर, नये कपड़े आदि के साथ वेनिस भेजने का इन्तजाम कर दे।

[20] Venice is an important and very wellknown city of Italy. It is called "The City of Canals" because it is full of canals.

वेनिस के महल के सामने एक घर किराये पर ले ले और वहाँ उसके आने का इन्तजार करे। सो उसके पिता ने एक जहाज़ भर कर सामान अपनी बेटी के लिये वेनिस भी भेज दिया।

कैथरीन ने भी फिर से एक और दो मस्तूल वाली नाव ली और वह राजकुमार से पहले ही वेनिस पहुँच कर अपने मकान में ठहर गयी।

राजकुमार ने जब कैथरीन को उसके घर के छज्जे पर देखा तो इस बार तो वह बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया। उसके मुँह से निकला — "हे भगवान यह क्या? इसकी शक्ल तो मेरी जिनोआ वाली पत्नी से कितनी मिलती जुलती है जिसकी शक्ल मेरी नैपिल्स वाली पत्नी से मिलती थी और जिसकी शक्ल कैथरीन से मिलती थी। यह कैसे हो सकता है?"

कैथरीन तो पलेरमो में उस नीचे वाले कमरे में बन्द है। नपोली वाली नैपिल्स में है, जिनोआ वाली जिनोआ में है और यह यहाँ वेनिस में? यह सब क्या है?"

उसने फिर अपना एक नौकर उसके पास इस सन्देश के साथ भेजा कि क्या वह उससे मिलने आ सकता है। और फिर एक बार वह उससे मिलने जा पहुँचा।

वहाँ जा कर वह बोला — "क्या आप विश्वास करेंगी कि आप की शक्ल कई और लड़कियों से मिलती है जिनको मैं जानता हूँ –

एक पलेरमो में रहती है, दूसरी नैपिल्स में रहती है और तीसरी जिनोआ में रहती है।"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। मैं आपका बिल्कुल विश्वास करूँगी। बात यह है कि हम ज़िन्दगी में सात जोड़े बन कर आते हैं।" और फिर वे अपनी सामान्य बातें करने लगे।

राजकुमार ने पूछा – "क्या आप शादीशुदा हैं?"

"मैं विधवा हूँ। और आप?"

"मैं एक विधुर हूँ और मेरे दो बेटे हैं।"

एक हफ्ते में फिर उन दोनों की शादी हो गयी। नौ महीने बाद कैथरीन ने एक बेटी को जन्म दिया जो चॉद सूरज की तरह चमकीली थी।

राजकुमार ने पूछा – "हम इसका नाम क्या रखेंगे राजकुमारी?"

कैथरीन बोली – "हम इसका नाम रखेंगे वेनिस।"

और उसका नाम वेनिस रख दिया गया।

दो साल फिर गुजर गये। राजकुमार बोला – "सुनो राजकुमारी, अब मुझे पलेरमो वापस जाना है। पर उससे पहले मैं एक कागज लिखना चाहता हूँ कि यह मेरी बेटी है और राजकुमारी है।"

यह सब कर के राजकुमार पलेरमो चला गया पर हर बार की तरह से इस बार भी कैथरीन वहॉ राजकुमार से पहले ही पहुँच

गयी। वह पहले अपने पिता के घर गयी और फिर वहॉ से अपने उस कमरे में पहुॅच गयी जहॉ राजकुमार उसको छोड़ कर गया था।

जैसे ही राजकुमार पलेरमो पहुॅचा वह तुरन्त ही उस गड्ढे की तरफ गया जहॉ उसने कैथरीन को कैद कर रखा था। वहॉ जा कर उसने वह चोर दरवाजा खोला और नीचे झॉक कर बोला —
"कैथरीन, तुम कैसी हो?"

"ओह मैं? मैं बिल्कुल ठीक हूॅ। तुम कैसे हो?"

"क्या तुम्हें मुझे वह चॉटा मारने पर अभी भी अफसोस नहीं है?"

"वह तो नहीं है पर तुमने क्या कभी उस चॉटे के बारे में भी सोचा है जो मैं अब तुम्हें दूॅगी?"

जब भी राजकुमार उससे उस चॉटे की बात करता जो उसने उसको मारा था तो वह यही जवाब देती। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि इस जवाब से उसका क्या मतलब था।

"छोड़ो भी और यह मान लो कि तुम्हें उस चॉटा मारने पर अफसोस है नहीं तो मैं दूसरी शादी कर लूॅगा।"

"हॉ हॉ कर लो, तुम्हें रोकता कौन है?"

"पर अगर तुम्हें उसके लिये अफसोस होगा तो मैं तुम्हें वापस अपनी पत्नी बना लूॅगा।"

"नहीं। कभी नहीं। मुझे उसके लिये कोई अफसोस नहीं है।"

उसके बाद राजकुमार ने यह घोषित कर दिया कि उसकी पत्नी मर चुकी है और अब वह दोबारा शादी करना चाहता है। उसने सारे राजाओं को उनकी बेटियों की तस्वीरें भेजने के लिये लिखा।

तस्वीरें आयीं तो उसको इंगलैंड के राजा की बेटी की तस्वीर सबसे ज़्यादा अच्छी लगी। राजकुमार ने उस लड़की को और उसकी माँ को शादी के लिये बुलाया। अगला दिन शादी का दिन निश्चित हो गया।

इस बीच कैथरीन ने अपने तीनों बच्चों – नैपिल्स, जिनोआ और वेनिस के लिये, शाही पोशाकों का इन्तजाम किया। वह खुद भी रानी की तरह तैयार हुई और तीनों बच्चों को ले कर रस्मी गाड़ी में सवार हो कर महल की तरफ चल दी।

उधर से राजकुमार और इंगलैंड की राजकुमारी की बारात आ रही थी। कैथरीन ने अपने बच्चों से कहा — "नैपिल्स, जिनोआ और वेनिस, जाओ और जा कर अपने पिता का हाथ चूम लो।"

बच्चे यह सुन कर अपने पिता की ओर दौड़ गये और जा कर उन्होंने राजकुमार का हाथ चूम लिया। जैसे ही राजकुमार ने बच्चों को देखा तो वह तो आश्चर्य में पड़ गया। उसको लगा कि उस लड़की ने उसको वाकई चाँटा मार दिया था।

पर यह वैसा चाँटा नहीं था जैसा कि वह सोच रहा था। यह तो एक खुशी का चाँटा था। वह हार मान बैठा और ज़ोर से चिल्लाया

— "अच्छा तो वह यह चाँटा था जो तुम मुझे मारने की बात कर रही थीं।" कह कर उसने अपने तीनों बच्चों को गले लगा लिया।

इंगलैंड की राजकुमारी की तो बोलती ही बन्द हो गयी। वह वहाँ से पलटी और वापस चली गयी।

तब कैथरीन ने अपने पति को सारी कहानी सुनायी और बताया कि उसको वे तीनों लड़कियाँ एक सी क्यों लगी थीं।

अब पछतावे की बारी राजकुमार की थी। उसने बार बार अपने उस बर्तावे का अफसोस किया जो उसने कैथरीन के साथ किया था। उसके बाद वे सब खुशी खुशी रहे।

5 छोटी अक्लमन्द लड़की[21]

एक बार की बात है कि रूस के बड़े बड़े घास के मैदानों में एक छोटा सा गाँव था जिसमें करीब करीब सारे लोग घोड़े पाला करते थे। अक्टूबर का महीना था और शहर में जानवरों का सालाना मेला लगने वाला था।

दो भाई एक अमीर और एक गरीब भी अपने अपने जानवर ले कर बाजार चल दिये। अमीर भाई के पास एक बहुत बढ़िया घोड़ा था और गरीब भाई के पास एक घोड़ी थी।

शाम के समय दोनों एक घर के सामने रुके और दोनों ने अपने अपने घोड़े घर के बाहर बाँध दिये और उस घर के अन्दर भूसे के ढेर पर सोने के लिये चले गये।

जब वे सुबह उठे तो यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित रह गये कि वहाँ तो दो की बजाय तीन घोड़े खड़े थे। वास्तव में नया आने वाला घोड़ा कोई घोड़ा नहीं था वह तो एक बच्ची घोड़ी थी जिसे रात को गरीब भाई की घोड़ी ने जन्म दिया था।

जल्दी ही वह ताकतवर हो गयी और अपने पैरों पर खड़ी हो गयी। और फिर अपनी माँ का दूध पीने के बाद और और

[21] The Wise Little Girl. A folktale from Russia. Taken from : https://www.kidsgen.com/fables_and_fairytales/the_wise_little_girl.htm

ताकतवर होने के बाद चलने के लिये भी तैयार हो गयी। घोड़े ने भी उसकी तरफ देख कर प्यार से हिनहिनाया।

पर जब दोनों भाइयों ने बच्ची घोड़ी को पहली बार देखा तो वह अमीर भाई के घोड़े के पास खड़ी थी। उसको इस तरह खड़ा देख कर अमीर भाई दिमित्री[22] खुशी से बोला — "यह बच्ची घोड़ी तो मेरी है। यह मेरे घोड़े की बच्ची है।"

गरीब भाई इवान यह सुन कर हँस पड़ा और बोला — "किसी घोड़े को बच्चा देते किसने सुना है। यह मेरी घोड़ी की बच्ची है।"

दिमित्री बोला — "नहीं यह सच नहीं है। यह तो मेरे घोड़े के पास खड़ी हुई थी इसलिये यह मेरे घोड़े की बच्ची है और इसी लिये यह मेरी है।"

दोनों भाइयों में लड़ाई शुरू हो गयी। जब झगड़ा नहीं सिलटा तो उन्होंने शहर जाने का निश्चय किया और जजों से फैसला करवाने का तय किया। आपस में बहस करते हुए वे शहर की तरफ चल दिये और अदालत जा पहुँचे।

पर वे यह नहीं जानते थे कि वह एक खास सालाना दिन था जिस दिन राजा खुद ही न्याय करता था। वह खुद उन सब लोगों की सुनता था जो न्याय माँगने आते थे। इन भाइयों को भी राजा के सामने ले जाया गया। दोनों ने अपना मामला राजा को बताया।

---

[22] Dimitri – name of the rich brother

राजा अच्छी तरह जानता था कि वह घोड़े की बच्ची किसकी थी। वह यह फ़ैसला देने ही वाला था कि वह बच्ची गरीब भाई की घोड़ी की थी कि तभी इवान ने अनजाने में आँख मार दी।

एक गरीब किसान की यह हरकत देख कर राजा बहुत गुस्सा हो गया। उसने उसे अपने इस अपमान का दंड देने का फ़ैसला किया। उसने कहा कि दोनों तरफ की कहानी सुनने के बाद यह फ़ैसला करना मुश्किल था, या यह कहो कि असम्भव था, कि वह बच्ची किसकी थी।

और क्योंकि उसे पहेलियाँ पूछने में और उन्हें बूझने में आनन्द आता था सो कुछ आनन्द खुद लेने के लिये और कुछ आनन्द अपने सलाहकारों को देने के लिये वह बोला — "मैं यह निश्चय नहीं कर सकता कि वह बच्ची तुम दोनों में से किसकी है इसलिये मैं तुम लोगों के सामने चार पहेलियाँ रखता हूँ। जो भी इन्हें बूझ देगा यह बच्ची उसी की होगी।

पहली पहेली है दुनियाँ में सबसे तेज़ चीज़ क्या है दूसरे सबसे मोटी चीज़ क्या है तीसरे सबसे मुलायम चीज़ क्या है और चौथे सबसे ज़्यादा कीमती चीज़ क्या है। मैं तुम लोगों को इन पहेलियों को हल खोजने के लिये सात दिनों का समय देता हूँ। सात दिन के बाद इन पहेलियों के हल के साथ यहाँ महल में आना।"

यह सुन कर दोनों भाई वहाँ से चले गये। दिमित्री ने तो जैसे ही वह अदालत के कमरे से बाहर निकला इन पहेलियों के बारे में

सोचना शुरू कर दिया था। जब तक वह घर पहुँचा तो उसको लगा कि वह खुद अकेले तो इन पहेलियों को नहीं बूझ सकता था पर उसके पास कोई सहायक भी नहीं था।

उसने सोचा "मैं अकेले तो इन पहेलियों को बूझ नहीं सकता मुझे किसी न किसी की सहायता तो लेनी ही पड़ेगी। और अगर मैं यह पहेलियाँ नहीं बूझ सका तो मुझे घोड़े की बच्ची नहीं मिलेगी।"

तब उसे एक स्त्री की याद आयी जो उसके पड़ोस में रहती थी। एक बार उसने उस स्त्री को एक चाँदी का डकैट[23] उधार दिया था। और क्योंकि वह डकैट उसने काफी समय पहले दिया था तो अब तो उसका ब्याज मिला कर उसके उस पर तीन डकैट हो गये होंगे।

क्योंकि वह स्त्री अपनी होशियारी और हाजिरजवाबी के लिये बहुत प्रसिद्ध थी सो उसने उसी से सलाह लेने की सोची। इस सलाह के बदले में वह उसका कुछ कर्जा माफ कर देगा। पर वह स्त्री इससे कुछ ज़्यादा ही चतुर थी। उसने इन पहेलियों का हल बताने के बदले में अपने पूरे कर्जे की माफी चाही। दिमित्री को यह देनी पड़ी।

उसने कहा — "सबसे अधिक तेज़ मेरे पति का घोड़ा है। उसे कोई नहीं हरा सकता। सबसे मोटा तो हमारा सूअर है। इतना बड़ा जानवर तो कभी किसी ने देखा ही नहीं है। सबसे मुलायम तो मेरी

[23] Silver Ducat – the then currency used in European countries

रजाई है जिसमें मैंने अपनी बतख के पंख भरे हैं। मेरे सारे दोस्त मेरी रजाई से ईर्ष्या करते हैं। और सबसे कीमती चीज़ मेरे लिये मेरा तीन महीने का भतीजा है जिसे दुनियॉ के सारे सोने के बदले में भी नहीं दे सकती। यही बात उसे इस दुनियॉ में सबसे अनमोल चीज़ बनाती है।"

दिमित्री को उस स्त्री के जवाबों पर कोई खास विश्वास तो नहीं हुआ कि वे उन पहेलियों के ठीक जवाब थे पर क्योंकि उसके पास उनके अपने कोई जवाब नहीं थे और उसको जवाब तो ले ही जाने थे क्योंकि अगर वह जवाब ले कर नहीं गया तो उसे सजा मिलेगी सो उसके पास और कोई चारा नहीं था।

इवान की पत्नी मर चुकी थी। वह केवल अपनी एक छोटी सी सात साल की बेटी के साथ रहता था। वह भी उन सवालों के जवाब सोचता हुआ अपने घर जा पहुॅचा। छोटी लड़की अक्सर ही घर में अकेली रहती थी सो वह अपनी उम्र के लिये बहुत समझदार और होशियार थी।

इवान भी जानता था कि अपने भाई की तरह से वह भी उन पहेलियों के जवाब नहीं खोज पायेगा सो उसने उसे अपने विश्वास में लिया और उसे सब बातें बतायीं।

लड़की ने कुछ पल शान्त बैठ कर सोचा और फिर बोली — "राजा साहिब से कहना पिता जी कि दुनियॉ में सबसे तेज़ चलने वाली जाड़ों की ठंडी उत्तरी हवा है। सबसे मोटी चीज़ हमारे खेतों

की मिट्टी है जो आदमियों और जानवरों दोनों को एक साथ खाना देती है। सबसे मुलायम तो बच्चे का एक स्पर्श है और सबसे कीमती चीज़ ईमानदारी है जो बहुत मुश्किल से मिलती है।"

वह दिन भी जल्दी आ गया जब उन दोनों भाइयों को अदालत जाना था। दोनों को राजा के सामने ले जाया गया। राजा को अपनी पहेलियों का जवाब सुनने की बड़ी इच्छा थी कि वे लोग उनके क्या जवाब ले कर आते हैं।

जब दिमित्री ने राजा को अपने जवाब सुनाये तो राजा तो ठहाका मार कर हँस पड़ा। अब इवान की बारी आयी तो जब राजा ने इवान के जवाब सुने तो राजा के चेहरे पर गुस्से की लहर दौड़ गयी। गरीब भाई के होशियारी भरे जवाबों से वह आश्चर्यचकित रह गया। खास कर के आखिरी वाले जवाब से – ईमानदारी वाले जवाब से।

राजा यह जानता था कि वह गरीब भाई के साथ व्यवहार करने में ईमानदार नहीं था। उसने उसे न्याय नहीं दिया था पर वह इस बात को अपने सलाहकारों के सामने स्वीकार नहीं कर सकता था सो उसने उससे गुस्से से पूछा — "ये जवाब तुम्हारे तो नहीं हैं इन्हें तुम्हें किसने बताया?"

गरीब भाई ने उसे बताया कि ये जवाब उसकी बेटी ने उसे बताये। इस पर तो राजा उससे कुछ और परेशान हो गया और बोला — "तुमको इतनी होशियार बेटी के बाप होने का इनाम जरूर

मिलेगा। तुम्हारा भाई जो घोड़े की बच्ची पर अधिकार जमा रहा था वह घोड़े की बच्ची अब तुम्हारी होगी और साथ में तुम्हें सौ चाँदी के डकैट भी दिये जायेंगे। लेकिन... लेकिन... ।"

कह कर राजा ने अपने सलाहकारों की तरफ देख कर आँख मारी और बोला — "एक हफ्ते में तुम्हें अपनी बेटी को साथ ले कर मेरे सामने आना होगा। और क्योंकि वह इतनी अक्लमन्द है तो वह मेरे सामने इस तरह आये कि वह न तो कपड़े पहने हो और न ही बिना कपड़े पहने हो। न ही वह पैदल हो और न ही वह घोड़े पर सवार हो। न तो वह कोई भेंट लाये और न ही खाली हाथ हो।

अगर वह ऐसा कर लेगी तब तो तुम्हें तुम्हारा इनाम मिल जायेगा। और अगर वह ऐसा नहीं कर सकी तो मेरा अनादर करने के लिये तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा।"

महल में बैठे सब लोग यह सोच कर बड़े ज़ोर से हँस पड़े कि वह गरीब आदमी राजा की शर्तों के अनुसार अपने बेटी को नहीं ला पायेगा।

इवान भी बेचारा शान्त रूप से अपने घर वापस लौट गया। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। पर जब उसने अपनी बेटी को राजा की शर्तों के बारे में बताया तो वह भी शान्ति से बोली —

"पिता जी आप चिन्ता न करें। कल आप एक ज़िन्दा खरगोश और एक ज़िन्दा तीतर पकड़ कर ले आयें। आपको आपकी घोड़ी

की बच्ची और सौ चाँदी के डकैट दोनों मिल जायेंगे। बाकी सब आप मुझ पर छोड़ दीजिये। आपका सिर भी सही सलामत रहेगा।”

हालाँकि इवान इस बात के बारे में कुछ सोच ही नहीं सका कि वे दोनों जानवर उसकी बेटी ने किसलिये मँगवाये थे पर फिर भी अपनी बेटी पर विश्वास कर के उसने वैसा ही किया जैसा उसकी बेटी ने कहा था।

जिस दिन उनको राजा के महल जाना था उस दिन महल में बहुत भीड़ जमा थी। वे सब वहाँ यह देखने के लिये खड़े थे कि देखें इवान और उसकी बेटी राजा की शर्तों को कैसे पूरा करते हैं।

आखिर वह छोटी लड़की वहाँ प्रगट हुई। उसने अपने शरीर के चारों ओर मछली पकड़ने वाला जाल लपेटे हुई थी। इस तरह न तो वह कपड़े पहने थे और न ही बिना कपड़ों के थी। वह खरगोश के ऊपर बैठी हुई थी। इस तरह वह न तो पैदल थी और न ही घोड़े पर सवार थी।

उसे देखते ही राजा चिल्लाया — “अरे मैंने तो कहा था कि तुम भेंट लाओ भी और खाली हाथ भी नहीं आओ।”

यह सुन कर लड़की ने अपने हाथ से तीतर छोड़ दिया। राजा ने उसे पकड़ने के लिये अपना हाथ बढ़ाया पर वह तो अपने पंख फड़फड़ाता हुआ आसमान में उड़ गया और राजा उसको पकड़ ही नहीं सका। इस तरह वह लड़की राजा के लिये भेंट लायी भी उसने राजा को दी भी और राजा उसे ले भी नहीं सका।

कुछ भी सही राजा उस लड़की की अक्लमन्दी की प्रशंसा किये बिना न रह सका जिसने इतनी होशियारी से अपना इम्तिहान पास कर लिया था। उसने बड़ी मीठी आवाज में उससे कहा — "क्या तुम्हारे पिता सचमुच में बहुत गरीब हैं कि उनको घोड़े की बच्ची की जरूरत है?"

छोटी लड़की बोली — "जी राजा साहिब। हम लोग केवल उन्हीं खरगोशों पर ज़िन्दा रहते हैं जो वह नदियों से पकड़ कर लाते हैं और उन मछलियों पर जो वह पेड़ से तोड़ कर लाते हैं।"

राजा जीत के स्वर में बोला — "अहा। सो तुम उतनी होशियार नहीं हो जितनी कि लगती हो। यह किसने सुना है कि खरगोश नदी में पाये जाते हैं और मछलियाँ पेड़ पर लगती हैं।"

यह सुन कर लड़की तुरन्त ही बोली — "पर राजा साहिब। यह भी किसने सुना है कि घोड़ों के बच्चे होते हैं।"

यह सुन कर तो राजा और उसके दरबार में बैठे सब लोग ज़ोर से ठहाका मार कर हँस पड़े। तुरन्त ही इवान को वह घोड़े की बच्ची और सौ चाँदी के डकैट दे दिये गये।

राजा बोला — "केवल मेरे राज्य में ही इतनी अक्लमन्द लड़की पैदा हो सकती है।"

6 सरदार जो बेवकूफ नहीं था[24]

यह लोक कथा पश्चिम अफ्रीका के लाइबेरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक बूढ़ा गाँव के सरदार के पास आया और बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता कीजिये। मेरे पड़ोसी ने मेरी बकरियाँ चुरा ली हैं।"

सरदार ने उसकी बातें ध्यान से सुनी। उसको इस बात से खुशी होती थी कि लोग उसकी अक्लमन्दी को पहचानते थे और मानते भी थे। सरदार ने फिर पूछा — "पर तुम्हारी परेशानी क्या है?"

बूढ़ा बोला — "मेरी परेशानी यह है सरकार कि मेरे पड़ोसी ने मेरी बकरियाँ चुरा ली हैं। मैं एक गरीब आदमी हूँ और इतना गरीब हूँ कि मैं उनके बदले में और बकरियाँ नहीं खरीद सकता।"

सरदार ने पड़ोसी से पूछा — "और तुमको इस बारे में क्या कहना है।"

पड़ोसी ने जवाब दिया — "मुझे नहीं मालूम कि यह आदमी क्या कह रहा है। मेरे पास बहुत सारी बकरियाँ हैं पर उनमें से कोई भी बकरी इसकी नहीं है।"

---

[24] The Chief Who Was No Fool – a folktale from Kush, Liberia, West Africa, Africa. Adapted from the Web Site: http://www.phillipmartin.info/liberia/text_folktales_chief.htm
This story has been written by Phillip Martin.

इस बात का फैसला करना आसान नहीं था। सरदार को अपनी अक्ल इस्तेमाल करनी थी। सरदार को ऐसे मामले सुलझाने में बहुत अच्छा लगता था।

सरदार ने घोषणा की — "मैं तुम लोगों का एक इम्तिहान लेता हूँ। जो भी वह इम्तिहान पास कर लेगा वही बकरियों का मालिक होगा। जब तक तुम इस सवाल का जवाब दो तब तक तुम लोग अपने अपने घर जा सकते हो।

मैं जानना चाहता हूँ कि इस दुनियाँ में सबसे ज्यादा तेज़ चीज़ क्या है? जब तक तुम लोग इस सवाल का जवाब न ढूँढ लो यहाँ वापस मत आना।"

दोनों लोग सिर हिलाते हुए अपने अपने घर चले गये। अब इस बात का जवाब कौन दे सकता था?

इस बूढ़े के एक बेटी थी ज़िया। वह जितनी सुन्दर थी उतनी ही अक्लमन्द भी थी। बूढ़ा जब घर वापस आया तो सरदार का सवाल उसने अपनी बेटी से पूछा। तुरन्त ही उसने अपने पिता के कान में कुछ फुसफुसाया जो उस सरदार को खुश कर देता।

अगली सुबह ही वह बूढ़ा सरदार के घर की तरफ रवाना हुआ। सरदार ने जब बूढ़े को देखा तो वह तो आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "अरे क्या तुमको मेरे सवाल का जवाब मिल गया?"

बूढ़ा बोला — "जी सरदार, यह कोई ज्यादा मुश्किल सवाल नहीं था।"

सरदार ने फिर पूछा — “तो बताओ कि फिर दुनियाँ में सबसे ज़्यादा तेज़ क्या है?”

बूढ़ा बोला — “समय। वह हमारे पास कभी काफी नहीं होता। यह हमेशा ही बहुत जल्दी चला जाता है और हमारी पकड़ में ही नहीं आता। जो हम करना चाहते हैं उसके लिये हमारे पास कभी भी समय काफी नहीं होता।”

बूढ़े के इस जवाब से तो सरदार भौंचक्का रह गया क्योंकि उसको तो अपने आप पर भी यकीन नहीं था कि वह इस सवाल का जवाब दे सकता था।

उसने बूढ़े से पूछा — “इस सवाल के जवाब में तुमको किसने सहायता की? किसने बताया यह तुमको?”

बूढ़ा झूठ बोला — “किसी ने नहीं जनाब। ये मेरे अपने शब्द हैं। मुझे किसी ने कुछ नहीं बताया।”

सरदार ने कहा — “तुम मुझे सच नहीं बता रहे हो इसके लिये क्या तुम जानते हो कि मैं तुम्हें सजा भी दे सकता हूँ?”

यह सुन कर बूढ़ा डर गया। वह और आगे झूठ नहीं बोल सका। बोला — “यह मेरी बेटी ज़िया ने मुझे बताया। वह एक बहुत ही अक्लमन्द लड़की है।”

सरदार बोला — “लगता है कि वह वाकई बहुत अक्लमन्द लड़की है। मैं उससे मिलना चाहूँगा।”

कुछ देर बाद ही वह बूढ़ा अपनी बेटी को सरदार के पास ले आया। सरदार तो पहले ही उसकी अक्लमन्दी का सिक्का मान गया था और उसको देख कर तो वह उसकी सुन्दरता का भी सिक्का मान गया।

सरदार उसको देख कर बोला — "तुम बहुत अक्लमन्द हो और साथ में सुन्दर भी। यह मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होगी अगर तुम मेरे साथ शादी करोगी। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

ज़िया ने जवाब दिया — "सरदार, यह तो आप मेरी इज़्ज़त बढ़ा रहे हैं।"

हालाँकि सरदार इस बात से बहुत खुश था कि उसको इतनी सुन्दर और अक्लमन्द पत्नी मिल जायेगी पर वह उससे डरा हुआ भी बहुत था क्योंकि वह वाकई बहुत अक्लमन्द थी।

वह नहीं चाहता था कि वह उसके पास आने वाले मामलों में दखल दे। वह अपनी इज़्ज़त को जो उसको अपनी अक्लमन्दी की वजह से मिली हुई थी किसी से बाँटना नहीं चाहता था। अपनी पत्नी से भी नहीं।

सो सरदार ने उससे कहा — "जो कुछ भी मेरे घर में है वह सब तुम्हारा है। पर तुम्हारे लिये इस घर में बस केवल एक नियम है। तुम मेरे सामने आये हुए मामलों में कोई दखल नहीं दोगी। बस यही एक नियम है तुम्हारे लिये। अगर तुमने यह नियम तोड़ा तो मैं तुमको तुम्हारे पिता के घर भेज दूँगा।"

सरदार की नयी पत्नी इसके जवाब में केवल मुस्कुरा दी।

कुछ समय तक तो सब ठीक चलता रहा। सरदार के पास लोग अपने मामले ले कर आते थे और वह उनको सुलझाता था और ज़िया अपने घर के काम में लगी रहती थी। अक्सर वह सरदार के फैसलों को ठीक ही मानती थी।

एक दिन सरदार ने दो लड़कों को एक पहेली दी जो अपनी भेड़ों पर लड़ रहे थे। ज़िया को मालूम था कि उसको उस लड़के की सहायता नहीं करनी थी जो सचमुच में भेड़ का मालिक था लेकिन वह लड़का उस पहेली ले कर बहुत परेशान था।

यह सब देख कर ज़िया से रहा नहीं गया। उसने उस लड़के से पूछा कि वह इतना परेशान क्यों है।

वह लड़का बोला — "सरदार ने मुझे बिल्कुल ही नामुमकिन काम दे रखा है। उसने हमें एक एक अंडा दिया है और कहा है कि जो कोई इस अंडे के बच्चे को मुझे सुबह ला कर दिखायेगा भेड़ें उसी की होंगी।"

ज़िया जानती थी कि उसको उस लड़के की सहायता नहीं करनी चाहिये पर इसका हल बहुत ही साफ था और वह लड़का उस काम को ले कर बहुत परेशान था सो वह उसको उसके काम का हल बताये बिना न रह सकी।

उसने लड़के से कहा — "सरदार के पास थोड़ा सा चावल ले जाओ और उससे कहो कि वह उस चावल को आज ही बो दे ताकि तुम कल सुबह उस अंडे में से निकले बच्चे को वह मुलायम ताजा चावल खिला सको।

उसको भी पता चल जायेगा कि एक दिन में चावल उगाना उतना ही नामुमकिन है जितना आज के अंडे में से सुबह चूज़े का निकलना।"

लड़का यह सुन कर बहुत खुश हुआ। वह तुरन्त ही सरदार के पास चावल ले कर भागा गया। जो शब्द ज़िया ने उससे कहे थे उसने वही शब्द सरदार से जा कर कह दिये। पर सरदार यह सुन कर खुश नहीं हुआ। वह बहुत गुस्सा हुआ।

उसने गुस्से से पूछा — "किसने कहा तुमसे यह सब? किसने दिये तुम्हें चावल? तुम्हारे जितने बड़े बच्चे के लिये ये शब्द बहुत ज़्यादा अक्लमन्दी के हैं।"

लड़का डर के मारे सच बोलने में घबरा रहा था इसलिये वह बोला — "ये मेरे ही शब्द हैं ये मेरे ही विचार हैं। किसी और ने इसमें मेरी कोई सहायता नहीं की है।"

सरदार ने उसको डराया — "देख लो अगर तुम सच नहीं बोल रहे हो तो मैं तुमको इसकी सजा दूँगा।"

इस पर वह लड़का चिल्ला पड़ा — "सरदार वह ज़िया थी। उसने सोचा कि तुम अक्लमन्दी की कदर करोगे।"

इस पर सरदार ज़िया पर बहुत गुस्सा हुआ क्योंकि उसने उसको एक ही तो नियम मानने को बताया था और वही उसने तोड़ दिया था। उसने ज़िया को अपने सामने बुलाया और उसे बहुत डाँटा।

उसने कहा — "क्या तुमको मालूम नहीं है कि जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा है? मैंने तुमको केवल एक ही नियम मानने के लिये कहा था और वह भी तुमसे माना नहीं गया। जाओ अब तुम अपने पिता के घर चली जाओ।"

पर यह सब सुन कर भी ज़िया घबरायी नहीं। वह शान्ति से बोली — "ठीक है। पर जाने से पहले मैं आपके लिये एक आखिरी खाना बनाना चाहती हूँ। फिर जो कुछ मेरा है मैं उसको अपने साथ ले कर चली जाऊँगी।"

सरदार ने गुस्से में ही जवाब दिया — "ठीक है ठीक है। जो तुम्हें बनाना हो बनाओ, जो तुम्हें करना हो करो पर देखना यहाँ रात को ठहरना नहीं।"

ज़िया ने उस शाम सरदार का प्रिय खाना बनाया और उसे काफी सारी पाम की शराब के साथ उसको खिलाया। खाना खत्म होने से पहले ही सरदार शराब में धुत हो चुका था और थोड़ी ही देर में वह सो गया।

फिर ज़िया ने जैसा सोचा था वैसा ही किया। अपने परिवार की सहायता से वह सरदार को अपने पिता के घर ले आयी। उन्होंने सरदार को एक आरामदेह बिस्तर पर सुला दिया जहाँ सरदार सारी रात आराम से सोता रहा।

पर सुबह जैसे ही सरदार जगा तो उसकी कड़कती हुई आवाज सारे घर में गूँज गयी — "मैं कहाँ हूँ और मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ?"

ज़िया तुरन्त ही कमरे में आयी और मुस्कुराते हुए बोली — "आप मेरे पिता के घर में हैं। याद है आपने कहा था कि मुझे रात आपके घर में नहीं बितानी थी। सो मैं अपने पिता के घर में हूँ।

दूसरे आपने कहा था कि अपनी पसन्द की मैं जो कोई भी एक चीज़ चाहूँ वह आपके घर से ला सकती हूँ तो मुझे आप चाहिये थे सो मैं आपको ले आयी।"

सरदार यह सुन कर न चाहते हुए भी मुस्कुरा दिया और बोला — "यकीनन तुम बहुत ही होशियार लड़की हो। चलो मेरे साथ घर वापस चलो। कोई बेवकूफ ही होगा जो ऐसी अक्लमन्द लड़की को अपने घर से निकालेगा।"

अक्लमन्द पत्नी ने सरदार के कान में फुसफुसाया — "और तुम भी तो कोई बेवकूफ नहीं हो।"

7 चतुर बेटी[25]

यूक्रेन[26] की यह लोक कथा जो उत्तरी अमेरिका के कैनेडा देश में कही सुनी जाती है एक लड़की की बड़ी अक्लमन्दी की लोक कथा है।

यह बहुत पुरानी बात है जब लौर्ड हुआ करते थे। उनके पास बहुत ताकत होती थी। वे ही जज होते थे और वे गरीबों को जो चाहे दे सकते थे।

लेकिन एक बार ऐसा हुआ कि एक लौर्ड ने लोगों को तीन पहेलियाँ बूझने के लिये दीं — क्या चीज़ शरीर को सबसे ज्यादा ताकत देने वाली है? क्या चीज़ सबसे ज़्यादा मीठी है? और क्या चीज़ सबसे ज्यादा चंचल है?

उसी शहर में एक गरीब आदमी अपनी अठारह साल की बेटी के साथ रहता था। जब बेटी ने ये पहेलियाँ अपने पिता से सुनी तो वह अपने पिता से बोली — "पिता जी, आप लौर्ड के पास जा कर ये पहेलियाँ बुझाइये न।"

वह आदमी बोला — "बेटी, वहाँ पर इतने बड़े बड़े और अमीर लोग उन पहेलियों को बूझने के लिये आये हुए हैं। मैं उन लोगों के बीच कैसे जा सकता हूँ?

[25] Intelligent Daughter – a folktale from Ukrainian Canadians living in Canada
[26] Ukraine is a country in Eastern Europe

वहाँ लौर्ड के पास बहुत बड़े बड़े लोग आते हैं और लौर्ड उन से पूछता है — "तुम यहाँ किसलिये आये हो?"

वे लोग जवाब देते हैं — "हम लोग आपकी पहेलियाँ बूझने के लिये आये हैं।"

लौर्ड कहता है — "ठीक है। अगर तुम मेरी पहेलियाँ बूझ दोगे तो तुम्हें सौ डकैट[27] मिलेंगे और यदि नहीं बूझ पाये तो सौ कोड़े मिलेंगे।"

वे लोग सब अपनी अपनी समझ के अनुसार पहेलियाँ बूझते हैं परन्तु सब गलत बूझते हैं और बेचारे सब 100–100 कोड़े खा कर वापस आ जाते हैं।

अब बताओ बेटी, मेरी क्या हैसियत है जो मैं वहाँ जाऊँ? और यदि मैं वहाँ गया भी और मैंने भी वे पहेलियाँ गलत बूझी तो मुझे भी सौ कोड़े पड़ेंगे और वे 100 कोड़े खा कर मेरी तो जान ही निकल जायेगी। नहीं बेटी, मैं वहाँ नहीं जा सकता।"

बेटी बोली — "नहीं पिता जी, आप जाइये, मैं आपको इन पहेलियों के जवाब बताती हूँ।

शरीर को सबसे ज़्यादा ताकत देने वाली चीज़ है धरती। धरती जिससे हमारा खाना आता है। सबसे ज़्यादा मीठी चीज़ है नींद

---

[27] Ducat – a gold coin that was used as a trade currency throughout Europe before World War I. Its weight is 3.4909 grams of .986 gold.

जिसके आगे कोई चीज़ प्यारी नहीं। और सबसे ज़्यादा चंचल हैं ऑखें।"

पिता डरते डरते लौर्ड के पास पहुँचा। लौर्ड ने उससे भी पूछा — "तुम यहाँ किसलिये आये हो?"

वह आदमी थोड़ा झुक कर बोला — "सरकार, मैं आपकी पहेलियाँ बूझने आया हूँ।"

लौर्ड बोला — "शर्त तो तुमको मालूम है न?"

आदमी बोला — "जी सरकार।"

लौर्ड ने पूछा — "तो बताओ क्या चीज़ सबसे ज़्यादा मीठी है?"

आदमी थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोला — "सरकार नींद। क्योंकि जब किसी को नींद आती है तो वह सब कुछ भूल जाता है।"

लौर्ड फिर बोला — "अच्छा अब बताओ कि शरीर को सबसे ज़्यादा ताकत देने वाली क्या चीज़ है?"

आदमी फिर कुछ पल रुका और बोला — "सरकार धरती। शरीर को सबसे ज़्यादा ताकत देने वाली चीज़ है धरती क्योंकि वही हम सबको खाना देती है।"

लौर्ड फिर बोला — "बहुत अच्छे। और अब आखिरी सवाल। क्या चीज़ सबसे ज्यादा चंचल है?"

आदमी बोला — "सरकार सबसे ज्यादा चंचल हैं आँखें। उन्हें बन्द कर लो तो वे कुछ नहीं देखती हैं और उन्हें खोल लो तो वे आसमान के तारे तक देख लेती हैं।"

लॉर्ड बोला — "बहुत अच्छे। तुमने पहेलियाँ तो बूझ लीं हैं पर अब यह बताओ कि इन पहेलियों के जवाब तुमको बताये किसने? क्योंकि इन पहेलियों को तुम खुद तो बूझ नहीं सकते।"

आदमी थोड़ा सिर झुका कर बोला — "सरकार आप ठीक कहते हैं। ये पहेलियाँ मेरी बेटी ने बूझी हैं।"

लॉर्ड बोला — "तुम्हारी बेटी तो बहुत होशियार लगती है। ऐसा करो ये एक दर्जन अंडे ले जाओ और कल सुबह मुझे इनमें से निकले हुए चूजे ला कर देना।"

आदमी ने सोचा मैंने पहेलियों के जवाब क्या बूझे यह तो एक और मुसीबत गले आ पड़ी। पर मरता क्या न करता सो उसने वे अंडे उठाये और अपनी बेटी की सलामती की प्रार्थना करते हुए वह घर वापस आ गया।

बेटी ने पिता को देखा तो सब काम छोड़ कर दौड़ी दौड़ी पिता के पास आयी। उसने देखा कि उसका पिता तो ठीक ठाक दिखायी दे रहा है इसका मतलब है कि कम से कम उसको सौ कोड़े नहीं पड़े। उसने सन्तोष की साँस ली।

वह बोली — "क्या हुआ पिता जी? आप तो ठीक ठाक लग रहे हैं इससे ऐसा लगता है आपको इनाम मिल गया है।"

पिता कुछ परेशान सा बोला — "बस बस रहने दे। लौर्ड ने डकैट तो दिये नहीं उलटे ये अंडे मुझे थमा दिये हैं। उन्होंने कहा है कि इन अंडों से निकले हुए चूज़े उनको कल सुबह चाहिये। अब क्या होगा?" और उसने लौर्ड के घर में हुआ सारा हाल अपनी बेटी को बता दिया।

सुन कर बेटी बोली — "पिता जी, आप इन चूज़ों की बिल्कुल भी चिन्ता न करें। आइये खाना खा लीजिये बहुत भूख लगी है।"

जब तक उस लड़की का पिता तैयार हो कर खाना खाने आया तब तक उसने वे सब अंडे पका डाले। कुछ उसने स्वयं खाये और कुछ उसने पिता को खिलाये।

खाना खा कर उसने पिता को बाजरे के कुछ भुट्टे[28] दिये और बोली — "पिता जी, आप इन भुट्टों को अभी अभी लौर्ड के पास ले जाइये और कहिये कि वह इनमें से दाने निकाले।

उन्हें बोये और सुबह तक मुझे उनके भुट्टों में से मुलायम दाने निकाल कर भेजे ताकि उनको सुबह में उन अंडों में से निकले हुए चूज़ों को खिला सकूँ जो उसने मुझे भिजवाये हैं।"

[28] Millet ears – see the picture above

पिता बाजरे के वे भुट्टे ले कर लौर्ड के पास पहुँचा। लौर्ड उसे दोबारा आया देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उसने पूछा — "क्या हुआ इतनी जल्दी चूज़े निकल आये?"

आदमी लौर्ड को भुट्टे देता हुआ बोला — "सरकार, मेरी बेटी ने यह बाजरा भेजा है और कहा है कि आप इसमें से दाने निकाल कर बो दें और सुबह ताजा पैदा हुआ मुलायम बाजरा सुबह पैदा होने वाले चूज़ों के खाने के लिये तैयार रखें।"

लौर्ड बोला — "तुम्हारी बेटी तो बहुत ही होशियार है। ऐसा करो कि तुम उसको मेरे सामने लाओ और उसको कहना कि वह मेरे पास आये तो न तो वह बिल्कुल बिना कपड़ों के हो और न ही कोई कपड़ा पहने हो। न वह किसी सवारी पर आये और न ही पैदल आये। न तो वह कोई भेंट ही लाये और न ही वह बिना भेंट के आये।"

पिता बेचारा फिर से चिन्ता करता हुआ घर वापस लौट गया। बेटी ने पिता को देखा तो सब काम छोड़ कर पिता के पास भागी आयी और बोली — "क्या हुआ पिता जी? अब लौर्ड ने क्या कहा?"

पिता दुखी हो कर बोला — "बेटी, अबकी बार तुम लौर्ड के फन्दे में फँस गयी हो। इससे बच निकलना बहुत मुश्किल है।"

बेटी को भी थोड़ी चिन्ता हो गयी पर फिर भी वह हिम्मत से बोली — "हुआ क्या पिता जी, कुछ बताइये तो सही।"

पिता ने उसे सब बता दिया। बेटी की साँस में साँस आयी और वह बोली — "बस पिता जी, इतनी सी बात। आप तो बेकार में ही चिन्ता कर रहे थे। आप बिल्कुल भी चिन्ता न करें मैं सब सँभाल लूँगी। आइये पहले खाना खा लें फिर सोचेंगे।"

खाना खा कर बेटी अपने पिता से बोली — "पिता जी, आप मुझे बाजार से दस गज मछली पकड़ने वाला जाल ला दें।"

पिता बाजार गया और उसने अपनी बेटी के लिये दस गज मछली पकड़ने वाला जाल ला कर दे दिया।

उस मछली पकड़ने वाले जाल से उसने अपने लिये एक पोशाक बनायी और उसको पहन लिया। इस तरह वह न तो बिना कपड़ों के थी और न ही उसने कोई कपड़ा पहन रखा था।

फिर उसने अपना बड़ा वाला कुत्ता लिया और उस पर बैठ गयी। इस तरह वह न तो किसी सवारी पर सवार थी और न ही पैदल चल रही थी क्योंकि उस पर बैठ कर चलने से उसके पैर केवल घिसट ही रहे थे।

फिर उसने दो चिड़ियाँ पकड़ीं और एक बिल्ली और अगले दिन लौर्ड के घर चल दी।

लौर्ड ने जब उसे आते देखा तो उस पर अपने कुत्ते छोड़ दिये।

लड़की ने अपनी बिल्ली छोड़ दी तो लौर्ड के कुत्ते उसकी बिल्ली के पीछे दौड़ पड़े और लड़की लौर्ड के घर में घुसी।

लौर्ड के सामने पहुँच कर उसने कहा — "लौर्ड, ये रहीं आप की भेंटें, पकड़िये।" यह कह कर उसने दोनों चिड़ियाँ छोड़ दीं। चिड़ियाँ फुर्र से उड़ गयीं और लौर्ड देखता का देखता रह गया। इस तरह वह भेंट लायी भी थी पर लौर्ड उस भेंट को ले भी न सका।

लौर्ड ने देखा कि वह कपड़े पहने भी थी और नहीं भी पहने थी। इसके अलावा वह अपने कुत्ते पर सवार थी और उसके पैर घिसट रहे थे सो वह सवारी पर थी भी और नहीं भी थी।

लौर्ड यह सब देख कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "बैठो, तुम बहुत होशियार लड़की हो। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

लड़की बोली — "यदि आप चाहें तो।"

लौर्ड फिर बोला — "ठीक है। अभी तुम अपने घर जाओ। मैं कल तुम्हारे पिता जी से बात करूँगा और फिर हम शादी कर लेंगे।"

लड़की अपने घर वापस आ गयी और अपने पिता से बोली — "पिता जी, लौर्ड मुझसे शादी करना चाहते हैं।"

अगले दिन लौर्ड उस आदमी के घर आया और फिर उन दोनों की शादी हो गयी।

अब सारे लोग अपनी सारी उलझनों को सुलझाने के लिये उस लड़की के पास आते थे चाहे लौर्ड घर में होता था या नहीं। और

क्योंकि वह लड़की सारे फैसले अक्लमन्दी और समझदारी से करती थी इसलिये सारे लोग उसके फैसलों से बहुत सन्तुष्ट थे।

एक बार तीन लोग एक मेले में जा रहे थे। एक आदमी के पास एक घोड़ी थी, दूसरे आदमी के पास एक गाड़ी थी और तीसरे आदमी के पास एक जग था।

रास्ते में रात हुई तो वे तीनों लौर्ड के घर के पास रुक गये और वहीं सो गये। सुबह उठे तो देखा कि घोड़ी वाले की घोड़ी ने वहाँ एक बच्चा दे दिया था।

घोड़ी वाला आदमी बोला — "क्योंकि घोड़ी मेरी है इसलिये यह बच्चा मेरा है।"

गाड़ी वाला आदमी बोला — "तुम झूठ बोल रहे हो यह बच्चा मेरी गाड़ी ने दिया है इसलिये यह बच्चा मेरा है।"

तीसरा आदमी बोला — "तुम दोनों झूठ बोल रहे हो। यह बच्चा मेरे जग ने दिया है इसलिये यह बच्चा मेरा है।"

तीनों फैसले के लिये लौर्ड के घर आये। लौर्ड घर में नहीं था तो लौर्ड की पत्नी बाहर आयी और उन लोगों से पूछा — "क्या बात है?"

तीनों ने अपनी उलझन बतायी तो वह बोली — "लौर्ड तो अभी घर में नहीं है बाहर अनाज से मछली पैदा करने गये हैं।"

यह सुन कर तीनों को बड़ा ताज्जुब हुआ। उनमें से एक बोला — "हमने अनाज से मछली पैदा होती तो कभी नहीं सुनी।"

लौर्ड की पत्नी बोली — "और मैंने भी कभी गाड़ी और जग से घोड़ा पैदा होता नहीं सुना। यह बच्चा घोड़ी वाले का है, उसको दे दो और अब तुम जाओ।"

जब लौर्ड लौट कर आया और उसने यह सब सुना तो अपनी पत्नी पर बहुत नाराज हुआ क्योंकि वह उससे कई बार कह चुका था कि वह उसके मामलों में दखल न दिया करे और आज उसने फिर फैसला कर दिया था।

वह फिर बोला — "तुम सुनती नहीं हो इसलिये तुम आज से मेरी पत्नी नहीं हो। जाओ निकल जाओ मेरे घर से।"

पत्नी बोली — "ठीक है मैं चली जाती हूँ पर आज आखिरी बार हम साथ साथ खाना तो खा लें।" सो दोनों ने साथ साथ खाना खाया, शराब पी और फिर लौर्ड सोने चला गया।

इधर पत्नी ने गाड़ी वाले को बुला कर उसे गाड़ी तैयार करने को बोला। गाड़ी तैयार होने पर उसने लौर्ड को गाड़ी में रखवाया और वह खुद भी उसके पास ही बैठ गयी और गाड़ी चल दी।

कुछ देर बाद लौर्ड की आँख खुली तो उसने देखा कि वह गाड़ी में है। वह बोला — "मैं कहाँ हूँ? और कहाँ जा रहा हूँ मैं?"

पत्नी ने जवाब दिया — "आप मेरे साथ हैं और आप मेरे साथ जा रहे हैं। आपने मुझे घर से बाहर निकाल दिया था न।"

लौर्ड बोला — "पर मैंने तो तुमको अकेले को ही घर से निकाला था फिर मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ?"

पत्नी बोली — "पर आपने ही तो कहा था कि मैं अपनी पसन्द की एक चीज़ अपने साथ ले जा सकती हूँ। और क्योंकि आप मेरे पति हैं और क्योंकि आप मुझे सबसे ज़्यादा प्यारे हैं इसलिये मैं आपको अपने साथ लिये जा रही हूँ।"

लौर्ड ने अपना सिर पीट लिया। वह बोला — "चलो चलो घर वापस चलो। अब हम लोग साथ ही रहेंगे।"

और वे दोनों घर लौट आये और साथ साथ हँसी खुशी रहने लगे। अब लौर्ड कभी उसके मामले में दखल नहीं देता था।

8 पहली तलवार और आखिरी झाड़ू[29]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि दो सौदागर थे जिनके घर एक दूसरे के आमने सामने थे। उनमें से एक के सात बेटे थे और दूसरे के सात बेटियाँ।

रोज सुबह बेटों का पिता अपनी खिड़की खोलता और बेटियों के पिता को नमस्ते कहता — "गुड मौर्निंग ओ सात झाड़ुओं वाले सौदागर।"

और दूसरे सात बेटियों वाले सौदागर को उसकी यह गुड मौर्निंग कभी अच्छी नहीं लगती। वह चुपचाप अपने घर के अन्दर चला जाता और अक्सर गुस्से में आ कर रो पड़ता।

यह देख कर उसकी पत्नी बहुत दुखी होती। उसको रोते देख कर वह उससे पूछती कि "क्या हुआ? तुम क्यों रो रहे हो?" पर उसका पति उसे कभी कुछ नहीं बताता और बस वह रोता ही रहता।

---

[29] First Sword and Last Broom – a folktale from Naples area, Italy, Europe.
Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

इस सौदागर की सबसे छोटी बेटी सत्रह साल की थी और तस्वीर की तरह सुन्दर थी। उसके पिता को उसके ऊपर बड़ा नाज़ था और वह उसको बहुत प्यार करता था।

अपने पिता को इस तरह रोज रोते देख कर उसको भी बहुत दुख होता था सो एक दिन उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, अगर आप सचमुच मुझे प्यार करते हैं तो आज आप मुझे अपनी परेशानी बताइये। आपका रोज सुबह सुबह का रोना मुझसे देखा नहीं जाता।"

पिता बोला — "बेटी, यह जो सौदागर हमारे घर के सामने रहता है रोज सुबह यह कह कर मुझे गुड मौर्निंग करता है "गुड मौर्निंग ओ सात झाडुओं वाले सौदागर।" और हर सुबह मैं वहाँ खड़ा होता हूँ पर यह नहीं सोच पाता कि मैं उसकी इस गुड मौर्निंग का क्या जवाब दूँ।"

बेटी प्यार से बोली — "अरे पिता जी बस इतनी सी बात। आप मेरी बात सुनें। अबकी बार जब वह आपको इस तरह से गुड मौर्निंग करे तब आप उससे कहियेगा —

"गुड मौर्निंग ओ सात तलवार वाले सौदागर। मैं तुझसे शर्त लगाता हूँ कि मैं अपनी आखिरी झाडू लेता हूँ और तू अपनी पहली तलवार ले और फिर देखते हैं कि फ्रांस[30] के राजा का दंड और

[30] France is a country in Europe

ताज[31] पहले किसको मिलता है और कौन उसको पहले ले कर आता है।

अगर मेरी बेटी जीत गयी तो तू मुझे अपनी सारी चीज़ें दे देना और अगर तेरा बेटा जीत गया तो मैं अपनी सारी चीज़ें हार जाऊँगा।" और हाँ आप उससे यह बात जरूर जरूर कहियेगा।

और अगर वह इस बात पर राजी हो जाये तो उससे एक कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत जरूर करा लीजियेगा जिसमें ये सब शर्तें लिखी हों ताकि वह बाद में मुकर न जाये।"

यह सुन कर तो पिता का मुँह खुला का खुला रह गया। जब उसकी बेटी की बात खत्म हो गयी तो वह बोला — "पर बेटी तू जानती भी है कि तू क्या कह रही है? क्या तू यह चाहती है कि मैं अपना सब कुछ खो दूँ?"

बेटी बोली — "नहीं पिता जी। मैं ऐसा क्यों चाहूँगी। मैं तो बल्कि यह चाहती हूँ कि आपको उसका भी सब कुछ मिल जाये। आप बिल्कुल मत डरिये। सब मुझ पर छोड़ दीजिये।

आप तो बस उससे शर्त लगाइये और इस शर्त के कौन्ट्रैक्ट को लिख कर उस पर दस्तखत करा लीजिये। फिर मैं देखती हूँ कि क्या होता है।"

[31] Who can get the scepter and the crown of the King of France first? See the picture of the crown of the King of France above.

उस रात सात बेटियों का पिता सौदागर एक मिनट के लिये भी नहीं सो सका और सुबह का इन्तजार करता रहा। अगले दिन सुबह से ही वह अपने छज्जे पर जा पहुँचा। आज वह दूसरे दिनों से पहले ही वहाँ पहुँच गया था। सामने वाले सौदागर की खिड़की अभी भी बन्द थी।

अचानक सामने वाले सौदागर की खिड़की खुली और उसमें उसको वह सात बेटों का पिता सौदागर दिखायी दिया। उसने अपनी खिड़की खोल कर रोज की तरह उसको गुड मौर्निंग की — "गुड मौर्निंग ओ सात झाड़ुओं वाले सौदागर।"

आज वह सात बेटियों का पिता यह सुन कर दुखी हो कर अन्दर नहीं गया क्योंकि आज तो वह उसकी इस गुड मौर्निंग का जवाब देने के लिये तैयार था सो वह बोला —

"गुड मौर्निंग ओ सात तलवार वाले सौदागर। मैं आज तुझसे एक शर्त लगाता हूँ। मैं अपनी आखिरी झाड़ू लेता हूँ और तू अपनी पहली तलवार ले ले।

हम इन दोनों को एक एक घोड़ा और एक एक थैला भर कर पैसे देंगे और देखते हैं कि दोनों में से पहले कौन फ्रांस के राजा का दंड और ताज हमारे पास ले कर आता है। हम इस बात पर अपना अपना पूरा सामान दाँव पर लगाते हैं। अगर मेरी बेटी जीत गयी तो तेरा सारा सामान मेरा हो जायेगा और अगर तेरा बेटा जीत गया तो मेरा सारा सामान तेरा हो जायेगा।"

यह सुन कर वह सात बेटों वाला सौदागर पिता तो हक्का बक्का रह गया। फिर ज़ोर से हॅस पड़ा और अपना सिर ज़ोर से ना में हिलाया जैसे कि कह रहा हो कि सात बेटियों का यह पिता कहीं पागल तो नहीं हो गया।

बेटियों का पिता बोला — "क्या तू डरता है? क्या तुझे अपने बेटे पर भरोसा नहीं है?"

बेटों का पिता बोला — "मैं अपनी बात के लिये राजी हूॅ। चल कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत करते हैं और उन दोनों को फ्रांस के राजा का दंड और ताज लाने के लिये भेजते हैं।"

यह सब वह बेटियों के पिता से कह कर इस सबको अपने सबसे बड़े बेटे से कहने के लिये वह तुरन्त ही अन्दर चला गया।

यह सोच कर ही कि वह "पड़ोसी सौदागर की उस सुन्दर लड़की के साथ जायेगा" वह लड़का मुस्कुरा दिया। सो उन शर्तों के साथ कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत होगये। दोनों बच्चों को एक एक घोड़ा और एक एक पैसों का थैला दे दिया गया और उनके जाने का समय तय कर दिया गया।

जब जाने का समय आया तो वह लड़की एक लड़के के वेश में तैयार हो कर आयी और आ कर अपनी सफेद फ़िली घोड़ी[32] पर

[32] Filly horse is a young female horse, too young to be called a mare, is up to first breeding or 4 years of age. See its picture above.

बैठ गयी। तब उस लड़के को लगा कि यह मजाक का मामला नहीं था।

असल में तो जब उनके पिताओं ने एक बार उस कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत कर दिये और उनको कह दिया कि “जाओ” तो वह लड़की तो अपनी फ़िली घोड़ी पर तुरन्त ही दौड़ गयी जबकि उस दूसरे सौदागर के लड़के का अपना मजबूत घोड़ा केवल हिनहिनाता ही रह गया। उसको चलने में थोड़ा समय लगा।

फ्रांस में पहुँचने के लिये एक घना, अँधेरा और बिना रास्ते वाला जंगल पार करना पड़ता था। लड़की की फ़िली तो उसमें से कूदती हुई ऐसे निकल गयी जैसे वह अपने घर में से जा रही हो।

वह कभी ओक के पेड़ों के दाँये से निकल जाती, तो कभी पाइन के पेड़ों के बाँये से निकल जाती, तो कभी हैज[33] के ऊपर छलाँग लगा देती पर बस वह तो आगे ही आगे बढ़ती जा रही थी।

पर इस घोड़ी के सामने लड़के के मजबूत घोड़े को थोड़ी परेशानी हो रही थी। पहली बार तो उसकी ठोड़ी ही एक पेड़ की झुकी हुई डाल से टकरा गयी तो वह लड़का उसकी जीन[34] से ही नीचे गिर गया।

---

[33] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc. See its picture above.

[34] Translated for the word “Saddle”.

फिर उसके घोड़े के पैर नीचे पड़ी सड़ी पत्तियों के ढेर पर पड़ कर उसमें फॅस गये और वह पेट के बल गिर पड़ा। फिर वे दोनों यानी लड़का और घोड़ा एक ब्रायर के मैदान[35] में फॅस गये और बहुत देर तक नहीं निकल सके।

पर इस बीच वह लड़की अपनी फ़िली पर चढ़ कर वह जंगल पार कर गयी और उस लड़के से मीलों आगे निकल गयी। फ्रांस पहुँचने के लिये उस जंगल के बाद फिर एक पहाड़ पार करना पड़ता था जो चोटियों और खाइयों से भरा हुआ था।

वह लड़की पहाड़ की चढ़ाई पर ऊपर चढ़ रही थी जब उसको उस लड़के के घोड़े के टापों की आवाज अपने पीछे आती सुनायी दी। पर उसकी फ़िली तो बस चढ़ती ही जा रही थी जैसे वह उसका अपना घर हो।

वह पत्थरों के दॉये बॉये से कूदती फॉदती हुई अब मैदानों में आ पहुॅची थी। पर लड़के को अपने मजबूत घोड़े को उस पहाड़ पर ले जाने में काफी मेहनत करनी पड़ रही थी।

बीच में पहाड़ भी टूट कर गिर पड़ा जिससे उसका घोड़ा गिर पड़ा और फिर वह वापस जहॉ से चढ़ने के लिये चला था वहीं आ गया।

लड़की तो फ्रांस जाने के रास्ते पर उस लड़के से कहीं बहुत आगे थी। फ्रांस पहुॅचने के लिये अभी उसको एक नदी और पार

---

[35] Briar is a kind of poisonous grass/plant

करनी थी। उसकी फ़िली उस पानी में कूद पड़ी और तेज़ी से नदी पार कर के उसके दूसरे किनारे पर आ गयी।

जब वह लड़की दूसरे किनारे पर आ गयी तो उसने लड़के को ढूँढने के लिये इधर उधर देखा तो उसने लड़के को नदी की तरफ आते देखा और अपने नदी में से निकलने के बाद में उसके घोड़े को नदी में घुसते देखा।

पर लड़के के घोड़े को नदी पार करने का शायद ज़्यादा पता नहीं था सो जब उसका घोड़ा नदी की बालू पर पैर न रख सका तो वह घोड़ा और वह लड़का दोनों नदी के तेज़ बहाव में बह गये।

लड़की पेरिस[36] पहुँच गयी। वह अभी भी एक लड़के के वेश में थी। वहाँ पहुँच कर वह एक ऐसे सौदागर के पास गयी जो उसको अपने यहाँ काम दे देता। यह सौदागर राजमहल में सामान पहुँचाता था।

जब उसने इतना सुन्दर नौजवान देखा तो उसने उसको तुरन्त ही काम पर रख लिया और फिर वह उसी के हाथों अपना सामान राजमहल में भेजने लगा।

जब राजा ने सौदागर के उस नौजवान नौकर को देखा तो उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो? तुम तो मुझे कोई परदेसी लगते हो। यहाँ कैसे आये हो?"

[36] Paris is the capital of France country

नौजवान ने जवाब दिया — "मैजेस्टी, मेरा नाम टैम्परीनो[37] है। मैं नैपिल्स[38] के राजा के यहॉ उनकी चीज़ों पर खुदाई का काम[39] करता था। पर वहॉ कुछ ऐसी घटनाऐं हो गयी जिनकी वजह से मुझे यहॉ आना पड़ा।"

यह सुन कर राजा ने पूछा — "अगर मैं तुम फ्रांस के शाही महल में खुदाई करने वाले की जगह दे दूॅ तो क्या तुम वह काम करना पसन्द करोगे?"

वह नौजवान बोला — "ओह मैजेस्टी, वह तो मेरे लिये भगवान का दिया हुआ वरदान होगा।"

"ठीक है मैं तुम्हारे मालिक से बात करूॅगा।" राजा ने उस सौदागर से उस नौजवान के बारे में बात की तो उस सौदागर की उस को छोड़ने की इच्छा तो नहीं हो रही थी पर वह राजा का हुक्म भी नहीं टाल सकता था सो उसने उस नौजवान को राजा को दे दिया। और इस तरह वह लड़की राजा के राजमहल में खुदाई करने वाला बन गया।

राजा उसको रोज देखता और जितना देखता उसको देख कर उसके दिल में कुछ होता। एक दिन उसने अपनी मॉ से इस नौजवान के बारे में बात की।

---

[37] Temperino – name of the girl. Means small knife

[38] Naples is big important historical city and port of Italy situated at south to Rome on its western coast.

[39] Translated for the word "Carver" who carves on wood or metal

उसने अपनी माँ से कहा — "माँ इस टैम्परीनो में कुछ भेद है जो मैं सुलझा नहीं पा रहा हूँ। इसके हाथ बहुत सुन्दर हैं, इसकी कमर बहुत पतली है, यह गाता बजाता है और पढ़ता लिखता है। मुझे लगता है कि टैम्परीनो लड़का है ही नहीं बल्कि एक लड़की है। मैं उसे अपना दिल दे बैठा हूँ।"

माँ बोली — "बेटे तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।"

राजा बोला — "नहीं माँ, मेरा दिमाग खराब नहीं हुआ बल्कि मुझे पूरा यकीन है कि टैम्परीनो लड़का नहीं एक लड़की है। मुझे तुमसे बस यही पूछना है कि मैं इसे कैसे साबित करूँ।"

माँ बोली — "तुम ऐसा करो कि एक दिन उसको शिकार के लिये ले जाओ। अगर वह केवल क्वैल[40] का शिकार करे तब तो वह एक लड़की है क्योंकि फिर उसके दिमाग में केवल एक भुनी हुई चिड़िया ही आयेगी।

और अगर वह गोल्ड फ़िन्च[41] का शिकार करे तब वह एक आदमी है क्योंकि आदमी लोगों को अपने शिकार के पीछे भागना अच्छा लगता है।"

इस प्लान के मुताबिक राजा ने ऐसा ही किया। उसने टैम्परीनो को एक बन्दूक दी और उसको शिकार का न्यौता दिया। टैम्परीनो

[40] Quail is a mid-sized bird found in many species – see the picture here of a Californian Quail bird.
[41] Gold Finch is a bird which is found in several colors. One of its types is shown here in yellow color.

ने कहा कि वह शिकार के लिये अपने ही घोड़ी पर जायेगा सो वह अपनी फ़िली पर चढ़ा और राजा के साथ शिकार पर चल दिया।

टैम्परीनो को धोखा देने के लिये राजा ने केवल एक क्वैल मारी पर जब भी कोई क्वैल दिखायी दी तो फ़िली पीछे हट गयी। इससे टैम्परीनो को लगा कि उसको क्वैल को नहीं मारना चाहिये।

सो टैम्परीनो ने पूछा — "मैजेस्टी, क्या मैं आपसे यह पूछने की हिम्मत कर सकता हूँ कि क्या क्वैल को मारना शिकार करने की होशियारी का इम्तिहान है? आपने भूनने के लिये तो काफी क्वैल मार ली हैं अब कुछ गोल्ड फ़िन्चैज़ भी मार लीजिये जो कि क्वैल को मारने से ज़्यादा मुश्किल काम है।"

जब राजा घर पहुँचा तो उसने यह सब कुछ अपनी माँ को बताया — "माँ, तुम ठीक कहती थीं वह गोल्ड फ़िन्चैज़ को मारने पर ज़्यादा ज़ोर दे रहा था बजाय क्वैल के। पर मैं अभी भी सन्तुष्ट नहीं हूँ।

माँ, उसके हाथ बहुत सुन्दर हैं, उसकी कमर बहुत पतली है, यह गाता बजाता है और पढ़ता लिखता है। माँ मैं फिर कहता हूँ कि टैम्परीनो एक लड़की है जिसको मैं अपना दिल दे बैठा हूँ।"

माँ बोली — "तो बेटे, अब हम उसका दूसरा इम्तिहान लेते हैं। तुम उसको बागीचे में सलाद तोड़ने के लिये जाओ। अगर वह बड़ी सावधानी से केवल ऊपर वाले पत्ते तोड़ता है तो वह एक लड़की है क्योंकि हम स्त्रियों में आदमियों से ज़्यादा धीरज होता है।

और अगर वह जड़ के साथ सारा का सारा पौधा ही उखाड़ लेता है तब वह एक आदमी है।"

सो अबकी बार राजा उसको अपने बागीचे में सलाद तोड़ने के लिये ले गया और वह खुद सलाद के ऊपर ऊपर के पत्ते तोड़ने लगा। वह खोदने वाला टैम्परीनो भी यही करने वाला था कि उसकी फ़िली आयी और उन पौधों को जड़ से उखाड़ने लगी।

टैम्परीनो समझ गया कि उसको भी वही करना था। उसने तुरन्त ही पूरे के पूरे सलाद के पौधे उखाड़ कर अपनी टोकरी भर ली। उन पौधों पर अभी भी मिट्टी लगी थी।

फिर राजा उसको फूलों की क्यारियों की तरफ ले गया और बोला — "देखो कितने सुन्दर गुलाब खिले हैं यहाँ।"

पर फ़िली अपने मालिक को दूसरी तरफ ले गयी जिधर कारनेशन और चमेली[42] के फूल खिले थे।

टैम्परीनो बोला — "गुलाब के तो काँटे हाथों में चुभ जायेंगे। तुम कारनेशन और चमेली के फूल तोड़ो न।" राजा यह सुन कर कुछ नाउम्मीद सा तो हो गया पर फिर भी उसने अपनी उम्मीद नहीं छोड़ी।

उसने यह सब जा कर फिर अपनी माँ से कहा क्योंकि उसको हमेशा ही यह लगता — "इसके हाथ बहुत सुन्दर हैं, इसकी कमर

[42] Carnation and jasmine – see the picture of pink carnation flower above.

बहुत पतली है, यह गाता बजाता है और पढ़ता लिखता है। मुझे लगता है कि टैम्परीनो लड़का है ही नहीं बल्कि एक लड़की है और मैं उसे अपना दिल दे बैठा हूँ।"

माँ बोली — "बेटे, अब इस समय बस तुम्हारे पास केवल एक तरीका ही और रह गया है और वह यह कि तुम उसको अपने साथ तैरने के लिये ले जाओ।"

सो राजा ने टैम्परीनो से कहा — "चलो आज नदी में तैरने चलते हैं।" टैम्परीनो तैयार हो गया।

नदी पर पहुँच कर टैम्परीनो बोला — "मैजेस्टी, पहले आप अपने कपड़े उतारिये।" राजा समझ गया कि वह राजा के पीछे अपने कपड़े उतारेगा सो वह अपने कपड़े उतार कर नदी में घुस गया।

उसी समय ज़ोर से हिनहिनाने की आवाज आयी और फ़िली वहाँ दौड़ती हुई आयी। उसके मुँह से झाग निकल रहे थे।

उसको देखते ही टैम्परीनो चिल्लाया — "ओह मेरी फ़िली। मैजेस्टी आप ज़रा सा इन्तजार कीजिये। मेरी फ़िली बहुत खुश है। मैं ज़रा उसके पास हो कर आता हूँ।" और वह फ़िली के पीछे दौड़ गया।

टैम्परीनो सीधा शाही महल दौड़ा गया और रानी माँ से जा कर बोला — "रानी माँ, राजा नदी में बिना कपड़ों के हैं और चौकीदार इस हालत में उनको बिना पहचाने पकड़ भी सकते हैं इसलिये उन्होंने

अपना दंड और ताज लेने के लिये मुझे यहॉ भेजा है ताकि वे उनको उन चीज़ों से पहचान सकें।"

रानी मॉ तो यह सुन कर घबरा गयी। बिना सोचे समझे उसने राजा का दंड और ताज टैम्परीनो को दे दिये। जब वे उसके हाथ में आ गये तो वह अपने फ़िली पर चढ़ा और यह गाता हुआ चल दिया

मैं यहॉ एक लड़के के रूप में आयी
मैं एक लड़के के रूप में ही वापस जा रही हूॅ
वैसे ही मैंने राजा का दंड और ताज भी ले लिया।

उसने नदी पार की, उसने पहाड़ पार किया, उसने जंगल पार किया और अपने घर आ गयी।

घर आ कर उसने देखा तो सामने वाले सौदागर का बेटा तो वहॉ अभी तक आया ही नहीं था और इस तरह वह जीत गयी। सामने वाले सौदागर की सारी चीज़ें उसके पिता की हो गयीं।

9 रत्न जड़ा जूता[43]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल[44] देश की है। एक बार पुर्तगाल देश में एक व्यापारी रहता था जिसके दो बच्चे थे – एक बेटा और एक बेटी। वे जब छोटे थे तभी उनके माता पिता मर गये थे सो वे दोनों अकेले रह गये।

वह लड़का अपनी बहिन को बहुत प्यार करता था। वह पढ़ लिख कर पुर्तगाल के राजा के यहाँ नौकरी करने लगा था। उसकी लिखाई आँखों को इतनी सुन्दर लगती थी कि राजा ने उसको अपना सेक्रेटरी बना लिया था।

अब हुआ यह कि उसके हाथ की लिखी हुई कुछ चिट्ठियाँ स्पेन[45] के राजा के पास पहुँचीं तो उसके मुँह से निकला — "कितनी सुन्दर लिखाई है। अगर मुझे यह लिखने वाला मिल जाये तो मैं इसको अपना सेक्रेटरी बना लूँ।"

यह सोच कर उसने पुर्तगाल के राजा को लिखा – "मैंने आपकी चिट्ठी पढ़ी। मैं आपके सेक्रेटरी की सुन्दर लिखावट देख कर बहुत खुश हुआ।

[43] Bejeweled Boot – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated in English by George Martin in 1980.

[44] Portugal – a European country

[45] Spain – a European country

हमारी दोस्ती की खातिर जिसने हमको बाँध रखा है मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस चिट्ठी लिखने वाले को मुझे दे दें। मैं उसको अपना सेक्रेटरी बनाना चाहता हूँ। स्पेन में कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इतना सुन्दर लिखता हो।"

ये राजा लोग एक दूसरे से बड़ा अच्छा बर्ताव करते थे। इसलिये हालाँकि पुर्तगाल का राजा अपना सेक्रेटरी किसी को देना नहीं चाहता था फिर भी उसने अपने सेक्रेटरी को अपने दोस्त स्पेन के राजा के पास भेज दिया।

जाते समय उस नौजवान ने पूछा — "योर मैजेस्टी, मैं अपनी बहिन का क्या करूँ? मैं उसको इस तरह अकेले छोड़ कर तो नहीं जा सकता।"

राजा बोला — "डौन जियूसैप[46]। मैं यह तो नहीं बता सकता। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि तुमको वहाँ जाना है। तुम्हारी बहिन एक अच्छी लड़की है और मेरे ख्याल में वह अपने आप अकेली रह सकती है। तुम अपनी नौकरानी को बोल जाओ कि वह उस पर नजर रखे। फिर तुमको उसकी चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।"

अब उस नौजवान के पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपनी बहिन को यह सब बता दे।

[46] Don Giuseppe – the name of the brother

उसने उसको लिखा — "प्यारी बहिन कुछ ऐसा मामला आ गया है कि मुझे पुर्तगाल से स्पेन जाना पड़ रहा है। स्पेन का राजा मुझे अपना सेक्रेटरी बनाना चाहता है।

तुम मेरे पीछे नौकरानी के साथ अकेली रह जाओगी। मैं जब वहॉ ठीक से रहने लगूँगा तब मैं तुमको वहॉ बुला लूँगा।"

यह पढ़ कर उसकी बहिन तो रोने लगी। उसने आगे पढ़ा — "हम लोग एक दूसरे को इतना दूर न महसूस करें इसलिये हम लोगों को अपनी अपनी तस्वीरें बनवा लेनी चाहिये। मैं तुम्हारी तस्वीर ले जाऊँगा और तुम मेरी तस्वीर रख लेना।"

और फिर उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने एक दूसरे की तस्वीरें बनवा लीं और वह लड़का अपनी बहिन की तस्वीर ले कर स्पेन चला गया।

स्पेन के राजा ने उसका जोर शोर से स्वागत किया और तुरन्त ही उसको लिखने पर लगा दिया। वह खुद खड़े हो कर उसकी सुन्दर लिखाई देखता रहता और मन ही मन उसकी तारीफ करता रहता।

वह अपने नये सेक्रेटरी को इतना चाहने लगा कि उसके राज्य में अब जब भी कोई समस्या होती तो वह उससे कहता — "डौन जियूसैप, तुम देख लो इसको। तुम्हारे ऊपर मुझे पूरा विश्वास है। अपनी समझ से जो भी तुम करोगे ठीक ही करोगे।"

इस सबका नतीजा यह हुआ कि राजा के दरबारियों में उसके लिये बहुत जलन पैदा हो गयी – कुलीन लोग, राजा का पुराना सेक्रेटरी, नाइट आदि सभी उससे जलने लगे।

एक दिन उन सबने मिल कर डौन जियूसैप की इज्जत को बट्टा लगाने का प्लान बनाया।

एक कुलीन आदमी राजा के पास गया और बोला — "मैजेस्टी, आपने लिखने के लिये तो बहुत अच्छा आदमी ढूँढ लिया है। मैं डौन जियूसैप के बारे में बात कर रहा हूँ जिसकी तारीफ करते करते आप थकते नहीं। पर आपको क्या पता कि आपके पीछे आपके विश्वास की आड़ में वह छिपे छिपे क्या कर रहा है।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? क्या मामला है? मुझे साफ साफ बताओ कि तुम क्या कहना चाहते हो।"

"क्या मामला है और मैं क्या कहना चाहता हूँ? बात यह है कि रोज वह कमरे में एक तस्वीर ले कर जाता है। वह उसको देखता रहता है। उसको चूमता है और रोता है। और फिर वह उसको छिपा कर रख देता है।"

राजा ने यह सुन कर सोचा कि वह इस मामले की जाँच खुद ही करेगा। एक दिन राजा डौन जियूसैप के कमरे में गया और वहाँ अचानक ही पहुँच कर उसको आश्चर्यचकित कर दिया। उस समय वह उस तस्वीर को चूम रहा था।

राजा ने पूछा — "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह तुम किसे चूम रहे थे, डौन जियूसैप?"

डौन जियूसैप बोला — "यह मेरी बहिन की तस्वीर है मैजेस्टी।"

राजा ने उस तस्वीर की तरफ देखा तो वह उसको बहुत सुन्दर लगी। वह उस तस्वीर वाली लड़की से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। डौन जियूसैप ने फिर राजा को उसके बारे में और भी बहुत कुछ बताया। उसने उसके और भी कई सारे गुण बखान किये।

वहाँ वह कुलीन आदमी भी मौजूद था जो डौन जियूसैप को गलत साबित करने से अपने आप को रोक नहीं सका था।

उसने राजा के पीछे से उस तस्वीर को देखा और बोला — "कौन? यह स्त्री? इसको तो मैं जानता हूँ। मैं तो इसके साथ बातचीत भी कर चुका हूँ।"

नौजवान आश्चर्य से बोला — "क्या? मेरी बहिन से? और तुम बतचीत कर चुके हो? पर वह तो घर के बाहर कभी गयी ही नहीं। तुमने उसे कैसे देख लिया जबकि उसे अभी तक किसी ने नहीं देखा?"

"हाँ हाँ, मैं सच कह रहा हूँ कि मैंने उससे बात की है।"

"तुम झूठ बोल रहे हो।"

जब दोनों में काफी बहस होने लगी तो राजा बीच में बोला — "इस मामले का हम एक बार ही फैसला कर देते हैं। ओ कुलीन आदमी, अगर यह सच है कि तुमने डौन जियूसैप की बहिन से बात की है तो हम तुमको एक महीना देते हैं कि तुम हमको यह बात साबित कर के दिखाओ कि तुमने उससे बात की है।

अगर तुमने यह साबित कर दिया कि तुमने डौन जियूसैप की बहिन से बात की है तो डौन जियूसैप का सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा। और अगर तुम इस बात को साबित नहीं कर सके तो फिर तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।"

अब शाही हुक्म तो शाही हुक्म है और आखिरी फैसला है।

यह सुन कर वह कुलीन आदमी वहाँ से चला गया। जब वह पलेरमो[47] पहुँचा तो उसने इस लड़की के बारे में हर एक से पूछना शुरू किया तो हर एक ने यही कहा कि वह है तो बहुत सुन्दर पर उसको देखा किसी ने नहीं है क्योंकि वह कभी घर से बाहर ही नहीं निकली।

दिन पर दिन बीतते गये और उस कुलीन आदमी को कुल्हाड़ी रोज अपनी गर्दन के और पास आती दिखायी देती रही।

यही सोचते हुए और अपने हाथ मलते हुए वह एक शाम को डौन जियूसैप के घर के आस पास घूम रहा था और साथ में

[47] Palermo is a place in Italy

बुड़बुड़ाता जा रहा था कि "मैं क्या करूँ?" कि तभी एक बुढ़िया ने उसको चौंका दिया।

उस बुढ़िया ने उससे कहा — "मेहरबानी कर के मुझे कुछ खाने को दो मैं बहुत भूखी हूँ।"

"जाओ भागो यहाँ से।"

"मुझे कुछ दे दो मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

"मुझे एक ऐसे आदमी से मिलना है जो मेरी अभी अभी सहायता कर सके।"

"तुम मुझको अपनी परेशानी बताओ तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।"

सो उस कुलीन आदमी ने उसको सब कुछ बता दिया।

"अरे बस इतना ही। तुम सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो और सोच लो कि तुमको इस बात का सबूत मिल गया।"

उस रात बहुत ज़ोर की बारिश हुई और बिजली चमकी और बादल गरजे। वह बुढ़िया डौन जियूसैप के घर के सामने वाले दरवाजे के सहारे लग कर खड़ी हो गयी।

वह ठंड से काँप रही थी और बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी। उसके रोने की आवाज सुन कर घर की मालकिन यानी डौन जियूसैप की बहिन ने अपनी नौकरानी से कहा — "बेचारी बुढ़िया, उसको घर के अन्दर ले आओ।"

सो घर का दरवाजा खुला और वह बुढ़िया घर के अन्दर घुसी। "ओह मैं तो ठंड की वजह से जमी जा रही हूँ।"

मालकिन ने उसको आग के पास बिठाया और उसको खाना खिलाया। उस चालाक बुढ़िया ने यह सब देख लिया कि घर की मालकिन कहाँ सोती थी।

जब वह मालकिन शाम के तूफान से थकी सोने चली गयी और गहरी नींद सो गयी तो वह बुढ़िया उठ कर दबे पाँव उसके सोने के कमरे में गयी और उसकी ओढ़ने की चादर उठा कर उसको सिर से पाँव तक ध्यान से देखा।

उसने देखा कि उसके दाहिने कन्धे पर तीन सुनहरे बाल उगे हुए थे। उसने एक छोटी कैंची से उन बालों को काट लिया और अपने रूमाल में बाँध लिया। फिर उसने उसको चादर से ढक दिया और अपने बिस्तर पर चली आयी।

कुछ देर बाद वह हिली डुली और फिर से रोना शुरू कर दिया। रोते रोते बोली — "ओह मेरा तो यहाँ कुछ दम सा घुट रहा है मैं बाहर जाना चाहती हूँ।"

मालकिन उठी और अपनी नौकरानी से कहा कि वह उसको बाहर छोड़ दे नहीं तो वे दोनों रात भर नहीं सो पायेंगे।

वह कुलीन आदमी डौन जियूसैप के महल के आगे बेचैनी से तेज़ तेज़ चक्कर काट रहा था। तभी वह बुढ़िया बाहर निकली और

उसको तीन बाल दे कर और अपना इनाम ले कर वहाँ से चली गयी।

अगले दिन वह कुलीन आदमी जहाज में बैठ कर स्पेन वापस चला गया। स्पेन पहुँच कर वह तुरन्त राजा के पास पहुँचा और बोला — "मैजेस्टी, यह है डौन जियूसैप की बहिन की पहचान – उसके दाहिने कन्धे पर उगे तीन सुनहरे बाल।"

डौन जियूसैप अपना चेहरा अपने हाथों से ढकते हुए बोला — "यह तो मेरे लिये बहुत मुसीबत हो गयी।"

राजा डौन जियूसैप से बोला — "अब मैं तुमको अपनी सफाई देने के लिये एक महीने का समय देता हूँ नहीं तो मेरे चौकीदार मेरा हुक्म बजा लायेंगे।"

चौकीदार आये और उन्होंने डौन जियूसैप को पकड़ कर जेल में डाल दिया। वहाँ उसको खाने के लिये केवल एक डबल रोटी का टुकड़ा और पीने के लिये केवल एक गिलास पानी रोज मिलता था।

पर जेलर ने यह देख कर कि यह कैदी कितना अच्छा आदमी था वह दूसरे कैदियों के खाने में से कुछ खाना निकाल कर उसको दे दिया करता था।

इसमें बस अब सबसे ज्यादा परेशानी डौन जियूसैप को यह थी कि वह अपनी बहिन को एक लाइन भी नहीं लिख सकता था।

क्योंकि जेलर उसके ऊपर मेहरबान था इसलिये एक दिन उसने जेलर से एक प्रार्थना की — "क्या तुम मुझे मेरी बहिन को एक

छोटी सी चिट्ठी लिखने दोगे? फिर चाहो तो तुम ही उसको डाकखाने में डाल देना।"

जेलर एक बड़े दिल वाला आदमी था सो उसने उसको इजाज़त दे दी। डौन जियूसैप ने अपनी बहिन को एक चिट्ठी लिखी और उसमें उसने वह सब लिखा जो वहाँ हो रहा था और कैसे वह उसकी वजह से मरने वाला था। जेलर ने उससे वह चिट्ठी ली और डाकखाने में डाल दी।

उधर बहिन ने जब अपने भाई के बारे में अब तक कुछ नहीं सुना था तो वह उसकी चिट्ठी पा कर बहुत खुश हुई और जल्दी से उसे खोल कर पढ़ा।

चिट्ठी पढ़ कर वह रो पड़ी — "ओह मेरा प्यारा छोटा भाई। हमारे ऊपर यह क्या मुसीबत आ पड़ी।" उसने तुरन्त ही सोचना शुरू कर दिया कि वह अपने भाई की कैसे सहायता कर सकती थी।

काफी सोच विचार के बाद उसने अपना घर और अपने घर की सारी चीज़ें बेच दीं और उनसे जितने भी जवाहरात वह खरीद सकती थी खरीद लिये।

उन जवाहरातों को ले कर वह एक सुनार के पास गयी और उससे कहा कि वह उन सारे जवाहरातों से जड़ कर उसके लिये एक जोड़ी जूता बना दे।

फिर उसने एक काली पोशाक खरीदी जिसको शोक के मौके[48] पर पहनते हैं और स्पेन चल दी।

जब वह स्पेन पहुँची तो वहाँ उसने बिगुलों की आवाजें सुनी। उसने देखा कि कुछ सिपाही लोग एक आदमी की आँखों पर पट्टी बाँध कर उसे फाँसी के तख्ते की तरफ ले जा रहे हैं।

अपनी काली पोशाक पहने हुए, एक पैर में मोजा पहने हुए और दूसरे पैर में एक रत्न जड़ा जूता पहने हुए वह उस भीड़ में चिल्लाती हुई घुस गयी — "मैजेस्टी रहम कीजिये, मैजेस्टी रहम कीजिये।"

एक इतनी सुन्दर लड़की को काली शोक वाली पोशाक पहने, एक पैर मे केवल मोजा पहने और दूसरे पैर में केवल एक रत्न जड़ा जूता पहने देख कर भीड़ के लोगों ने उसके लिये अन्दर जाने के लिये जगह छोड़ दी।

राजा ने उसकी बात सुनी। उसने अपने सिपाहियों से कहा कि वह उस लड़की को कुछ न कहें और उसको उसके पास तक आने दें। उसने उस लड़की से पूछा कि क्या बात है। उसको क्या चाहिये।

वह लड़की बोली — "रहम करें और न्याय करें मैजेस्टी, रहम करें और न्याय करें।"

"हम वायदा करते हैं कि हम न्याय करेंगे। बोलो।"

---

[48] In Christians people wear black clothes on the occasion of death ceremony.

लड़की बोली — "मैजेस्टी, आपके राज्य का एक कुलीन आदमी मेरे साथ बात कर के मेरा एक ऐसा जूता जिसमें हीरे जवाहरात जड़े थे चोरी कर के ले गया है।" कहते हुए उसने राजा को अपने पैर में पहना हुआ दूसरा जूता दिखा दिया।

यह देख कर राजा की तो बोलती बन्द हो गयी।

उसने उस कुलीन आदमी की तरफ देखा और उससे पूछा — "तुम इतनी नीच हरकत कैसे कर सके ओ कुलीन आदमी? तुमने तो उससे बातचीत करने के बाद उसका जूता ही चुरा लिया और अब तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मेरे सामने खड़े हुए हो?"

वह कुलीन आदमी तो अब जाल में फँस चुका था। उसने तुरन्त जवाब दिया — "पर मैजेस्टी, इस लड़की को तो मैंने कभी देखा ही नहीं।"

लड़की बोली — "इसका क्या मतलब है कि तुमने मुझे कभी देखा ही नहीं है। तुम जो कुछ कह रहे हो सोच समझ कर कहो।"

वह कुलीन आदमी बोला — "मैं कसम खाता हूँ मैंने इस लड़की को पहले कभी नहीं देखा।"

लड़की फिर बोली — "अगर ऐसा है तो तुमने पहले यह क्यों कहा था कि तुमने मुझसे बातचीत की है?"

"पर मैंने यह कहा ही कब?"

"यह सब तुमने तब कहा था जब तुमने यह कसम खायी थी कि तुम डौन जियूसैप की बहिन को जानते हो और तुमने उससे बातें की हैं। क्या तुमने वह सब उसको मारने के लिये नहीं कहा था?"

उसके बाद उसने राजा को बताया कि वह डौन जियूसैप की बहिन थी।

उस कुलीन आदमी को अपना जुर्म कुबूल करना ही पड़ा। बहिन को बेकुसूर देख कर राजा ने डौन जियूसैप को छोड़ दिया और उसे अपने पास बिठा लिया।

और उसके बदले उस कुलीन आदमी की आँखों पर पट्टी बाँध कर उसको फाँसी के तख्ते की तरफ ले जाया गया। दोनों भाई बहिन आपस में गले मिले। उनके खुशी के आँसू निकल आये।

राजा ने हुक्म दिया — "सिर काट दो इस कुलीन आदमी का।" और उस कुलीन आदमी का सिर वहीं उसी समय काट दिया गया।

राजा उन भाई बहिन को साथ ले कर महल लौटा और बहिन की सुन्दरता को देख कर उसने उससे शादी कर ली।

10 दो बेटियाँ[49]

यह लोक कथा हमने उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक स्त्री अपनी दो बेटियों के साथ रहती थी। उसकी दोनों बेटियाँ बहुत सुन्दर और होशियार थीं और उनकी माँ को उन पर पूरा विश्वास था कि जब वे बड़ी होंगी तब उनको अपना पति ढूँढने कोई परेशानी नहीं होगी।

जब उसकी बड़ी वाली लड़की सोलह साल की हुई तो उसने कहा — “मेरी बच्चों, हम लोगों को यहाँ रहते हुए कई साल हो गये। हम लोग यहाँ बहुत अच्छे तरीके से रहे। यहाँ के हमारे दोस्तों, मक्का, बीन्स और काशीफल सबको धन्यवाद।

पर बहुत दिनों से हम लोगों ने माँस नहीं खाया है। तुम लोग भी अब बड़ी हो गयी हो और अपने लिये कोई अच्छा पति चुन सकती हो जो अच्छा शिकारी हो और हम लोगों की देखभाल कर सके।

मैं केवल एक आदमी को जानती हूँ। वह एक स्त्री का बेटा है जो “बड़ी जमीन” कहलाती है। वे लोग यहाँ से एक दिन के सफर की दूरी पर एक लम्बे घर में रहते हैं।”

---

[49] Two Daughters – a folktale from Native Americans, an Iroquois folktale. Adapted from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/The-Two-Daughters-Iroquois.html

"यह आदमी कैसा है माँ?" उसकी बड़ी बेटी ने पूछा।

माँ बोली — "तुम उसको जरूर पसन्द करोगी। वह देखने में सुन्दर है, तन्दुरुस्त है और बहुत अच्छा शिकारी है। पर इसके लिये अब हमको शादी की रोटी[50] बनानी शुरू कर देनी चाहिये जिसको तुम यहाँ से जाते समय ले जाओगी।"

दोनों लड़कियाँ अपनी माँ के साथ काम में लग गयीं। उन्होंने मक्का छीली, फिर उसको कूट कर उसकी रोटी बनायी। इस काम में उनको काफी समय लग गया पर जब उनकी रोटी बन गयी तो उन्होंने देखा कि उस आटे से चौबीस केक बनीं। उन्होंने उन सबको एक टोकरी में रख लिया।

माँ ने फिर अपनी बड़ी बेटी का चेहरा सजाया और उसके लम्बे काले बालों में कंघी करती हुई बोली — "सुनो, मेरी बात ध्यान से सुनो। अगर कोई तुमको कोई रास्ते में मिले तो उससे बात नहीं करना।

और अगर उस "बड़ी जमीन" के घर तक पहुँचते पहुँचते तुमको रात हो जाये तो भी तुम किसी और के घर नहीं जाना, वहीं कहीं जंगल में ही सो जाना।"

---

[50] Marriage Bread – it was the custom of American Indian people that when the girl's mother is ready to marry her daughter to some boy, she would ask her daughter to take marriage bread to her would be husband.

बड़ी लड़की बोली — “मैं समझ गयी माँ।” पर उसके विचार तो कहीं दूर उस बड़ी जमीन के ख्यालों में खोये हुए थे जिसके बेटे से उसकी शादी होने वाली थी।

उसने अपनी वह केक वाली टोकरी उठा ली और उसकी रस्सी अपने सिर से ठीक से बाँध ली ताकि उसके सुन्दर कंघी किये गये बाल खराब न हों। उसके बाद दोनों बहिनें जंगल के तंग रास्ते पर उस बड़ी जमीन के घर की तरफ चल पड़ीं।

कुछ समय चलने के बाद छोटी बहिन ने अपने पीछे किसी के चलने की आहट सुनी। उसने अपनी बड़ी बहिन से पूछा — “यह कौन है?”

बड़ी बहिन ने कहा — “ओह, यह तो पाइन[51] के पेड़ों से आती हवा की आवाज है।” और दोनों बहिनें चलती रहीं।

जल्दी ही तीसरा प्रहर हो गया और सूरज भी दूसरी तरफ नीचे की तरफ ढलने लगा जहाँ जमीन और आसमान मिलते हैं।

छोटी बहिन को यह पक्की तरह से लग रहा था कि उसने अपने पीछे किसी के बहुत ही धीमे कदमों की आहट सुनी थी सो उसने फिर अपनी बड़ी बहिन से पूछा — “यह क्या आवाज है जो मुझे सुनायी दे रही है?”

[51] Pine trees – they are very tall trees. See a picture of pine forest above.

बड़ी बहिन ने फिर यह कह कर टाल दिया कि यह किसी चिड़िया की आवाज है।" और वे फिर अपने रास्ते पर चल दीं।

पर छोटी बहिन को इन जवाबों से सन्तोष नहीं हुआ। वह फिर भी ध्यान से सुनती रही। अब उसको उन कदमों की आहट अपने आगे से आ रही थी। कभी कभी उसको ऐसा लगता कि कि उसने रास्ते के बराबर की झाड़ियों में किसी बूढ़े आदमी को देखा है।

कुछ देर में वे दोनों एक छोटी सी खुली जगह में आ गयीं जहाँ उन्होंने एक बूढ़े आदमी को तीर कमान लिये हुए देखा। वह एक ऊँचे पेड़ की तरफ देख रहा था।

उसने उस पेड़ की तरफ इशारा करते हुए उन लड़कियों से कहा — "ज़रा इधर तो आओ। मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है। मैं उस पेड़ पर बैठी एक गिलहरी को मारने की कोशिश कर रहा हूँ पर मुझे ज़रा कम दिखायी देता है सो मुझे डर है कि मेरा तीर खो जायेगा।"

छोटी बहिन बोली — "तुम्हें याद है माँ ने क्या कहा था? हम लोगों को रास्ते में किसी भी आदमी से बात नहीं करनी चाहिये।" पर बड़ी बहिन ने उसकी बात नहीं सुनी और बोली — "यह बूढ़ा आदमी तो खुशमिजाज लगता है। हमको इसकी बात सुन लेनी चाहिये।"

सो वे उसके पास चल दीं। उसने कहा — "तुम अपनी टोकरी नीचे रख दो और मेरे तीर की तरफ देखो। अगर मेरा तीर उस गिलहरी पर न लगे तो तुम ज़रा मेरा तीर उठा कर ले आना।"

कह कर उसने अपनी कमान खींची और एक तीर उस पेड़ की चोटी की तरफ छोड़ दिया। वह तीर उड़ता हुआ उस पेड़ से बहुत दूर जंगल में जा कर गिरा।

दोनों बहिनें उस तीर को लाने के लिये जंगल की तरफ दौड़ीं। पर जब वे वापस आयी तो उन्होंने देखा कि वह बूढ़ा आदमी तो वहाँ से गायब हो चुका था और साथ में उनकी वह शादी वाली केक वाली टोकरी भी वहाँ नहीं थी।

छोटी बहिन बोली — "अब हमको घर वापस चलना चाहिये क्योंकि हमने माँ का कहना नहीं माना।" सो वे दोनों लडकियाँ घर वापस चलीं गयीं और उन्होंने अपनी माँ को बताया कि उनके साथ क्या हुआ था।

वह बोली — "आह, तुम लोग मुझको प्यार नहीं करती हो नहीं तो तुम मेरी बात नहीं टालतीं।" उस रात उसने इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कहा।

अगले दिन उसने कहा — "हम फिर से शादी की रोटी बनायेंगे पर इस बार ओ मेरी छोटी बेटी तुम अपना पति ढूँढोगी।" सो माँ और बेटियों ने मिल कर फिर से बहुत सारी रोटी बनायीं और इस बार वह रोटी वाली टोकरी छोटी वाली बेटी को दी गयी।

एक बार फिर दोनों बहिनें अपने सफर पर निकल पड़ीं। इस बार फिर उस छोटी बेटी को लगा कि उसको किसी के कदमों की आहट सुनायी पड़ी है पर उसने कुछ कहा नहीं वह बस अपनी माँ के शब्द याद करके चलती रही।

पहले की तरह दिन के तीसरे पहर में करीब करीब उसी समय वे दोनों फिर से उसी खुली जगह में आयीं जहाँ पहले दिन उस बूढ़े आदमी ने उनके साथ चाल खेली थी। वहाँ एक बूढ़ा आदमी एक लकड़ी के तने पर बैठा हुआ था।

वह उनसे बोला — "मुझे यह देख कर खुशी है कि तुम लोग ठीक हो। तुम कहाँ जा रही हो?"

छोटी बहिन तो कुछ नहीं बोली पर बड़ी बहिन बड़े तपाक से बोली — "हम लोग "बड़ी जमीन" के बेटे के लम्बे घर जा रहे हैं। मेरी छोटी बहिन उस "बड़ी जमीन" के बेटे से शादी करना चाहती है।"

बूढ़ा आदमी बोला — "अच्छा हुआ कि तुम्हारी मुलाकात मुझ से हो गयी वरना तुम लोग भटक जातीं। तुम लोग गलत दिशा में जा रही हो। तुमको अगर "बड़ी जमीन" के घर जाना है तो तुमको उस जंगल में से हो कर जाना चाहिये।"

छोटी बहिन को उस बूढ़े की बात पर विश्वास नहीं था पर बड़ी बहिन ने नहीं सुना। वह बोली — "यह बूढ़ा आदमी हमारी सहायता

करना चाह रहा है। हमको वैसा ही करना चाहिये जैसा कि यह कह रहा है।" सो वे दोनों उसी के बताये रास्ते पर चल दीं।

जैसे ही वे दोनों वहाँ से चलीं गयीं वह बूढ़ा अपने घर लौटा जो उस रास्ते के आखीर में ही था जो उसने उन दोनों लड़कियों को बताया था।

आ कर वह अपनी पत्नी से बोला — "जल्दी करो। तुम अपने चेहरे पर राख मल लो और आग के दूसरी तरफ बैठ जाओ। तुम अपने आपको मेरी माँ दिखाना। दो लड़कियाँ शादी वाली रोटी ले कर आ रहीं हैं और वह शादी वाली रोटी मुझे उनसे लेनी है।"

बूढ़े ने खुद भी अपने कपड़े बदले और अपना चेहरा ऐसा रंग लिया कि वह एक जवान और सुन्दर लड़का दिखायी देने लगा। फिर वह अपने घर के बाहर जा कर बैठ गया।

जल्दी ही उसको उन दोनों लड़कियों के आने की आहट सुनायी देने लगी। वह बोला — "आओ आओ, "बड़ी जमीन" और उसके सुन्दर बेटे के लम्बे घर में तुम्हारा स्वागत है।"

वे दोनों लडकियाँ उसके घर आ गयीं तो उनको लगा कि शायद यही वह सुन्दर लड़का है जिसकी तलाश में वे निकलीं थीं। वे उसके बराबर में जा कर बैठ गयीं और शादी की रोटी की टोकरी भी वहीं रख दी।

उसी समय इत्तफाक से घर के दरवाजे पर कोई आ गया और उसने ज़ोर से पुकारा — "ओ बूढ़े, तुमको लम्बे घर में बुलाया है।"

वह बूढ़ा चिल्लाया — "चले जाओ यहाँ से।"

फिर वह उन लड़कियों से बोला — "कोई गलत घर में आ गया। यहाँ कोई बूढ़ा आदमी नहीं रहता।"

उस आदमी को गये हुए अभी ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि वही आवाज फिर से सुनायी पड़ी — "बाबा तुमको बुलाया है।"

वह बूढ़ा फिर चिल्लाया — "चले जाओ यहाँ से।" कह कर वह फिर उन लड़कियों से बोला — "आह यह बेचारा लड़का। इसका पिता कल मर गया था यह बेचारा आज भी सारे शहर में उस को पुकारता हुआ घूम रहा है।"

कुछ देर बाद वही आवाज फिर सुनायी दी — "बाबा बाबा, उन्होंने मुझे तुमको लिवा लाने के लिये भेजा है। चलो।"

वह बूढ़ा उन लड़कियों की तरफ देख कर मुस्कुराया और बोला — "लगता है कि मुझे जा कर इस लड़के को बताना ही पड़ेगा कि मैं कौन हूँ। काफी देर हो गयी है तुम लोग यहाँ लेट कर आराम करो मैं जल्दी ही वापस आता हूँ।"

कह कर वह बूढ़ा घर से बाहर चला गया। छोटी लड़की को लगा कि उसने किसी को डाँटते हुए और मारते हुए सुना। उधर वह बुढ़िया भी जल्दी ही सो गयी।

छोटी लड़की अपनी बड़ी बहिन से बोली — "बहिन, मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है। हम लोगों को यहाँ नहीं ठहरना चाहिये।

मुझे यकीन है कि यह उसी बूढ़े का घर है जो हमको रास्ते में मिला था। हमको अपनी माँ की बात माननी चाहिये।"

कह कर वह वहाँ से खिसक गयी और बाहर से दो सड़े गले लकड़ी के लट्ठे ले आयी और अपनी बड़ी बहिन से बोली — "हम ये दोनों लट्ठे कम्बल में बाँध कर यहाँ रख देते हैं ताकि इस बुढ़िया को यह पता न लगे कि हम लोग यहाँ से चले गये हैं।"

ऐसा कर के जैसे ही वे दोनों घर से बाहर निकलीं उन्होंने गाँव के दूसरी तरफ से आती हुई नाचने की आवाज सुनी। उस आवाज का पीछा करते हुए वे अपनी शादी वाली रोटी की टोकरी उठाये हुए उस लम्बे घर आ पहुँचीं।

उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वही बूढ़ा जिसके घर से वे अभी चलीं आ रही थीं वहाँ सबके बीच में खड़ा हो कर नाच रहा था। सब लोग उसके नाच को देख रहे थे।

आग के दूसरी तरफ एक बहुत ही सुन्दर आदमी अपनी माँ के साथ बैठा हुआ था।

छोटी लड़की तुरन्त चिल्लायी — "आहा, यह है वह आदमी जिसको हम ढूँढ रहे हैं।" अपना मुँह कम्बल से ढक कर वे दोनों बहिनें उस घर में घुस गयीं और "बड़ी जमीन" और उसके बेटे के पास बैठने के लिये चल दीं।

उन्होंने शादी की वह रोटी की टोकरी "बड़ी जमीन" के सामने रख दी। उस टोकरी को देख कर बड़ी जमीन बहुत खुश हुई और

छोटी बेटी से बोली — "तुम मेरे बेटे के लिये बहुत ही अच्छी पत्नी बनोगी।"

जब नाच खत्म हो गया तो वे दोनों लड़कियाँ भी "बड़ी जमीन" और उसके लडके के साथ चल दीं। वे दोनों अभी भी कम्बल में लिपटी हुई थीं इसलिये वह बूढ़ा उनको पहचान नहीं पाया।

वह बूढ़ा अपनी चतुराई पर खुश होते हुए अपने घर लौटा और अपने कम्बल के पास बैठा तो उसके कुछ चुभा। उसने सोचा कि वह उनमें एक लड़की होगी। यह सोच कर वह मुस्कुराया।

वह मन ही मन बोला थोड़ा सा इन्तजार करो मैं भी अभी आता हूँ। उसने अपने कपड़े उतारे और उस कम्बल में घुस गया। पर वहाँ तो सड़े गले चींटियों से भरे हुए दो लकड़ी के लट्ठे पड़े थे।

अगले दिन वे दोनों लड़कियाँ "बड़ी जमीन" और उसके बेटे के साथ अपने घर लौटीं। वहाँ "बड़ी जमीन" के बेटे ने शिकार किया और बहुत सारा माँस अपनी नयी पत्नी के परिवार के लिये ले कर आया।

वह छोटी लड़की अपनी चतुराई से अपनी शादी ठीक से कर पायी। फिर वे दोनों बहुत दिनों तक सुख से रहे।

11 चालाक पत्नी[52]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के इथियोपिया देश की लोक कथाओं से चुनी है। यह एक बड़ी दिलचस्प और अक्लमन्दी की कथा है।

इथियोपिया के एक गाँव में एक पति पत्नी रहते थे। वे अपना काम बड़ी मेहनत और ईमानदारी के साथ करते थे परन्तु कभी किसी गरीब को दान में एक पैसा भी नहीं देते थे। उनके कोई बच्चा भी नहीं था सो उनका खर्चा भी बहुत कम था। उनका काफी पैसा बच जाया करता था।

एक दिन पति बाजार गया तो उसने एक गाय देखी। गाय तन्दुरुस्त और बड़ी थी सो उसने उसे खरीद लिया। वह गाय उसने 50 डालर की खरीदी।

बाद में उसने अपनी पत्नी के लिये एक डालर की एक मुर्गी भी खरीदी और घर वापस आ गया। पत्नी इन दोनों को देख कर बहुत खुश थी क्योंकि गाय खूब दूध देती थी और मुर्गी रोज अंडे।

एक रविवार को पति अपने चर्च के पादरी से मिलने गया। और बातों के साथ साथ उन दोनों ने उस दूध के बारे में भी बात की जो उनकी गाय देती थी और उन अंडों के बारे में भी बात की जो उनकी मुर्गी देती थी।

---

52 Cunning Wife - a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, East Africa

पादरी ने कहा — “तुम अमीर तो हो पर बहुत ही मतलबी हो क्योंकि तुमने गाँव के किसी गरीब आदमी की कभी कोई सहायता नहीं की। तुमको उनकी मदद जरूर करनी चाहिये। या तो तुमको उन लोगों को कुछ दूध और अंडे देने चाहिये या फिर कुछ पैसे।”

पादरी की यह बात पति की समझ में आ गयी। वह घर आ कर पत्नी से बोला कि वह गाय और मुर्गी को बाजार में ले जा कर बेच दे। उसने साथ में उसको यह भी कहा कि वह गाय को बेच कर उसका पैसा गरीबों में बाँट दे और मुर्गी को बेच कर उसका पैसा ला कर उसको दे दे।

पत्नी को पति की यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं आयी परन्तु वह पति के कहने को टाल तो नहीं सकती थी न। वह सोचती रही कि उसे क्या करना चाहिये जिससे साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। आखिर उसको एक तरकीब सूझ ही गयी।

अगले दिन वह गाय और मुर्गी ले कर बाजार गयी और उनको बाजार में बेचने बैठ गयी। एक आदमी गाय खरीदना चाहता था सो उसने उस औरत से पूछा कि गाय कितने की है। औरत बोली “एक डालर की।”

उस आदमी को यह सुन कर बहुत ही आश्चर्य हुआ कि ऐसा कैसे है। उसने कहा — “मुझे यहाँ रहते हुए कितने साल हो गये हैं पर मैंने ऐसा कभी नहीं सुना कि किसी गाय का दाम एक डालर हो। क्या यह गाय दूध देती है?”

वह औरत बोली — "हॉ हॉ, बिल्कुल देती है, क्यों नहीं। परन्तु एक शर्त है कि अगर तुम यह गाय खरीदोगे तो तुमको साथ में यह मुर्गी भी खरीदनी पड़ेगी।"

आदमी ने पूछा — "और मुर्गी की कीमत क्या है?"

औरत ने जवाब दिया — "पचास डालर।"

उस आदमी को यह सब झमेला सा लग रहा था परन्तु इक्यावन डालर में गाय और मुर्गी का सौदा बुरा नहीं था सो उसने इक्यावन डालर दे कर गाय और मुर्गी दोनों खरीद लीं। औरत ने खुशी खुशी इक्यावन डालर अपनी जेब के हवाले किये और सीधी चर्च गयी।

उसको वहॉ एक गरीब औरत बैठी हुई दिखायी दी। उसने उसको एक डालर दान में दिया और घर आ कर पचास डालर अपने पति के हाथ में थमा दिये।

पति को इतने सारे डालर देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा — "क्या तुमने गाय को बेच कर उसके पैसे दान में नहीं दिये या तुमको एक मुर्गी के इतने सारे पैसे मिल गये?"

पत्नी बोली — "मैंने दोनों काम कर दिये। गाय को बेच कर उससे मिले पैसे मैंने दान में दे दिये और मुर्गी के मुझे इतने सारे पैसे मिल गये वह मैं घर ले आयी।"

पति की अभी भी कुछ समझ में नहीं आया तो पत्नी ने उसे सब साफ साफ बता दिया कि वह गाय एक डालर की बेच कर उसने

वह एक डालर दान में दे दिया और मुर्गी को पचास डालर में बेच कर वह पचास डालर घर ले आयी।

इस तरह इस चालाक पत्नी ने अपने पति का कहना भी माना और पैसे भी बचाये।

12 चॉग कू लाओ का इम्तिहान[53]

यह एक दंत कथा है जो एशिया महाद्वीप के चीन देश की दंत कथाओं से ली गयी है पर यह वहॉ लोक कथाओं के रूप में कही सुनी जाती है।

चॉग कू लाओ[54] एक बड़ा अक्लमन्द बूढ़ा था। उसका दिमाग बहुत तेज़ सोचता था। उसके तीन बेटे थे पर वे तीनों बहुत ही बेवकूफ और आलसी थे।

उसके दो बड़े बेटों की शादी हो चुकी थी और उनकी पत्नियॉ भी इत्तफाक से उतनी ही बेवकूफ थीं जितने बेवकूफ उसके बेटे थे।

उसको मालूम था कि उसके बेटे अपनी बेवकूफी की वजह से अपनी देखभाल तो कर नहीं सकते थे तो फिर वे घर की देखभाल कैसे करेंगे यही सोच सोच कर वह बहुत चिन्तित रहता था कि उसके मरने के बाद उन सबका क्या होगा।

यह सब सोच कर उसने तय किया कि अपने तीसरे कम अक्लमन्द बेटे के लिये वह एक बहुत अक्लमन्द बहू देख कर लायेगा।

---

[53] Chang Ku Lao's Test – a folktale from China, Asia. Adapted from the book:
"Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Its English version may be read at
https://www.scribd.com/doc/57934877/Chinese-Myths-and-Legends

[54] Chang Ku Lao – name of the father of three sons

उसने ऐसी अक्लमन्द लड़की की बहुत तलाश की पर उसके लिये उसको कोई ऐसी ठीक सी लड़की ही नहीं मिल पा रही थी।

अपने परिवार की भलाई के लिये फिर उसने एक तरकीब सोची और उसके अनुसार उसने पहले अपनी दोनों बड़ी बहुओं का इम्तिहान लेने का फैसला किया। उसने सोचा कि शायद इस तरह से वह उनमें अक्लमन्दी की कोई चिनगारी ढूँढ लेगा।

सो गर्मी के मौसम की एक सुबह को उसने अपनी दोनों बहुओं को बुलाया और उनसे कहा — "काफी दिन हो गये है तुम लोगों को अपने माता पिता के घर गये हुए। और मैं समझता हूँ कि तुम लोगों को उनकी याद भी आ रही होगी। है न?"

दोनों लड़कियों ने अपना सिर हॉ में हिलाया और उस बूढ़े ने अपनी बात जारी रखी — "तो तुम लोग जल्दी से अपना अपना सामान तैयार कर लो और अपने माता पिता के घर चली जाओ। पर जब मैं तुमको वापस आने के लिये कहूँ तो तुम लोग तभी चली आना।"

"जी पिता जी।"

वह फिर बोला — "बड़ी बहू, तुम तीन पॉच दिन रह सकती हो और छोटी बहू तुम सात आठ दिन रह सकती हो।" यह सुन कर दोनों लड़कियॉ इतनी खुश हुईं कि उन्होंने बिना सोचे समझे कि उनके ससुर ने उनसे क्या कहा था हॉ में बहुत ज़ोर से अपना सिर हिलाया और कमरे में से बाहर जाने लगीं।

जैसे ही वह कमरे से जाने लगीं तो चॉग कू लाओ ने उनसे एक बात और कही — "मैं चाहता हूँ कि तुम लोग जब वापस आओ तो मेरे लिये कोई भेंट जरूर ले कर आना। तुममें से एक मेरे लिये कागज में लिपटी आग ले कर आना और दूसरी मेरे लिये बिना टॉगों का मुर्गा।"

अब तक तो वे दोनों लड़कियॉ जाने के लिये इतनी ज़्यादा उतावली हो गयी थीं कि वे अपने ससुर की कही भेंटों पर भी राजी हो गयीं। हालॉकि उन्होंने उनके बारे में यह विचार भी नहीं किया कि वे भेंटें क्या हैं और वे उन्हें कैसे ले कर आयेंगीं।

केवल जब वे लड़कियॉ गॉव के बाहर सड़क पर एक दूसरे से विदा ले कर जा रही थीं तब उन्होंने एक दूसरे से पूछा कि वे किस बात पर अपने ससुर से हॉ कर के आयी हैं।

बड़ी बहू बोली — "मैं अपने मायके से तीन पॉच दिन में कागज में लिपटी आग साथ ले कर वापस लौटने के लिये कही गयी हूॅ। पर मुझे तो यह बिल्कुल भी पता नहीं कि इस बात का क्या मतलब है।"

छोटी बहू बोली — "मेरा भी यही हाल है। मुझे भी नहीं पता कि ससुर जी मुझसे क्या चाहते हैं। और अगर मैं ठीक समय पर ठीक भेंट के साथ वापस न आयी तो वह समझेंगे कि मैं बेवकूफ हूॅ।"

सो वे दोनों लड़कियाँ वहीं बैठ गयीं और अपनी अपनी गुत्थियाँ सुलझाने लगीं और तब तक उन गुत्थियों को सुलझाने की कोशिश करती रहीं जब तक कि उनका सिर दर्द नहीं करने लगा और फिर भी उनको उनका जवाब नहीं मिला।

यह सब देख कर छोटी बहू तो रोने लगी और थोड़ी देर बाद बड़ी बहू भी अपने आँसू नहीं रोक सकी।

दोनों बैठी वहाँ रो रहीं थीं कि वहाँ से एक सूअर मारने वाला कसाई और उसकी बेटी फुंग कू[55] गुजरे। उन दोनों को उन भोली भाली लड़कियों को रोते देख कर उन पर दया आ गयी तो फुंग कू उनके पास गयी।

उसने उनसे पूछा — "क्या बात है, तुम लोग क्यों रो रही हो क्या तुम लोगों को किसी ने कुछ कहा है?"

बड़ी बहू बोली — "नहीं ऐसा तो नहीं है पर बात इससे भी कुछ ज़्यादा ही बुरी है। और सबसे बुरी बात तो यह है कि हम जब तक अपनी गुत्थी का हल न पा लें तब तक हम घर भी नहीं जा सकते।"

और उसके बाद उन दोनों लड़कियों ने अपनी अपनी कहानी उस लड़की को सुना दी।

फुंग कू ने उनको तसल्ली देते हुए कहा — "तुम लोग चुप हो जाओ। रोने से गुत्थी का हल नहीं निकलेगा इसलिये रोओ नहीं।

---

[55] Fung Ku – name of the butcher's daughter

तुम्हारी गुत्थियों का हल बहुत आसान है। अगर हम तीन और पाँच को गुणा करें तो जवाब आता है पन्द्रह, सो तुम अपने मायके में पन्द्रह दिन के लिये रह सकती हो।

और अगर हम सात और आठ को जोड़ें तो भी जवाब आता है पन्द्रह। सो तुम भी पन्द्रह दिन के लिये अपने मायके में रह सकती हो।

इसका मतलब यह है कि तुम दोनों पन्द्रह पन्द्रह दिन अपने अपने मायके में रह सकती हो।

और भेंटों की भी तुम चिन्ता न करो। कागज में लिपटी आग लालटेन को कहते हैं और बिना टाँग का मुर्गा एक ऐसा खाना है जो बीन के दही का बनता है। तुम समझ गयीं न?"

दोनों लड़कियाँ फुंग कू की बात सुन कर बहुत ही खुश हो गयीं और उसको बहुत बहुत धन्यवाद दे कर वे अपने अपने रास्ते चली गयीं।

पन्द्रह दिन बाद जैसा कि चाँग कू लाओ ने कहा था उसके कहे अनुसार उसकी भेंटों के साथ वे लड़कियाँ घर लौटीं। चाँग कू लाओ उनकी तुरत बुद्धि से बड़ा खुश हुआ। उसको लगा कि उसने अपनी बहुओं को बेवकूफ समझ कर गलती की थी।

पर उन दोनों लड़कियों से सच छिपाया नहीं गया, बेवकूफ थीं न वे? और उन्होंने रास्ते में एक कसाई और उसकी लड़की के

मिलने की बात अपने ससुर को बता दी। और यह भी बता दिया कि यह सब उसी लड़की ने उनको बताया था।

चॉग कू लाओ बोला — "अगर तुम लोग सच बोल रही हो तो इसका मतलब यह है कि वह लड़की बहुत अक्लमन्द लड़की होगी। और इसका मतलब यह भी है कि वह लड़की मेरे तीसरे बेटे की बहू बनने के लायक है।"

बस अगले दिन सुबह को चॉग कू लाओ उस कसाई से मिलने चल दिया पर जब तक वह उसकी दूकान पर पहुँचा तब तक वह कसाई तो बाजार जा चुका था सो उसकी बेटी फुंग कू दूकान पर अकेली ही थी।

जब उस कसाई की बेटी ने चॉग कू लाओ को दूकान पर देखा तो उसने उससे बड़ी इज्जत से पूछा — "नमस्ते सर, मैं आपके लिये क्या कर सकती हूँ?"

चॉग कू लाओ बोला — "मुझे एक पौंड खाल ऐसी चाहिये जो दूसरी खाल के सहारे से लगी हो और एक पौंड खाल ऐसी चाहिये जो दूसरी खाल को मार रही हो।"

यह सुनते ही फुंग कू तुरन्त ही वहाँ से दूकान के पीछे अँधेरे में गायब हो गयी। पर तुरन्त ही वह वापस भी आ गयी और उसने कमल के पत्तों में लिपटे दो पैकेट उसको ला कर दे दिये।

चॉग कू लाओ ने एक पैकेट खोला तो उनमें से एक पैकेट में सूअर के कान थे और दूसरा पैकेट खोला तो उसमें सूअर की पूँछ थी।

एक बार फिर से उस लड़की ने अपनी अक्लमन्दी से चॉग कू लाओ की पहेली सुलझा दी थी। उसने तुरन्त ही अपना इरादा बना लिया था कि यही वह लड़की थी जिससे वह अपने तीसरे बेटे की शादी करेगा।

चॉग कू लाओ वह दोनों पैकेट ले कर घर चला गया और घर जा कर उसने देवताओं का पूजन किया। फिर उसने शादी करवाने वाले को बुलाया। उससे इस शादी की इजाज़त लेने के बाद गॉव के सरदार से शादी की शर्तें लिखवायी गयीं और उसने उस लड़की की शादी अपने तीसरे बेटे से कर दी।

शादी की बहुत बढ़िया दावत दी गयी। शादी के बाद फुंग कू एक बहुत ही अच्छी पत्नी साबित हुई। उसकी अक्लमन्दी से घर में सब लोग मेल से रहे।

13 सौ जानवर[56]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के केन्या और आसपास के देशों में जहाँ स्वाहिली जाति के लोग रहते हैं वहाँ कही सुनी जाती है। स्वाहिली जाति के लोग पूर्वी अफ्रीका के कई देशों में रहते हैं – केन्या, तनज़ानिया, मोज़ाम्बीक, यूगान्डा। इसलिये ये कथाऐं किसी एक खास देश की नहीं है बल्कि स्वाहिली जाति के लोगों की है।

एक बार की बात है कि पाटा नाम के गाँव में एक आदमी अपनी पत्नी और अपने एकलौते बेटे के साथ रहता था। उनके पास अपने पहनने के कपड़े और एक टूटी सी झोंपड़ी जिसमें वे रहते थे के अलावा सौ जानवर थे।

उनका बेटा जब छोटा था तभी उसके पिता चल बसे। उनके जाने बाद अब उसी को जानवरों की देखभाल करनी पड़ती थी। उसकी माँ घर में रह कर खाना बनाती थी।

पर कुछ साल बाद उस लड़के की माँ भी चल बसी और अब वह लड़का अपने माता पिता के छोड़े हुए सौ जानवरों के साथ अकेला रह गया।

---

[56] One Hundred Cattle – a folktale from Swahili people, Eastern Africa.
Adapted from the book “African Folktales” by A Ceni. English Edition in 1998. This book is available in Hindi from hindifolktales@gmail.com
Swahili people and language span several of Eastern African states – Kenya, Tanzania, Mozambique and Uganda. These people are mostly Muslims.

और एक साल बीत गया तो उसको लगा कि अब उसको शादी कर लेनी चाहिये।

वह अपनी जाति में अपने दोस्तों के पास गया और उनको अपने इस फैसले के बारे में बताया। वे सब उसके इस फैसले से बिल्कुल राजी थे कि इस समय उसको एक पत्नी की सख्त जरूरत थी।

उन्होंने कहा — "तुम्हारे लिये इस समय एक पत्नी बहुत ही फायदेमन्द साबित होगी पर तुमको कैसी लड़की चाहिये? तुम किससे शादी करना चाहते हो?"

उस नौजवान ने जवाब दिया — "वह लड़की अपने गाँव से नहीं होनी चाहिये। मुझे एक दूसरे ही तरीके की लड़की चाहिये। क्या मेरे लिये कोई उसको चुनने की जिम्मेदारी लेगा?

मैं अभी छोटा हूँ और मेरे जितनी उम्र वाले के लिये यह ठीक नहीं होगा कि वह खुद अपनी शादी के लिये किसी लड़की का हाथ माँगे। खास कर के जब जबकि वह किसी दूसरे गाँव की हो।"

उसके दोस्तों ने इस बात पर भी हामी भरी और उनमें से उसका एक दोस्त इस काम की जिम्मेदारी लेने के लिये तैयार हो गया। उसने कहा कि वह उसका दूत बन कर जायेगा और उसके लिये लड़की देखेगा।

वह वहाँ से चला गया और कुछ समय बाद लौट आया। उसने उस नौजवान से कहा — "मैंने तुम्हारे लिये पड़ोस के गाँव से एक बहुत ही अच्छी लड़की ढूँढ ली है।"

नौजवान दुलहे ने पूछा — "कौन है वह?"

वह आदमी बोला — "वह एक अमीर आदमी अब्दुल्ला की अकेली बेटी है। अब्दुल्ला के पास छह हजार जानवर हैं।"

इस खबर को सुन कर वह नौजवान को और भी ज़्यादा लगने लगा कि उसको एक पत्नी की जरूरत है। उसने अपने दोस्त से कहा कि वह उस गाँव में जाये ओर शादी की सब बात पक्की कर आये। वह आदमी फिर चला गया।

उसकी बात सुन कर अब्दुल्ला ने कहा — "उस लड़के से कहना कि अपनी बेटी के बदले में मुझे सौ जानवर चाहिये। अगर उसे मेरी बात मंजूर है तो फिर कोई और अड़चन नहीं है।"

आदमी ने आ कर नौजवान को बताया कि उस लड़की के पिता ने क्या कहा था। नौजवान ने इस बारे में काफी देर तक सोचा और बोला — "अगर मैं उसको अपने सौ जानवर दे देता हूँ तो मेरे पास तो कुछ रह ही नहीं जायेगा क्योंकि मेरे पास तो हैं ही कुल सौ जानवर। फिर मैं और मेरी पत्नी कैसे गुजारा करेंगे?"

आदमी ने कहा — "तुम सोच लो और अपना जवाब मुझे बता दो। फिर मैं उसको अब्दुल्ला को बता आऊँगा। मुझे तो अपना काम करना ही है न।"

नौजवान सोचने लगा कि वह इस हालत में क्या करे। वह अपना सिर खुजलाता हुआ इधर से उधर चक्कर काटने लगा।

आखिर उसने फैसला किया और उस आदमी से कहा — "जाओ और उससे जा कर कह दो कि मैं तैयार हूँ। मैं उसको सौ जानवर दे दूँगा जो वह अपनी बेटी के लिये माँग रहा है।"

वह आदमी अब्दुल्ला के पास गया और उन दोनों की मुलाकात का इन्तजाम किया गया।

दुलहे ने अपनी होने वाली दुलहिन को देखा। उसको लड़की बहुत सुन्दर लगी सो उसने उसके पिता से शादी की शर्तें तय की। तीन दिन बाद उसने अपने सौ जानवर अब्दुल्ला को दे दिये और एक महीने बाद उन दोनों की शादी हो गयी।

दुलहिन अपने पति के गाँव में उसके घर में रहने के लिये आ गयी। कुछ हफ्तों तक सब कुछ ठीक चला। घर में खाने की कोई कमी नहीं थी। घर में दूसरी चीज़ों की भी कोई कमी नहीं थी।

पर जल्दी ही घर में खाने का सामान खत्म होने लगा तो वह नौजवान अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये, अब हम लोग गरीब हैं। मेरी पूरी सम्पत्ति तो वही मेरे जानवर थे। मैं गायों को दुहता था और बैलों से खेत जोतता था।

मैंने अपने सारे जानवर तुमको पाने के लिये दे दिये और अब मेरे पास कुछ नहीं है। अब मेरे पास एक ही रास्ता है कि मैं अपने पड़ोसियों के पास जाऊँ और उनके लिये काम करूँ।

मुझे बहुत नीचे और बहुत थकाने वाले काम करने पड़ेंगे पर उस काम करने से जो कुछ मैं कमाऊँगा उससे हमारे पास कम से कम खाने के लिये कुछ तो होगा।"

पत्नी ने उसके आगे अपना हॉ में सिर झुकाया पर वह बोली कुछ नहीं। अब वह नौजवान हर सुबह अपने पड़ोसियों के घर जाता और थोड़े से दूध, एक थैला अनाज या फिर एक छोटे से मॉस के टुकड़े के बदले में उनकी मजदूरी करता।

कभी वह उनकी गायें दुहता, कभी वह उनकी लकड़ी काटता, कभी वह उनकी छत ठीक करता, तो कभी वह उन स्त्रियों के लिये नदी से पानी ले कर आता जो घर में अकेली खाना बनाने के लिये रह जातीं। पर इन सब कामों के लिये वे उसको बहुत कम पैसे देते।

इस बीच गॉव के एक बहुत ही खास आदमी के एक सुन्दर लड़के ने किसी विदेशी लड़की[57] को गॉव में देखा तो वह उसके दिमाग में घुस गयी और वह उससे प्रेम करने लगा।

सो रोज जब उस लड़की का पति काम पर चला जाता तो वह लड़का उसके घर जाता और उसके घर के आस पास घूमता रहता ताकि वह उससे बात कर सके।

[57] Translated for the word “Foreigner”. Here Foreigner does not mean from some other country, but from some other village and from some other tribe.

उस लड़की ने यह दिखाया कि जैसे उसमें कुछ गलत नहीं था पर वह इसके बारे में अपने पति से कुछ नहीं कह सकी। क्योंकि इससे उसको लगा कि इससे उसका पति घर ठहर जाता और जो थोड़ा बहुत काम उसको मिलता था वह भी नहीं मिलता। इससे जो थोड़ी बहुत कमाई होती थी वह भी नहीं होती और उनको खाना भी नसीब नहीं होता।

उस लड़की की शादी हुए करीब करीब छह महीने बीत गये तो अब्दुल्ला ने सोचा कि वह अपनी बेटी और दामाद[58] को देख कर आये। सो बिना बताये ही वह उनसे मिलने के लिये चल दिया।

जब वह अपने दामाद के घर पहुँचा तो उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया तो आश्चर्य कि उसकी बेटी दरवाजा खोलने आयी।

जब उसने अपने पिता को दरवाजे पर देखा तो सोचा कि "अच्छा है कि मेरा घर ठीक से रखा हुआ है और मैंने भी अपनी आखिरी अच्छी वाली पोशाक पहनी हुई है वरना मेरे पिता मेरे बारे में जाने क्या सोचते।"

अपनी शर्म छिपाते हुए उसने अपने पिता को अन्दर बुलाया और उनको आराम से बिठाया। उसने उनको ताजा फल खाने को दिये। उसका पिता बोला — "सो मेरी बेटी, तुम कैसी हो? क्या तुम अपने पति के साथ खुश हो?"

---

[58] Translated for the "Son-in-Law" – the husband of daughter.

उसने कुछ हिचकिचाते हुए कहा — "जी पिता जी।" पर वह अपना दुख छिपाने पर भी नहीं छिपा सकी सो वह अपने पिता के लिये चाय बनाने के लिये पानी लाने का बहाना कर के वहाँ से चली गयी।

वह अपने कमरे में गयी और जा कर फूट फूट कर रोने लगी। "और अब मैं क्या करूँ? घर में खाने के लिये कुछ भी नहीं है पर मुझे कम से कम अपने पिता को खाना तो खिलाना ही है।"

वह इसका कोई हल सोच ही रही थी कि उसने उस नौजवान लड़के को देखा जो काफी दिनों से खिड़की से उससे बात करने की कोशिश में उसके घर के चक्कर काट रहा था।

उसने कुछ सोचा और अपने आँसू पोंछ लिये। अपने आपको ठीक किया और इस उम्मीद में पीछे वाले दरवाजे से बाहर गयी कि शायद वह उस नौजवान को वहाँ देख सके।

वह उसे वहाँ मिल गया। वह बोला — "मेहरबानी कर के मेरे इस पागलपन को माफ करना पर जबसे मैंने तुम्हें देखा है न तो मुझे नींद आती है न मुझे भूख लगती है।

मेरे पिता बहुत अमीर हैं। तुम इस भिखारी को छोड़ो और मेरे साथ भाग चलो। मैं तुमको बहुत खुश रखूँगा और तुमको रानी बना कर रखूँगा।"

लड़की ने उससे कुछ प्यार की बातें कीं फिर बोली — “यह मेरी गलती थी कि मैंने एक ऐसे आदमी से शादी की जिसके पास अपने खाने के लिये भी कुछ नहीं था।

अगर तुम मुझसे सच्चा प्यार करते हो तो मुझे यहाँ से ले चलो। मैं इस गरीबी में रहते रहते तंग आ गयी हूँ। मैंने बहुत दिनों से पेट भर कर खाना भी नहीं खाया है और कोई नया कपड़ा खरीदने की बात तो छोड़ो।”

वह नौजवान तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया “ओह आखिर मैं अपने काम में सफल हो ही गया।” और उस लड़की से बोला — “तो चलो फिर आज ही चलते हैं। और आज ही क्यों अभी क्यों नहीं।”

लड़की बोली — “थोड़ा रुको। आज ही मेरे पिता मुझसे मिलने के लिये आये हैं और मैं उनसे बहुत दिनों से नहीं मिली हूँ। मुझे अभी उनके लिये अच्छा खाना भी बनाना है।

पर जैसा कि मैंने तुमसे अभी कहा मेरे पास उनके लिये खाना बनाने के लिये कुछ भी नहीं है। तुम ज़रा जा कर खाने के लिये माँस का एक अच्छा सा टुकड़ा ले आओ ताकि मेरी मेज खाली खाली न लगे। उसके बाद मैं तुम्हारे साथ चली चलूँगी।”

उस नौजवान ने खुश होते हुए कहा — “ठीक है। मैं तुम्हारे लिये माँस ले कर अभी आया।”

कुछ मिनटों में ही वह उसके लिये चौथाई गाय ले कर आ गया और उससे बोला — "यह लो और अपना वायदा याद रखना।"

लड़की बोली — "तुम चिन्ता मत करो।" और वह गाय के माँस के उस बड़े टुकड़े को ले कर उसको पकाने के लिये अन्दर चली गयी।

खाना बनाते बनाते शाम के खाने का समय हो गया। उसका पति भी पड़ोसी के लिये कुछ छोटा मोटा काम कर के घर वापस आ गया। जब उसने अपने ससुर को देखा तो वह कुछ घबरा गया। वह उस समय उसको वहाँ देखने की उम्मीद नहीं कर रहा था।

पर उसने अपने आपको किसी तरह सँभाला और यह दिखाते हुए कि सब कुछ ठीक था उसने उनको इज़्ज़त से सलाम किया। फिर दोनों कुछ देर तक बात करते रहे। उसके बाद नौजवान ने उनसे माफी माँगी और अपनी पत्नी को रसोईघर में देखने चला गया।

उसने आश्चर्य से पूछा — "अरे तुम खाना बना रही हो? पर घर में तो कुछ था ही नहीं।"

लड़की हिचकिचाते हुए बोली — "मुझे कुछ माँस मिल गया।"

"मिल गया का क्या मतलब है? किसने दिया तुम्हें यह?"

"देखो अब तुम गुस्सा मत हो। मैंने पड़ोसी से प्रार्थना की कि मेरे पिता यहाँ खाना खाने के लिये आये हैं पर मेरे पास उनको खिलाने के लिये कुछ नहीं है तो उन्होंने मुझे यह माँस दे दिया।"

नौजवान कुछ नहीं बोला। उसका सिर नीचे झुक गया और उसको बहुत शर्म आयी कि अब उसकी यह हालत हो गयी थी कि उसको पड़ोसियों से दान लेना पड़ा। क्या वह इतना गिर गया था?

उसको इतना दुखी देख कर उसकी पत्नी ने उसको तसल्ली देने की कोशिश की — "देखो तुम खुश रहो, इसमें इतना सोचने की कोई बात नहीं है। हम उन्हें इस माँस के बदले में कुछ दे देंगे फिर हम उनके ऐहसान के नीचे नहीं दबे रहेंगे।

पर अब तुम जाओ और पिता जी के पास बैठो। खाना अभी तैयार हुआ जाता है। तुम वहाँ बैठो और मैं खाना लगाती हूँ।"

इस बीच यह देख कर कि वह लड़की अभी तक नहीं आयी वह नया नौजवान उसको देखने के लिये सामने के दरवाजे की तरफ गया ताकि वह उसको बाहर आने के लिये इशारा कर सके।

पर जब वह उसके खुले दरवाजे के सामने इधर उधर घूम रहा था तभी उस लड़की के पति ने उसको देख लिया।

उसने उसको पहचान लिया कि वह तो उनके एक पड़ोसी का बेटा था जो उसको कभी कभी काम देता रहता था। सो उसने उसको सलाम किया और उसको खाने के लिये अन्दर बुला लिया।

वह नया नौजवान उसको मना नहीं कर सका और उसके बुलावे पर अन्दर चला गया। जा कर वह दूसरों के साथ मेज पर बैठ गया। सो तीनों – पिता, पति और वह नौजवान, मिल कर बात करने लगे जैसे सब कुछ सामान्य हो।

कुछ समय बाद माँस मेज पर लाया गया और लड़की उन तीनों को वहाँ एक साथ बैठा देख कर बिना किसी आश्चर्य के मुस्कुरायी और बोली — "ओ बेवकूफ लोगों, खाना तैयार है।"

यह सुन कर सबको बड़ी शर्म आयी औए सबके दिल में गुस्से की एक लहर दौड़ गयी।

अपनी बेटी के शब्दों के बाद उसके पिता ने सबसे पहले खामोशी तोड़ी — "तुमने मुझे बेवकूफ क्यों कहा?"

लड़की बोली — "पिता जी, आप गुस्सा न हों। पहले आप खुशी खुशी खाना खा लें उसके बाद मैं आपको बताऊँगी कि मैंने आपको बेवकूफ क्यों कहा।"

पर उसका पिता बोला — "नहीं। पहले मैं तुमसे सुन लूँ कि मैं बेवकूफ क्यों हूँ तभी मैं खाना खा सकूँगा। अभी तो तुम्हारी बात सुन कर मेरी भूख ही खत्म हो गयी है।"

इस पर उसकी बेटी निडर हो कर बोली — "पिता जी, आप बेवकूफ इसलिये हैं कि आपने अपनी इतनी कीमती चीज़ बहुत छोटी सी चीज़ के लिये दे दी।"

उसका पिता बोला — "मैंने? और वह कीमती चीज़ क्या है जो मैंने बहुत छोटी सी चीज़ के लिये दे दी?"

"आपको पता नहीं कि आपकी कीमती चीज़ क्या है? पिता जी मैं अपने बारे में बात कर रही हूँ।"

पिता बोला — “तुम मेरे लिये बहुत कीमती हो यह सच है पर अगर तुम इसको ज़रा और साफ कर के कहो तो... ।”

बेटी बोली — “यह तो साफ है पिता जी। आप जानते हैं कि आपके मेरे अलावा और कोई दूसरा बच्चा नहीं है और फिर भी आपने मुझे केवल सौ जानवरों के बदले में दे दिया हालाँकि आपके अपने पास छह हजार से भी ज़्यादा जानवर हैं। शायद वे सौ जानवर आपके लिये मुझसे ज़्यादा कीमती थे।”

यह सुन कर पिता को बहुत शर्म आयी। उसका चेहरा शर्म से लाल पड़ गया। वह बोला — “बेटी, तुम ठीक कहती हो। मैं सचमुच में ही एक बेवकूफ हूँ।”

उसके बाद उस लड़की के पति की बारी थी — “और तुमने मुझे बेवकूफ क्यों कहा?”

उसकी पत्नी ने उसकी तरफ देखा और बोली — “तुम तो मेरे पिता से भी ज्यादा बेवकूफ हो। तुमको तुम्हारे माता पिता से केवल कुछ जानवर विरासत में मिले थे और तुमने वे सब केवल मुझे पाने के लिये दे दिये।

अगर तुमने कोई लड़की अपने गाँव की ली होती तो शायद उसकी तुम्हें इतनी कीमत न देनी पड़ती। पर तुम तो कोई विदेशी लड़की चाहते थे और इसी लिये तुम इतने गरीब हो गये।

इतना ही नहीं तुमने तो मुझे भी गरीब बना दिया क्योंकि हमारे पास इतना खाना ही नहीं है कि हम रोज पेट भर कर खाना खा

सकें। अगर तुमने कुछ जानवर भी अपने पास रख लिये होते तो तुम आज पड़ोसियों के घर में काम नहीं कर रहे होते।"

और पति को यह मानना पड़ा कि उसकी पत्नी ठीक कह रही थी। वह वाकई अपने ससुर से ज़्यादा बेवकूफ था।

वह नौजवान भी जो उसको ले जाना चाहता था जानना चाहता था कि वह बेवकूफ क्यों था।

वह लड़की बोली — "तुम तो मेरे पिता और पति दोनों की बेवकूफियों को मिला कर उनसे भी ज्यादा बेवकूफ हो। यह मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ।"

"इसका क्या मतलब है?"

"तुम तो गाय के माँस के इस चौथाई टुकड़े के बदले में वह चीज़ लेना चाहते थे जिसको उसके पिता ने सौ जानवर ले कर और उसके पति ने सौ जानवर दे कर दिया था। क्या तुम मेरे पिता और पति दोनों से ज्यादा बेवकूफ नहीं हो?"

वह नौजवान भी शर्म और डर से लाल पड़ गया। उसने सोचा कि उसके लिये अब यही अच्छा है कि इससे पहले कि बात और आगे बढ़े और उस लड़की का पति उसको मारे उसको अब यहाँ से चले जाना चाहिये और वह तुरन्त ही वहाँ से उठ कर चला गया।

उधर लड़की का पिता अपने गाँव चला गया पर वहाँ जा कर उसने तुरन्त ही अपने दामाद के उसके सौ जानवर वापस कर दिये

और उसको उसे माफ करने के लिये ऊपर से दो सौ जानवर और दे दिये।

इस तरह से वे पति पत्नी दोनों अब अमीर हो गये थे।

14 लालच से खाने वाला अन्सीगे करम्बा[59]

एक बार अफ्रीका महाद्वीप के एक देश में जो सेनेगल और गाम्बिया नदियों[60] के बीच में है उसके माकू नाम के गाँव में एक आदमी रहता था जिसका नाम था अन्सीगे करम्बा।

अन्सीगे एक अमीर आदमी था क्योंकि उसको उसके पिता के मरने के बाद उन से काफी सम्पत्ति मिली थी। पर वह एक बहुत ही कंजूस और लालच से खाने वाला आदमी भी था।

उसकी एक पत्नी थी जिसका नाम था पामा[61] था और उसके पास बहुत सारे नौकर चाकर और दास[62] थे। पर अपनी कंजूसी की वजह से वह उन सबके लिये बहुत ही मुश्किल आदमी था।

पामा से तो वह हमेशा ही शिकायत करता रहता था — "मुझे कभी पेट भर कर खाना नहीं मिलता।" या "तुम मुझको वह सब नहीं देती जो एक पत्नी को अपने पति को देना चाहिये।" आदि।

अन्सीगे कभी किसी से अच्छा बर्ताव नहीं करता था। उसको लगता था कि उसके नौकर चाकर और उसके दास उसका बहुत ज़्यादा खाना खा रहे थे। इसके अलावा वे उसको लूट भी रहे थे।

---

[59] Ansige Karamba, the Glutton – a folktale from Ghana, West Africa, Africa. Taken from the Book "The Cow-Tail Swich and Other West African Stories". By Harold Courlander George Herzog. NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p. This book is available n Hindi from hindifolktales@gmail.com

[60] There lived Ansige Karamba in the village of Maku in the country which is in between Senegal and Gambia Rivers – that is Ghana.

[61] Paama – a name of a woman from Ghana

[62] Translated for the words "Servants and Slaves"

जबकि असल में उनको बहुत कम खाना मिलता था क्योंकि अन्सीगे अपने सब सामान को इतनी अच्छी तरह से सँभाल कर रखता था कि कोई उससे कोई भी चीज़ बिना उसकी जानकारी के नहीं ले सकता था। माकू के लोग सोचते थे कि उन्होंने अन्सीगे जैसा मुश्किल आदमी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा।

कभी कभी तो अन्सीगे अपनी पत्नी को अपनी शिकायतों से इतना बुरा भला कहता कि वह उसको बिल्कुल ही सहन नहीं कर पाती। एक दिन उसने अन्सीगे से कहा — "मैं कुछ दिनों के लिये अपने पिता के गाँव जाना चाहती हूँ। वे मुझे देखना चाहते हैं।"

कह कर उसने अपना सामान बाँधा और माकू छोड़ कर अपने पिता के घर चली गयी।

पर अब अन्सीगे और ज्यादा नाखुश हो गया और पहले से भी ज्यादा चिड़चिड़ा हो गया। अब उसके नौकर उसका खाना बनाते थे और वे उसकी उसकी पत्नी की तरह परवाह भी नहीं करते थे।

उसकी पत्नी के जाने से पहले उसका खाना थोड़ा बहुत अच्छा भी होता था और काफी भी होता था पर अब तो उसका खाना अच्छा भी नहीं होता था और कम भी होता था।

वह अपने नौकरों और दासों से इस बात की जितनी ज़्यादा शिकायत करता उसको उतनी ही खराब चीज़ें खाने को मिलतीं क्योंकि वे सब उसके लालच से बहुत तंग आ चुके थे।

पामा के जाने के काफी दिनों बाद एक सुबह अन्सीगे ने सोचा — "यह तो मेरी बड़ी खराब हालत हो गयी है। मेरी पत्नी दो साल हुए अपने माता पिता के घर चली गयी।

अब मुझे अपने नौकरों को अपना खाना बनाने के लिये कितना सारा पैसा देना पड़ता है फिर भी वे लोग मुझे धोखा देते हैं और खाने के लिये मुझे खराब चीज़ें देते हैं। मैं तो भूख से मरा जा रहा हूँ। मैं पामा को वापस ले कर आता हूँ।"

यह सोच कर वह पामा को लाने के लिये उसके गाँव चल दिया। अपनी लम्बी यात्रा के बाद वह पामा के गाँव आया। वह पामा के माता पिता के घर गया तो पामा के पिता ने उसका स्वागत किया। मेहमानदारी के तौर पर पामा के पिता ने उसको एक छोटा बकरा भी दिया।

उस बकरे को देख कर तो अन्सीगे के मुँह में पानी भर आया। वह सब कुछ भूल कर उस बकरे को बाहर एक मैदान में ले गया। वहाँ ले जा कर उसने उसको मार दिया और पकाया।

उसको इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि कहीं कोई आ न जाये और उससे उस बकरे का माँस न माँग ले सो उस बकरे के ठीक से पकने के पहले ही उसने उसका माँस खाना शुरू कर दिया।

वह खाता गया और खाता गया। जल्दी ही सारा माँस खत्म होगया। पर अन्सीगे अभी भी भूखा था। उसने देखा कि मैदान में एक बहुत बड़ा नर भेड़ चर रहा था।

बस उसने उस भेड़ को पकड़ लिया, मारा और उसको पकाने के लिये वहाँ लेगया जहाँ उसकी आग जल रही थी।

अन्सीगे को अपने गाँव से गये हुए काफी समय हो गया तो पामा ने सोचा कि उसका पति इतनी देर से गया कहाँ था और कर क्या रहा था।

उसने सोचा "मैं अपने पति को जानती हूँ। मुझे जा कर देखना चाहिये कि वह अपने लालच की वजह से किसी चक्कर में तो नहीं फँस गये हैं।"

सो वह मैदान की तरफ चल दी। वह ठीक सोच रही थी। वहाँ जा कर उसने देखा कि उसके पति ने एक भेड़ मार दिया है। उसने पूछा — "यह सब क्या है? यह तो वह बकरा नहीं है जो मेरे पिता ने आपको दिया था। यह तो एक भेड़ है जो यहाँ के सरदार का है।"

अन्सीगे बोला — "तुम ऐसे क्यों बात कर रही हो जैसे कि तुम मुझे जानती ही नहीं। जो बकरा तुम्हारे पिता ने मुझे दिया था वह तो मैंने खा लिया पर वह मेरे लिये काफी नहीं था। तब मुझे यह भेड़ दिखायी दे गया तो मैंने सोचा कि मैं इसी को खा लेता हूँ।"

पामा बोली — "बस अब आप मुश्किल में पड़ गये हैं। सरदार अब आपको अपना भेड़ मारने के लिये जरूर सजा देगा। कोई बात नहीं, मैं आपको इस मुश्किल से बाहर निकालने की कोशिश करती हूँ।"

उसने अन्सीगे से उस मरे हुए भेड़ को वहाँ ले जाने के लिये कहा जहाँ सरदार का एक जंगली घोड़ा बँधा हुआ था। वहाँ ले जा कर उन्होंने उस भेड़ को उस घोड़े के पास लिटा दिया।

मरे हुई भेड़ को वहाँ लिटा कर वे गाँव वापस गये। पामा रास्ते में सरदार के घर रुकी और उसको बताया कि उन्होंने उसके एक भेड़ को उसके जंगली घोड़े के पास पड़े हुए देखा है। लगता है कि घोड़े ने उसके भेड़ को लात मारी है जिससे वह भेड़ मर गया।

सरदार ने तुरन्त ही अपना एक आदमी यह देखने के लिये भेजा कि वे लोग ठीक कह रहे हैं या नहीं। उस आदमी ने वापस आ कर बताया कि वह स्त्री ठीक कह रही थी। भेड़ मर गया है और लगता है कि घोड़े ने उसको ठोकर मारी है जिससे कि वह भेड़ मर गया है। यह एक बहुत ही दुख भरी घटना है।

अगले दिन पामा ने अपने पिता से कहा — "अगर मैं अन्सीगे को ठीक से जानती हूँ तो मुझे लगता है कि वह माकू से काफी भूखे आये हैं। मैं उनकी भूख शान्त करने के लिये उनको खाने के लिये क्या दूँ?"

उसका पिता बोला — "तुम उसको खाने के लिये भुने हुए मक्का[63] के दाने क्यों नहीं देतीं? उससे उसकी भूख शान्त होनी चाहिये।"

[63] Translated for the word "Corn" (or maize). See its picture above

सो पामा बाहर अपने मक्का के खेत में गयी और वहाँ से एक बहुत बड़ी टोकरी भर कर भुट्टे ले आयी। उतनी मक्का तो बीस आदमियों के लिये भी काफी थी।

पामा ने उस मक्का को भून लिया और अपने पति के पास ले गयी। अन्सीगे ने वह सारी मक्का खा ली। उन भुट्टों में से एक भुट्टा भी नहीं बचा पर उसकी भूख अभी भी शान्त नहीं हुई। वह तो और जाग गयी थी। उसको तो और खाना चहिये था।

अबकी बार वह खुद खेत में चला गया और वहाँ से उसने मक्का के भुट्टे तोड़ने शुरू कर दिये। भुट्टे तोड़ते तोड़ते करीब करीब अँधेरा हो गया और जब अन्सीगे उतने भुट्टे तोड़ चुका जितने कि वह उठा कर ले जा सकता था तो वह गाँव की तरफ चल दिया।

उसको उस खेत में से रास्ता ढूँढने में बहुत मुश्किल पड़ रही थी और उधर अँधेरा बढ़ता जा रहा था। जब वह भुट्टे के खेत में से बाहर निकला तो उसको कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था सिवाय गाँव की रोशनियों के।

सो वह उन्हीं रोशनियों की तरफ चल पड़ा। उस खेत और गाँव के बीच में एक कुँआ था। जब वह उस कुँए के पास आया तो वह अँधेरे में कुँआ न देख पाने की वजह से अपने सारे भुट्टों के साथ उस कुँए में गिर पड़ा।

इस बीच पामा ने सोचा "मैं अपने पति को जानती हूँ। मुझे लगता है कि मुझे जा कर देखना चाहिये कि वह क्या कर रहे हैं। उनके पेट में अब क्या जा रहा है।" सो वह उसको देखने के लिये चल दी।

उसने एक टार्च उठायी और खेत की तरफ चल दी। जब वह कुँए के पास आयी तो वहाँ उसने अन्सीगे की सहायता माँगने की आवाज सुनी।

उसने अपनी टार्च की रोशनी कुँए के अन्दर फेंकी तो उसने देखा कि अन्दर अन्सीगे है और उसके चारों तरफ भुट्टे तैर रहे हैं। उसने अन्सीगे से पूछा — "अरे आप वहाँ अन्दर क्या कर रहे हैं?"

अन्सीगे बोला — "नाटक मत करो जैसे कि तुम मुझे जानती ही नहीं। मैं तो बस खाने के लिये कुछ और ढूँढ रहा था। लोग मुझे भूखा मारने की कोशिश कर रहे हैं। तुम मुझे यहाँ से बाहर निकालो।"

पामा बोली — "आप तो वाकई बहुत मुश्किल में पड़ गये हैं। लोगों को आपको यहाँ देख कर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा कि आपने उनके भुट्टे चुराये हैं। पर आप चिन्ता न करें मैं आपको यहाँ से बाहर निकालने की कोशिश करती हूँ।"

वह वहाँ गयी जहाँ उनकी गायें रहती थीं और उनको उस कुँए तक हाँक कर लायी जिसमें अन्सीगे गिर गया था। जब गायों ने

घास खाना शुरू कर दिया तो पामा ने सहायता के लिये चिल्लाना शुरू किया।

उसका चिल्लाना सुन कर गाँव के लोग भागे आये और उन्होंने पामा से पूछा कि क्या बात है वह क्यों चिल्ला रही थी।

पामा बोली — "बहुत ही बुरा हो गया है। मेरे पति इधर घूमने आये थे कि उन्होंने देखा कि कुछ गायें खेत में मक्का के पौधों को कुचल रही हैं और भुट्टों को तोड़ रही हैं। उन्होंने उनको खदेड़ने की कोशिश की और गिरे हुए वे भुट्टे उठाये जो उन गायों ने तोड़ कर फेंक दिये थे।

पर वह तो यहाँ के लिये एक अजनबी थे जिनको यहाँ के रास्ते पता नहीं थे सो वह इस कुँए में गिर पड़े। अब उनको बाहर निकालने में मेरी सहायता कीजिये।"

गाँव वाले बोले — "कोई बात नहीं तुम चिन्ता न करो। यह कुछ इतना बुरा भी नहीं है। हम इनको अभी निकाल देते हैं।"

उन्होंने गायों को खेत से भगा दिया और अन्सीगे को कुँए से बाहर निकालने के लिये रोशनी और रस्सियाँ ले कर आ गये।

कुँए से बाहर निकलने के बाद अन्सीगे ने पहला काम यह किया कि वह जल्दी से खाना खाने के लिये घर भाग गया।

अगले दिन पामा के पिता ने पामा से कहा — "बेटी आज तुम अपने पति के खाने के लिये कोई बहुत ही बढ़िया चीज़ बनाओ। कोई ऐसी चीज़ जो वह बहुत ज़्यादा पसन्द करता हो।"

पामा बोली — “आज में उनके लिये बाजरे के पकौड़े[64] बनाती हूँ।”

उसने बाजरा एक लकड़ी की ओखली में डाला और उसको वह तब तक कूटती रही जब तक कि उसका आटा नहीं बन गया। अन्सीगे उसको दूर से भूखी निगाहों से देख रहा था।

पामा ने वह ओखली चार बार भरी और उसका आटा बनाया। वह आटा बहुत सारा था। उसने उसमें पानी मिलाया और फिर उसके पकौड़े बनाये।

जब उसने वे पकौड़े बना लिये तो वह उनको अपने पति के पास उनके खाने के लिये ले गयी। वे पकौड़े बीस आदमियों के खाने के लिये भी काफी थे पर अन्सीगे उन सबको खा गया।

जब उसने आखिरी पकौड़ा भी खा लिया तो वह फिर उस ओखली की तरफ ललचायी निगाहों से देखने लगा जिसमें वह बाजरा पीसा गया था। वह सोच रहा था कि शायद उसमें अभी कुछ और आटा बच गया हो।

वह उठा और उस ओखली के पास जा कर उसमें झाँक कर देखा तो उसको उसमें आधी दूर पर उसकी दीवार पर कुछ आटा लगा हुआ दिखायी देगया।

[64] Translated for the words “Millet Dumplings”. Millet Dumplings are very famous in connection with a Japanese famous popular folktale “Momotaro or The Peach Boy”

बस उसने उसको चाटने के लिये उसमें अपना सिर नीचे की तरफ झुका दिया। पर उसको चाटने के बाद उसको कुछ आटा ओखली की तली में भी लगा दिखायी दे गया। तो उसने अपना सिर और नीचे की तरफ झुका दिया।

पर जब वह अपना सिर उसमें से बाहर निकाल रहा था तो वह उसको बाहर नहीं निकाल पाया और वह उसमें वहीं अटक गया।

तभी पामा सोच रही थी... "मैं अपने पति को जानती हूँ कि वह किस तरह के हैं। मुझे जा कर देखना चाहिये कि वह क्या कर रहे हैं। मुझे यह भी मालूम है कि उनके लालच ने उनको जरूर ही किसी मुश्किल में डाल दिया होगा।"

वह घर में अन्सीगे को ढूँढने के लिये इधर उधर गयी पर वह उसको कहीं दिखायी नहीं दिया तो वह बाहर आँगन में गयी तो वहाँ उसने देखा कि वह तो ओखली में सिर डाले खड़ा है।

पामा ने पूछा — "अरे यह यहाँ क्या हो रहा है?"

अन्सीगे ओखली में सिर डाले डाले गुस्से से बोला — "अब तुम वहाँ मत खड़ी रहो और मुझसे यह भी मत पूछो कि यहाँ क्या हो रहा है।" उसकी आवाज उस ओखली में से गूँजती हुई आ रही थी।

"बाजरे का कुछ और आटा निकालने के चक्कर में मेरा सिर ओखली में फँस गया है। अब इसमें जब यह फँस ही गया है तो

इसको निकालने की कोशिश करो।"

पामा बोली — "ठीक है ठीक है। मैं आपको अभी बाहर निकालती हूँ।"

वह फिर सहायता के लिये चिल्लायी तो गाँव वाले फिर वहाँ दौड़े आये कि क्या हो गया।

पामा बोली — "उफ कैसी बदकिस्मती है मेरी और यह सब मेरी गलती से हुआ। मैंने अपने पति से कहा कि उनका सिर बहुत ही बड़ा है। उन्होंने कहा "नहीं मेरा सिर बड़ा नहीं है।"

मैंने फिर कहा कि "आपका सिर इतना बड़ा है कि इस ओखली में नहीं जा सकता" तो उन्होंने फिर कहा कि "नहीं मेरा सिर इतना बड़ा नहीं है।"

और फिर उन्होंने अपना सिर इस ओखली में मुझे यह दिखाने के लिये घुसा दिया कि उनका सिर इतना बड़ा नहीं है कि वह इस ओखली में न आ सके। बस वह उसमें फँस गया। सो यह सब मेरी गलती से हुआ।"

लोग ओखली के ऊपर अन्सीगे का पिछवाड़ा ऊपर की तरफ देख कर हँस पड़े पर फिर बोले — "कोई बात नहीं। अब यह सब इतना बुरा भी नहीं है। पर तुम ठीक कहती हो इसका सिर तो वाकई में बहुत बड़ा है।"

उन्होंने एक कुल्हाड़ी ली और उससे वह ओखली तोड़ दी। इस तरह अन्सीगे का सिर उसमें से बाहर निकल आया। सारे गाँव को यह सब देख कर बहुत आनन्द आया।

पर अन्सीगे बहुत गुस्सा था। उसको लोगों का इस तरह अपने ऊपर हँसना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। उसको उनका हँसना इतना ज़्यादा बुरा लगा कि उसने अपना सामान उठाया और अपने गाँव माकू वापस चला गया।

जब वह अपने गाँव वापस आ गया तो उसे याद आया कि अपने खाने के चक्कर में वह पामा से यह कहना तो भूल ही गया कि वह वहाँ उसको लेने के लिये आया था और उसको उसके साथ चलना है।

सो उसने अपने एक नौकर को पामा के गाँव भेजा कि वह तुरन्त ही चली आये पर पामा ने उसके हाथों एक सन्देश भेज दिया — "अब तुम्हें इस तरह का नाटक करने की जरूरत नहीं है जैसे कि मैं तुमको जानती ही नहीं।"

15 राक्षस के लिये काम[65]

यह लोक कथा भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है। यह लोक कथा यह दिखाती है कि लालच किसी आदमी को कहॉ तक गिरा देता है।

पंजाब अपनी उपजाऊ जमीन और अपने अमीर किसानों के लिये बहुत मशहूर है। इस लोक कथा में एक अमीर किसान किस तरह लालची बन जाता है और फिर किस तरह अपने उस लालच की वजह से मुसीबत में फॅस जाता है यही बताया है।

यह लोक कथा यह भी बताती है कि जब कोई आदमी मुसीबत में फॅस जाता है तो कैसे उसको एक स्त्री उस मुसीबत से बाहर निकालती है – अपनी ताकत से नहीं बल्कि अपनी अक्लमन्दी से।

एक बार की बात है कि पंजाब के एक गॉव में शेरदिल नाम का एक आदमी रहता था। वह एक बहुत ही अमीर आदमी था। उसके पास खेती के लिये कई एकड़ जमीन थी और इतने सारे जानवर थे कि उसको यही पता नहीं था कि वह उनका क्या करे।

शेरदिल ने अपने खेतों का काम करने के लिये भी सौ आदमी नौकरी पर रखे हुए थे। वह इतना अमीर जरूर था पर वह कंजूस भी बहुत था। वह नौकरों को खाना खिलाने के लिये और उनको

---

[65] Work For the Demon – a folktale from Punjab, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/punjabi_folktale_indian_folktale.htm

उनकी तनख्वाह देने के लिये ज़रा सा भी पैसा खर्च नहीं करना चाहता था।

शेरदिल की एक पत्नी थी जिसका नाम था गुलाबो। उसका स्वभाव शेरदिल के स्वभाव से बिल्कुल उलटा था। वह धीरज रखने वाली थी अच्छे स्वभाव की थी और बहुत अक्लमन्द थी।

जब भी कभी शेरदिल खर्चे के बारे में भुनभुनाता तो वह उसको डॉटते हुए कहती कि तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि हमको उनको पैसा नहीं देना चाहिये या हमको उनके खाने पर खर्च नहीं करना चाहिये।

वे लोग हमारे लिये सारे साल कितना काम करते हैं। इसलिये उनको उनकी तनख्वाह देने में तुमको परेशानी क्यों होती है। उनको उनकी तनख्वाह तो मिलनी ही चाहिये। बल्कि भगवान ने तुमको जो कुछ भी दिया है उसके लिये तुमको भगवान को धन्यवाद देना ही चाहिये।

पर गुलाबो की बातों का शेरदिल पर कोई असर नहीं पड़ता।

एक दिन शेरदिल अपना हिसाब किताब करने बैठा तो तुरन्त ही अपने नौकरों के ऊपर किये गये खर्चे के ऊपर भुनभुनाने लगा। वह बोला कि इस सारे काम के लिये अब वह केवल एक नौकर ही रखेगा। उसकी पत्नी ने उसके इस विचार का विरोध किया।

असल में उसके दिमाग में एक बहुत ही बुरा विचार आया था कि अपना काम करने के लिये वह इतने सारे नौकरों की बजाय एक

राक्षस रखेगा। वह उसका सारा काम कर देगा। जितना वह इस बारे में सोचता रहा उतना ही उसको यह विचार अच्छा लगता रहा।

आखिर शेरदिल ने उस साधु के पास जाने का अपना दिमाग बना ही लिया जो लोगों को ऐसा वरदान दे कर उनकी मुश्किलों को आसान बना दिया करता था। सो वह उस साधु के पास चल दिया।

शेरदिल को उस साधु के पास पहुँचने में दो दिन लग गये। उसकी झोंपड़ी एक घने जंगल में थी। जब शेरदिल उस साधु के पास पहुँचा तो वह ध्यान में बैठा हुआ था।

काफी देर के बाद उसने अपनी आँखें खोलीं और शेरदिल को अपने सामने बैठा देख कर उससे पूछा कि वह वहाँ क्यों आया था और उसे क्या चाहिये था। शेरदिल ने उसको सिर झुकाया और अपने आने का मतलब बताया। साधु ने तुरन्त ही उसकी इच्छा पूरी कर दी।

उसने एक डंडी उठायी अपनी आँखें बन्द कीं कुछ शब्द बुड़बुड़ाये और वह डंडी जमीन में गाड़ दी। कुछ पल में ही उसमें से धुँए की एक पतली सी लकीर निकलनी शुरू हो गयी। धीरे धीरे वह धुँआ एक छोटा सा बादल बन गया और उसमें से बिजली कड़कने की सी आवाज होने लगी।

और उसमें से निकला एक नीले रंग का बहुत बड़ा सा राक्षस – इतना बड़ा जितना कि एक पीपल का पेड़ होता है।

वह राक्षस इतना भयानक लग रहा था कि शेरदिल उसको देख कर भागना चाह रहा था पर किसी तरह वह वहाँ रुका रहा।

राक्षस गर्जा और उसने पूछा कि उसको वहाँ क्यों बुलाया गया है। जब साधु ने उसको पूरी बात बतायी तो राक्षस एक बार फिर गर्जा और उसने पूछा कि क्या शेरदिल को उसके काम करने की शर्तों का पता था।

उसकी शर्त यह थी कि उसको दिन रात काम मिलना चाहिये। जिस समय भी उसको काम नहीं दिया गया तो वह शेरदिल को ही खा जायेगा।

शेरदिल यह सुन कर बहुत ज़ोर से हँस पड़ा और बोला कि उसके पास तो इतना काम था कि उसको तो एक मिनट की भी फुरसत नहीं मिलेगी। फिर उसने राक्षस से कहा कि वह उसको उसके घर पहुँचा दे।

शेरदिल के मुँह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि राक्षस ने उसको उठाया अपने बाँये कान के पीछे रखा और आसमान में उड़ गया। इस डर से कि वह कहीं गिर न पड़े शेरदिल ने राक्षस का कान अपने दोनों हाथों से ज़ोर से पकड़ रखा था और बाहर झाँक रहा था।

धरती उसको बहुत सारे रंगों की एक गेंद सी लगी। उसने तो डर के मारे अपनी आँखें ही बन्द कर लीं। यकायक वह राक्षस नीचे

ऐसे उतरने लगा जैसे किसी ने हवा में अंडा फेंक दिया हो। पल भर में ही उसने शेरदिल को उसके घर की सीढ़ियों पर उतार दिया।

शेरदिल तो उसकी इस छोटी सी उड़ान से ही थक गया था सो वह घर के अन्दर अपनी पत्नी को देखने के लिये भागा। लेकिन वह खुश भी बहुत था सो खुशी में आ कर उसने उसको दिखाया कि वह क्या कर के आया था।

इससे पहले कि उसकी पत्नी उसके जवाब में कुछ कहती शेरदिल ने अपने सारे नौकरों को नौकरी से निकाल दिया और राक्षस को अपने खेत जोतने के लिये भेज दिया।

उसके बाद उसने कुछ जॅभाइयॉ लीं और एक अच्छी सी नींद लेने के लिये अपने बिस्तर पर लेट गया। लेटते ही उसकी ऑख लग गयी और वह सपना भी देखने लगा।

वह सपना देख ही रहा था कि किसी ने उसको कन्धे से पकड़ कर बहुत ज़ोर से हिलाया। जैसे ही उसने अपनी ऑख खोलीं तो देखा कि राक्षस उसके ऊपर झुका खड़ा था और उससे और दूसरा काम पूछ रहा था।

शेरदिल तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं कर सका। उसकी इतनी एकड़ जमीन थी और वह राक्षस उसे इतनी जल्दी जोत कर वापस आ गया था।

वह अपने घर की छत पर चढ़ गया और चारों तरफ देखने लगा कि वाकई उसने उसकी सारी जमीन जोत दी थी या नहीं। उसने देखा कि वाकई उसने उसकी वह सारी जमीन जोत दी थी।

सो उसने उसको उस मिट्टी में खाद ला कर मिलाने के लिये, बीज बोने के लिये और खेतों को पानी देने के लिये कहा। राक्षस तुरन्त ही वहॉ से गायब हो गया और शेरदिल फिर सो गया।

पर अभी उसने केवल दो चार खर्राटे ही मारे थे कि किसी ने उसे नींद से फिर जगा दिया। इस बार उसने उसे और ज़्यादा ज़ोर से जगाया और फिर से उसे और काम देने के लिये कहा क्योंकि उसने उसका पहले वाला दिया हुआ काम खत्म कर लिया था।

अब तक शेरदिल उससे कुछ तंग आ चुका था सो उसने उसको अपनी जमीन के चारों तरफ एक बाड़ लगाने के लिये कहा। राक्षस यह सुन कर फिर से वहॉ से चला गया पर शेरदिल अबकी बार उसके जाने के बाद सोया नहीं।

अपने रसोईघर की खिड़की से वह उसको लकड़ी और कुछ औजार इकट्ठे करता देखता रहा। उसने देखा कि वह एक के बाद एक लकड़ी काटता जाता और उनको हवा में उछालता जाता। वे लकड़ियॉ उछल उछल कर अपनी जगह पर लगती जातीं।

जैसे ही शेरदिल ने अपनी शाम की चाय पी वह राक्षस अपना काम खत्म कर के फिर उसके पास और काम मॉगने आ पहुॅचा था।

अबकी बार शेरदिल ने उसके लिये काम सोच कर रखा हुआ था। उसने कहा कि वह उसके खेत में बना तालाब खाली कर दे और उसको नदी के ताजा पानी से भर दे। राक्षस यह सुन कर यह काम करने भी चला गया।

रात होने से पहले पहले वह यह काम खत्म कर के आ गया और बोला कि उसने उसका कहा वह काम कर दिया अब उसको कोई और काम दिया जाये।

अब शेरदिल को अपने पास कोई काम दिखायी नहीं दे रहा था सो वह बोला कि अब वह कुछ आराम कर ले। इस पर राक्षस बड़ी ज़ोर से एक भयानक हँसी हँसा और बोला कि उसने तो कभी आराम किया ही नहीं वह नहीं जानता कि आराम क्या होता है।

इतनी देर में शेरदिल को इतनी हिम्मत आ गयी थी कि वह उससे यह कह सका कि अब वह अगली सुबह तक के लिये आराम करना चाहता था सो तब तक वह उसके खेतों की रखवाली करे ताकि जंगली जानवर उसके खेतों में न घुस सकें और उसके खेत बर्बाद न कर सकें।

राक्षस तो उसके खेतों की रखवाली करने चला गया पर शेरदिल की आँख सारी रात एक पल को भी नहीं झपकी। वह यही सोचता रहा कि वह कल सुबह उसको क्या काम देगा।

सुबह होने से पहले उसने अपनी पत्नी को उठाया और रोते हुए उसे अपनी परेशानी बतायी। गुलाबो ने उसको तसल्ली दी कि वह

बिल्कुल चिन्ता न करे और सब कुछ उसके ऊपर छोड़ दे। वह सब ठीक कर देगी।

जैसे ही सूरज निकला राक्षस ने शेरदिल के घर का दरवाजा ज़ोर ज़ोर से पीटना शुरू किया और चिल्लाया "मुझे और काम दो।"

गुलाबो ने बहुत ही ज़रा सा दरवाजा खोला और उसकी झिरी में से बाहर झाँका। राक्षस को देख कर वह दरवाजे के बाहर निकली और उससे बोली — "देखो सामने यह कुत्ता जा रहा है इसकी पूँछ टेढ़ी है ज़रा इसकी पूँछ सीधी कर दो।"

राक्षस झुका और उसकी पूँछ पकड़ कर उसकी पूँछ सीधी करने के लिये उसको एक झटका दिया तो उसकी पूँछ सीधी हो गयी पर जैसे ही उसने उसको छोड़ा तो वह फिर से टेढ़ी हो गयी।

राक्षस ने उसकी पूँछ फिर से पकड़ कर उसको झटका दिया तो वह एक बार फिर सीधी हो गयी। वह उसको पाँच मिनट तक पकड़े रहा पर फिर जब उसने उसको छोड़ा तो वह फिर टेढ़ी हो गयी।

ऐसा उसने कई बार किया पर कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं हुई। कुत्ता भी इतनी देर तक उसको अपनी पूँछ से खेलते देखता रहा। पर अचानक उसका धीरज छूट गया। वह उछल कर राक्षस पर कूद पड़ा।

दोनों एक दूसरे के पीछे भागने लगे राक्षस उसकी पूँछ पकड़ने के लिये और कुत्ता उसके ऊपर भौंकते हुए उसको काटने के लिये।

यह सब घंटों तक चलता रहा। आखिर राक्षस कुत्ते को पकड़ने की कोशिश करते करते थक गया। उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि वह उसको दिया गया काम नहीं कर पाया था सो वह अपने आपसे शर्मिन्दा भी था।

उसमें अब शेरदिल के परिवार के सामने आने की हिम्मत नहीं थी सो वह उसी जंगल में जा कर छिप गया जहाँ से वह आया था।

राक्षस के जाने के बाद शेरदिल और उसकी पत्नी ने चैन की साँस ली। शेरदिल ने अपने सारे नौकरों को वापस बुला लिया और नौकरी शुरू करने से पहले खूब अच्छा खाना खिलाया। और फिर उसके बाद कभी उनकी तनख्वाह और खाने के बारे में शिकायत नहीं की।

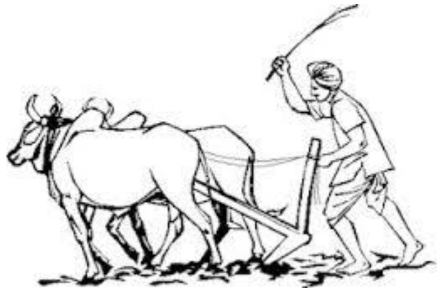

16 मछली हँसी क्यों[66]

एक बार की बात है कि एक मछियारिन अपनी मछलियाँ ले कर राजा के महल के पास से गुजर रही थी कि रानी ने अपने महल की एक खिड़की से बाहर झाँका और उसको अपने पास बुलाया और उसके पास जो कुछ था वह उसे दिखाने के लिये कहा।

उसी पल एक बहुत बड़ी मछली उसकी टोकरी की तली में से बाहर कूद गयी। रानी ने पूछा कि यह नर मछली है या मादा मछली। मुझे तो मादा मछली चाहिये।

यह सुन कर मछली बहुत ज़ोर से हँस पड़ी। मछियारिन बोली "यह तो नर मछली है।" और उसे बेचने के लिये फिर से महल का चक्कर काटने चल दी।

रानी गुस्सा हो कर अपने कमरे में लौट आयी। जब राजा शाम को अपनी रानी से मिलने आया तो उसने देखा कि उसकी रानी कुछ परेशान है। राजा ने पूछा — "क्या तुम परेशान हो?"

रानी बोली — "नहीं। पर मैं एक मछली के व्यवहार से कुछ नाराज हूँ। आज एक स्त्री एक मछली ले कर मेरे पास आयी थी

---

[66] Why the Fish Laughed – a folktale of Kashmir, India.
Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887. This book is available in Hindi from hindifolktales@gmail.com

और जब मैंने उससे पूछा कि यह मछली नर है या मादा तो वह मछली बड़े बुरे तरीके से हँस पड़ी।"

राजा हँस कर बोला — "तुमने क्या कहा कि मछली हँस पड़ी? यह तो नामुमकिन है। तुमने जरूर कोई सपना देखा होगा।"

रानी बोली — "मैं कोई बेवकूफ नहीं हूँ। मैं वही बोल रही हूँ जो मैंने अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना।"

राजा बोला — "बड़ी अजीब सी बात है। चलो ऐसा ही सही कि मछली हँसी। मैं मालूम करूँगा कि क्या मामला था।"

अगले दिन राजा ने अपने वजीर को बुला कर उससे वही कहा जो रानी ने उससे कहा था और उससे इस मामले की जाँच करने के लिये कहा कि मछली क्यों हँसी। और कहा कि अगर छह महीनों के अन्दर अन्दर उसने इस बात का जवाब ला कर नहीं दिया तो वह उसको मार देगा।

वजीर ने राजा से वायदा किया कि वह अपनी पूरी कोशिश करेगा हालाँकि उसको लग रहा था कि वह यह बात कभी मालूम नहीं कर पायेगा और उसकी मौत अब उसके सामने खड़ी थी।

पूरे पाँच महीने तक वह मछली के हँसने की वजह ढूँढता ढूँढता थक गया। उसने हर जगह ढूँढा हर किसी से पूछा – अक्लमन्द से और विद्वान से जादू जानने वालों से और बहुत तरीके की चालें खेलने वालों से। कोई भी तो उसको मछली के हँसने की वजह नहीं बता सका। सो वह टूटा दिल ले कर अपने घर लौट आया।

अब उसने अपनी मौत की तैयारी करनी शुरू कर दी थी क्योंकि उसको राजा के बारे में बहुत अच्छा अनुभव था कि वह अपनी धमकी से वापस नहीं फिरेंगे। और दूसरी तैयारियों के साथ साथ उसने अपने बेटे को भी तब तक घूमने फिरने भेज दिया था जब तक राजा का गुस्सा थोड़ा कम होता है।

वजीर का नौजवान बेटा सुन्दर भी था और अक्लमन्द भी। वह अपने घर से चल दिया जहॉ भी उसको उसकी किस्मत ले जाये। उसको गये हुए कुछ ही दिन हुए थे कि उसको एक बूढ़ा किसान मिल गया जो किसी गॉव को जा रहा था।

उसको वह बूढ़ा अच्छा लगा तो उसने यह बताते हुए कि वह भी उसी जगह जा रहा था उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ जा सकता था। बूढ़ा राजी हो गया और वे दोनों एक साथ चलने लगे। दिन गरम था और रास्ता लम्बा और थका देने वाला।

नौजवान बोला — "क्या वह आसान नहीं होता अगर हम एक दूसरे को बारी बारी से उठा कर ले चलते?"

बूढ़े ने सोचा यह नौजवान कितना बेवकूफ है। हम लोग एक दूसरे को उठा कर कैसे ले जा सकते हैं। सो उसने उसकी बात को टाल दिया।

इस समय वे लोग मक्का के एक खेत से हो कर गुजर रहे थे जो कटने के लिये तैयार खड़ा था। जब वह हवा से हिलता था तो ऐसा लगता था जैसे सोने का समुद्र हो।

नौजवान ने पूछा — "यह खा लिया गया है या नहीं।"

बूढ़े की यह बात बिल्कुल समझ में नहीं आयी तो वह बोला "पता नहीं।"

कुछ देर बाद ये दोनों यात्री एक बड़े से गाँव में आ गये जहाँ आ कर नौजवान ने अपने बूढ़े साथी को एक चाकू दिया और कहा — "दोस्त यह लो और इससे दो घोड़े खरीद लो। पर ध्यान रहे कि तुम इसे वापस ले आना क्योंकि यह बहुत कीमती है।"

बूढ़े को उसकी यह बात सुन कर हँसी भी आयी और गुस्सा भी आया। उसने उसका चाकू कुछ ऐसे बड़बड़ाते हुए उसी को वापस कर दिया जैसे कि उसका दोस्त या तो कुछ पागल था या फिर बेवकूफ था।

नौजवान ने भी उसके जवाब की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और जब तक चुप ही रहा जब तक वे लोग शहर नहीं पहुँच गये। शहर के कुछ दूर बाहर ही उस बूढ़े किसान का घर था। वे बाजार से हो कर मस्जिद गये पर किसी ने भी उनको अन्दर आने और सुस्ताने के लिये नहीं कहा।

नौजवान के मुँह से निकला — "अरे यह तो एक बहुत बड़ी कब्रगाह लगती है।"

बूढ़े किसान ने सोचा पता नहीं इस नौजवान के यह कहने का क्या मतलब है जो इतने बड़े शहर को यह कब्रगाह कह रहा है। यहाँ से आगे चलने के बाद वे एक कब्रगाह से गुजरे जहाँ कुछ लोग

कब्रों पर प्रार्थना कर रहे थे और अपने मरे हुए प्यारों के नाम पर आने जाने वालों को रोटी और कुलचे[67] बाँट रहे थे। उन्होंने इन दोनों यात्रियों को भी अपने पास बुलाया और इनको भी खाने के लिये दिया जितना भी इनको चाहिये था।

नौजवान बोला — "ओह कितना सुन्दर शहर है।"

यह सुन कर तो बूढ़े को यकीन हो गया कि यह नौजवान बिल्कुल ही पागल है। पता नहीं आगे यह क्या कहेगा – पानी को जमीन और जमीन को पानी। और जब रोशनी होगी तो यह ॲधेरे की बात करेगा और जब ॲधेरा होगा तब उसे रोशनी कहेगा। पर उसने अपने ये विचार अपने तक ही रखे।

चलते चलते वे एक नदी से हो कर गुजरे जो कब्रगाह के बराबर से गुजरती थी। पानी थोड़ा गहरा था सो बूढ़े किसान ने अपने जूते उतार दिये और अपना पाजामा ऊपर चढ़ा लिया पर नौजवान ने वह नदी जूते और पाजामा पहने ही पार की।

यह देख कर बूढ़े ने अपने मन में कहा "मैंने आज तक ऐसा बेवकूफ नहीं देखा जो ऐसी बेवकूफी की बातें करता है और ऐसी बेवकूफी के काम करता है।"

फिर भी उसको यह आदमी अच्छा लगा। उसने सोचा कि यह आदमी उसकी पत्नी और बेटी को हॅसायेगा सो उसने उसको अपने

[67] A kind of leavened bread fried on the grill. It is a Punjabi and Kashmiri dish.

घर बुलाया और उसको तब तक रहने के लिये कहा जब तक वह उस गाँव में रहे।

नौजवान बोला — "आपका बहुत बहुत धन्यवाद पर अगर आपको बुरा न लगे तो पहले मैं आपसे एक बात पूछ लूँ। क्या आपकी छत की शहतीर[68] काफी मजबूत है।"

बूढ़े किसान ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और हँसते हुए अपने घर में घुसा। घर वालों के आदाब का जवाब देते हुए वह बोला — "बाहर एक आदमी खड़ा है। वह मेरे साथ बहुत दूर से आ रहा है। मैं उसको तब तक यहाँ ठहराने के लिये ले आया हूँ जब तक वह इस गाँव में रहता है क्योंकि उसको इसी गाँव में ठहरना है।

पर यह आदमी इतना बेवकूफ है कि मैं तो इसकी एक भी बात का कोई मतलब नहीं निकाल सका। अभी यह यह जानना चाहता है कि मेरे घर की शहतीर मजबूत है कि नहीं। अरे उसको इस बात से क्या मतलब कि मेरे घर की शहतीर मजबूत है या नहीं। मुझे तो यह आदमी कुछ पागल सा लगता है।"

और यह कह कर वह अपने आप ही बड़े ज़ोर से हँस पड़ा। किसान की बेटी बहुत अक्लमन्द थी बोली — "पिता जी जो भी यह

[68] Big wooden logs on which the roof of the house is rested. See their picture above.

आदमी है वह बेवकूफ नहीं है जैसा कि आप सोचते हैं। वह केवल यह जानना चाहता है कि आप उसको अपने घर में रखने का खर्चा उठा सकते हैं या नहीं।"

किसान बोला — "क्यों नहीं क्यों नहीं। अब मैं समझा। तो शायद तुम मेरी दूसरी पहेलियों को भी सुलझाने में मेरी सहायता कर सको। जब हम साथ साथ आ रहे थे तो इसने मुझसे कहा "या तो मैं उसको ले चलूँ या वह मुझे ले चले" क्योंकि उसको लगा कि उस तरीके से शायद हम लोग ज़्यादा खुश खुश आयेंगे।

लड़की बोली — "यकीनन पिता जी। इससे उसका मतलब था कि या तो वह आपको कहानी सुनाता जाये या फिर आप उसको कहानी सुनाते जायें इससे रास्ता आसानी से कट जायेगा।"

किसान बोला — "अच्छा। जब हम मक्का के खेत में से गुजर रहे थे तो इसने मुझसे पूछा "क्या यह खेत खाया हुआ है?" इसका क्या मतलब हुआ।"

लड़की बोली — "और इसका मतलब आपको पता नहीं था? पिता जी वह केवल यह जानना चाहता था कि जिस आदमी का यह खेत था उसके ऊपर कोई कर्जा था या नहीं। क्योंकि अगर खेत के मालिक के ऊपर कोई कर्जा था तो उस खेत की पैदावार उसके लिये वैसी ही थी जैसी कि खायी हुई होती थी क्योंकि वह पैदावार तो उसका कर्जा निबटाने में ही चली जायेगी।"

किसान फिर बोला — "ओह हॉ। यह तो ठीक है। फिर हम लोग एक गॉव में घुसे तो इसने मुझे एक चाकू दे कर कहा कि मैं उससे दो घोड़े खरीद लूँ और वह चाकू वापस ला कर उसको दे दूँ क्योंकि इसका वह चाकू बड़ा कीमती है।"

लड़की बोली — "क्या दो मोटे मोटे डंडे दो घोड़ों के बराबर नहीं हैं पिता जी जो किसी यात्री को सड़क पर चलने में सहायता कर सकें। इस बात से उसका मतलब यह था कि आप दो मोटे मोटे डंडे काट कर ले आयें और उसका चाकू भी वापस ले आयें।"

किसान बोला — "ओह अब मैं समझा। फिर हम लोग एक शहर से गुजर रहे थे तो वहॉ हमको कोई दिखायी नहीं दिया जिसको हम जानते और किसी ने भी हमको कुछ खाने को भी नहीं दिया। फिर हम एक कब्रगाह के पास से गुजरे तो वहॉ कुछ लोगों ने हमें अपने पास बुलाया और रोटी और कुलचा खाने के लिये दिया। इसलिये मेरे साथी ने शहर को कब्रगाह और कब्रगाह को शहर कहा।"

लड़की बोली — "यह बात भी बिकुल्ल साफ है पिता जी। अगर कोई यह सोचता है कि शहर में सब कुछ मिल जायेगा पर वहॉ ऐसे लोग बसते हैं जो मेहमाननवाजी जानते ही नहीं तो वहॉ के लोग तो मरे लोगों से भी बदतर हुए न। शहर जो लोगों से भरा हुआ था ऐसा था। वह आपके लिये ऐसा था जैसे उसमें सब मरे हुए

लोग रहते हों क्योंकि वहाँ किसी ने आपको खाने के लिये भी नहीं पूछा।

और वह कब्रगाह जहाँ कोई यह सोचता है कि वहाँ तो कोई ज़िन्दा आदमी उसकी मेहमाननवाजी करने के लिये होगा ही नहीं वहाँ उसको भर पेट खाना मिल जाता है तो वह शहर जैसा हो गया। हो गया न।"

किसान ने आश्चर्य प्रगट करते हुए कहा — "तुमने ठीक कहा बेटी। फिर चलते चलते हम एक नदी से गुजरे तो इसने बिना जूते और पाजामा उतारे ही उसे पार कर लिया।"

लड़की बोली — "पिता जी मुझे उसकी अक्लमन्दी अच्छी लगी। मैंने अक्सर सोचा है कि वे लोग कितने बेवकूफ हैं जो इतनी तेज़ बहती नदी को जिसमे नुकीले पत्थर पड़े रहते हैं जूते उतार कर पार करते हैं।

अगर उनका पैर ज़रा सा भी इधर उधर पड़ जाये और वे गिर जायें तो वे तो सिर से ले कर पैर तक भीग जायेंगे। आपका यह दोस्त तो बहुत ही अक्लमन्द है। पिता जी मैं इस आदमी से मिलना चाहती हूँ और इससे बात करना चाहती हूँ।"

किसान बोला — "ठीक है। मैं उसको ढूँढता हूँ और बुला कर लाता हूँ।"

लड़की बोली — "आप उनसे कहियेगा पिता जी कि हमारे मकान की शहतीरें बहुत मजबूत हैं तो वह आपके साथ आ जायेंगे।

मैं उनके लिये आपके हाथों एक भेंट भी भेजूँगी ताकि वह समझ जायें कि हम उनकी मेहमाननवाजी कर सकते हैं।"

सो उसने एक नौकर को बुलाया और उसको एक बर्तन भर ग्यव[69] बारह रोटी और एक बोतल दूध दे कर उसको उस आदमी के पास यह सन्देश दे कर भेजा "ओ दोस्त चाँद पूरा है। बारह महीनों का एक साल होता है और समुद्र में से पानी बह बह कर बाहर निकल रहा है।"

वह नौकर जब इस भेंट और सन्देश को ले कर चला तो आधे रास्ते में ही उसको अपना छोटा बेटा मिल गया। बेटे ने देखा कि उसके पिता जी के पास टोकरी में खाना था तो उसने उससे कुछ खाना माँगा। उसका पिता थोड़ा बेवकूफ था सो उसने उसको कुछ खाना दे दिया।

उसी समय उसने उस नौजवान को देखा जिसके लिये वह वह खाना और सन्देश ले कर जा रहा था। उसने बचा हुआ खाना और सन्देश उस नौजवान को दे दिया।

नौजवान ने कहा — "अपनी मालकिन को मेरा सलाम कहना और उनसे कहना कि चाँद नया है[70] मुझे साल में केवल ग्यारह महीने ही मिले और समुद्र भी पूरा नहीं है।"

---

[69] Gyav means clarifieded butter (Ghee)

[70] Translated for the words "Moon is new" – means New Moon or Amaavasyaa

नौकर इन शब्दों का मतलब तो नहीं समझा पर उसने घर जा कर उसका सन्देश लड़की को ऐसा का ऐसा ही दे दिया। इस तरह उसकी चोरी पकड़ी गयी और उसको उसकी सजा भुगतनी पड़ी।

कुछ देर बाद ही वह नौजवान किसान के साथ घर आया तो उसका ज़ोर शोर से स्वागत किया गया और उसका इस तरह से स्वागत किया जैसे वह कोई बड़े बाप का बेटा है हालाँकि उसके मेजबान को उसके बारे में कुछ पता नहीं था।

काफी देर बात करने के बाद उसने उनको अपनी कहानी सुनायी – मछली के हँसने के बारे में उसके पिता की मौत की सजा के बारे में और फिर अपने घर से निकाले जाने के बारे में। फिर उसने उनसे इस बारे में उनकी सलाह माँगी।

लड़की बोली — "ऐसा लगता है कि मछली की हँसी ही इस सब मुसीबत की जड़ है। और यह मछली इसलिये हँसी लगती है कि राजा के महल में कोई एक ऐसा आदमी है जिसका राजा को पता नहीं है।"

नौजवान बोला — "बहुत अच्छे बहुत अच्छे। अभी मेरे लौट जाने में कुछ समय बाकी है जिससे मैं अपने पिता को उनकी अन्यायपूर्ण मौत से बचा सकूँगा।"

अगले ही दिन वह किसान की बेटी को अपने साथ ले कर वापस अपने घर की तरफ लौट पड़ा।

अपने घर पहुँचते ही वह महल की तरफ दौड़ गया और जा कर उसे जो कुछ मछली के हँसने का मतलब पता चला था बताया। बेचारा वजीर तो मौत के डर से अभी से मरा हुआ हो रहा था। उसको तुरन्त ही राजा के पास ले जाया गया। उसने राजा को वही बता दिया जो उसके बेटे ने उसे बताया था।

राजा बोला — "नहीं कभी नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

वजीर बोला — "पर ऐसा ही होना चाहिये राजा साहब। जो कुछ भी मैंने सुना है उसकी सच्चाई को साबित करने के लिये मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप पहले तो एक गड्ढा खोदें फिर अपनी सारी दासियों को अपने महल में बुलायें और उन सबको उस गड्ढे के ऊपर से कूदने के लिये कहें। ऐसा करने से आदमी का पता चल जायेगा।"

यह सुन कर राजा ने एक गड्ढा खुदवाया और अपनी सब दासियों को उसके ऊपर से कूद जाने के लिये कहा। सब दासियों ने कोशिश की पर केवल एक ही दासी वह गड्ढा पार कर सकी। वह कोई दासी नहीं बल्कि एक आदमी था।

इस तरह रानी सन्तुष्ट हुई और वजीर अपनी मौत से बच सका। उसके कुछ दिन बाद वजीर के बेटे की शादी किसान की बेटी से हो गयी जो आगे चल कर बहुत सफल रही।

17 बागीचे की जादूगरनी[71]

एक बार की बात है कि एक जगह पर बन्द गोभी[72] का एक खेत था और वहॉ बहुत सारी बन्द गोभियॉ लगी हुई थीं। उन दिनों अकाल पड़ा हुआ था सो दो स्त्रियॉ खाने के लिये कुछ ढूँढ रही थीं।

एक स्त्री बोली — "अरे देख यहॉ तो बन्द गोभी का खेत का खेत लगा हुआ है चल वहीं चलते हैं। वहीं से कुछ बन्द गोभी तोड़ते हैं।"

दूसरी बोली — "पर वहॉ तो कोई उन पर पहरा दे रहा लगता है।"

पहली ने कहा — "चल तो सही, चल कर देखते हैं।" पर जब वे वहॉ पर पहुँची तो उन्होंने देखा कि वहॉ तो कोई नहीं है।

तो दूसरी बोली — "यहॉ तो कोई भी नहीं है चल अन्दर चलते हैं।" सो वे दोनों अन्दर खेत में पहुँची और उन्होंने वहॉ से कई सारी बन्द गोभियॉ तोड़ लीं। बन्द गोभियॉ तोड़ कर वे घर पहुँचीं और उनको शाम के खाने के लिये पकाया। अगले दिन वे फिर आयीं और फिर कुछ बन्द गोभियॉ अपनी बॉहों मे भर कर ले गयीं।

---

[71] The Garden Witch. A folktale from Italy from its Province of Caltanissetta.

[72] Translated for the word "Cabbage". See its picture above.

यह खेत एक बुढ़िया का था। जिस समय ये स्त्रियाँ बन्द गोभियाँ तोड़ने गयीं थी वह बुढ़िया अपने घर में नहीं थी। जब वह घर वापस आयी तो उसने देखा कि उसकी कुछ बन्द गोभियाँ कोई चुरा कर ले गया है।

उसने सोचा कि इनकी चौकीदारी के लिये मैं एक कुत्ता रखती हूँ और उसको बागीचे के दरवाजे से बाँध देती हूँ।

सो तीसरे दिन जब वे स्त्रियाँ फिर से बन्द गोभी तोड़ने पहुँचीं तो उन्होंने देखा कि दरवाजे पर तो एक कुत्ता बँधा है। कुत्ता देख कर एक स्त्री बोली — "ओह नहीं, इस बार मैं बन्द गोभी लेने इस खेत में नहीं जा रही। यहाँ तो एक कुत्ता बैठा है और मुझे कुत्ते से बहुत डर लगता है।"

दूसरी स्त्री बोली — "बेवकूफ न बन। हम लोग दो सैन्ट की वह सख्त वाली डबल रोटी खरीदेंगे और इस कुत्ते को डालेंगे फिर हम जो चाहें सो कर सकते हैं।"

सो उन्होंने दो सैन्ट की सख्त डबल रोटी खरीदी और इससे पहले कि वह कुत्ता उन पर भौंके उन्होंने उसे उस कुत्ते को डाल दी।

कुत्ता तुरन्त ही उस डबल रोटी पर कूद पड़ा। वह उसको खाता रहा और चुपचाप खड़ा रहा। उन दोनों ने फिर कई बन्द गोभियाँ तोड़ीं और उनको ले कर अपने घर चली गयीं।

जब वह बुढ़िया फिर अपने घर आयी तो उसने देखा कि उसके पीछे क्या हुआ। उसकी बन्द गोभियाँ तो फिर गायब थीं।

वह कुत्ते से बोली — "तो तूने उनको मेरी बन्द गोभियाँ ले जाने दीं। तू पहरेदारी करने के लायक नहीं है।"

उसने कुत्ते को पहरेदारी से हटा कर उसकी जगह एक बिल्ला रख लिया। उसने सोचा जब यह म्याऊँ बोलेगा तब मैं चोर को पकड़ने बाहर आ जाऊँगी।

अगले दिन जब वे स्त्रियाँ फिर बन्द गोभी लेने आयीं तो उन्होंने देखा कि आज तो वहाँ कुत्ते की जगह एक बिल्ला बँधा है। उन्होंने उस बिल्ले के लिये एक फेंफड़ा[73] खरीदा और इससे पहले कि वह म्याऊँ बोलता उन्होंने उसके आगे वह फेंफड़ा फेंक दिया।

उधर वह बिल्ला फेंफड़ा खाता रहा और इधर वे दोनों स्त्रियाँ बन्द गोभियाँ तोड़ती रहीं। बन्द गोभियाँ ले कर वे अपने अपने घर चली गयीं।

बुढ़िया ने देखा कि उसकी बन्द गोभियाँ तो फिर कोई चुरा कर ले गया था। वह सोचने लगी अब मैं किसको रखूँ। ओह मुर्गा ठीक रहेगा। इस बार चोर मुर्गे से नहीं बच पायेंगे।

अगली बार जब वे दोनों स्त्रियाँ वहाँ बन्द गोभी लेने आयीं तो उनमें से एक बोली — "आज तो इस खेत में मैं बिल्कुल नहीं जाने वाली। आज तो वहाँ मुर्गा बैठा है।"

---

[73] Translated for the word "Lung"

दूसरी बोली — "तू तो बहुत ही डरती है। हम इसको दाना डालेंगे और फिर बन्द गोभी तोड़ कर ले जायेंगे।"

सो उन्होंने ऐसा ही किया। मुर्गे को उन्होंने दाना डाला। मुर्गा दाना खाता रहा और वे स्त्रियाँ फिर से बन्द गोभी तोड़ कर ले गयीं।

दाना खा कर मुर्गा चिल्लाया — "कुकड़ूँ कूँ।"

कुकड़ूँ कूँ की आवाज सुन कर बुढ़िया बाहर आयी तो उसने देखा कि उसकी बन्द गोभियाँ तो फिर से गायब हो गयीं थीं। चोर उसकी बन्द गोभियाँ ले कर फिर से भाग गया था। गुस्से में आ कर उसने उस मुर्गे की गर्दन मरोड़ दी।

फिर उसने एक किसान को बुलाया और उससे कहा कि मेरे नाप की एक कब्र खोद। किसान ने उसके नाप की एक कब्र खोद दी।

जब उसने कब्र खोद दी तो वह बुढ़िया उस कब्र में लेट गयी और अपने आपको मिट्टी से अच्छी तरह से ढक लिया। उसका केवल एक कान ही बाहर रहा।

अगली सुबह वे स्त्रियाँ फिर बन्द गोभी लेने के लिये आयीं तो उन्होंने फिर चारों तरफ देखा कि आज कौन था पहरे पर। पर उनको कोई दिखायी नहीं दिया।

उस बुढ़िया ने अपनी कब्र रास्ते में खुदवायी थी ताकि जब कोई उसकी बन्द गोभियाँ चुराने के लिये जाये तो वह उसके पैरों की आवाज सुन सके।

जब वे दोनों स्त्रियाँ बन्द गोभियाँ तोड़ने के लिये चलीं तो उनको खेत पर कुछ भी अलग दिखायी नहीं दिया। पर जब वे बन्द गोभियाँ तोड़ कर वापस आ रही थीं तो उनमें से एक ने एक वह कान जमीन से बाहर निकला देखा तो वह चिल्लायी "अरे देखो यह कितना सुन्दर मशरूम[74] है।"

कह कर वह झुकी और उसने उस मशरूम को जमीन में से उखाड़ने की कोशिश की। वह उसको अपनी पूरी ताकत से उसे खींचती रही खींचती रही पर जब वह काफी देर तक भी नहीं उखड़ा तो आखीर में उसने उसको एक बहुत ज़ोर का झटका दिया तो वह बुढ़िया अपनी कब्र से बाहर निकल आयी।

वह चिल्लायी — "आह आह, तो ये तुम लोग हो जो मेरी बन्द गोभियाँ चुराती रही हो। मैं देखती हूँ अब तुम लोगों को।"

कह कर उसने उस स्त्री को पकड़ लिया जिसने उसका कान खींचा था। इतनी देर में दूसरी स्त्री बच कर भाग निकली।

बुढ़िया ने कहा — "आज मैं तुमको पूरा का पूरा खा जाऊँगी।"

---

[74] Mushroom is a kind of vegetable. See its picture above.

यह सुन कर वह स्त्री डर गयी। उसको और तो कुछ सूझा नहीं सो उसने कहा — "पर ज़रा रुको तो। मुझे बच्चा होने वाला है। अगर तुम मुझे छोड़ दोगी तो चाहे मेरे लड़का हो या लड़की जब भी वह सोलह साल का होगा तो मैं उसको आ कर तुमको दे जाऊँगी। क्या तुम इस बात पर राजी हो?"

वह चुड़ैल बोली — "हाँ मैं इस बात पर राजी हूँ। अब तुमको जितनी बन्द गोभियाँ चाहिये तुम उतनी बन्द गोभियाँ तोड़ लो और जाओ पर अपना वायदा याद रखना।"

वह स्त्री पत्ते की तरह काँपती हुई अपने घर चली गयी। जा कर वह अपनी दोस्त से बोली — "तुम तो वहाँ से बच कर चलीं आयीं और मैं पकड़ी गयी। मुझे उस बुढ़िया से वायदा करना पड़ा कि मैं अपना बच्चा, चाहे वह लड़का हो या लड़की, जब वह सोलह साल का होगा तब उसको मुझे उस बुढ़िया को देना पड़ेगा।"

दो महीने बाद उस स्त्री ने एक लड़की ने जन्म दिया। उसको देख कर उसकी माँ ने एक लम्बी साँस ली और बोली — "ओह मेरी बदकिस्मत बेटी, मैं तुझे पालूँगी पोसूँगी और सोलह साल बाद वह चुड़ैल तुझे ज़िन्दा खा जायेगी।" कहते कहते वह रो पड़ी।

समय तो किसी के लिये रुकता नहीं। सोलह साल भी पलक झपकते निकल गये। जब वह लड़की सोलह साल की होने वाली थी तो एक दिन वह अपनी माँ के लिये बाजार से तेल लेने गयी। वहाँ उसको वह जादूगरनी मिल गयी।

उस जादूगरनी ने उस लड़की से पूछा — "तुम किसकी बेटी हो?"

लड़की बोली — "सबैद्दा[75] की।"

बुढ़िया उसको ऊपर से नीचे तक देखते हुए बोली — "तुम तो वाकई बड़ी हो गयी हो और मुझे यकीन है कि स्वादिष्ट भी।"

उसके शरीर को अपने हाथों से सहलाते हुए वह आगे बोली — "यह अंजीर तुम अपने घर ले जाओ और इसे अपनी माँ को देना। और जब तुम इसको अपनी माँ को दो तो उससे कहना "तुम्हारे वायदे का क्या हुआ।"

लड़की ने वह अंजीर ली और अपने घर पहुँची तो उसने अपनी माँ को सारा हाल बताया और कहा — "उसने मुझे तुमसे यह कहने के लिये कहा कि "तुम्हारे वायदे का क्या हुआ?"

"मेरा वायदा?" यह सुन कर उसकी माँ बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

लड़की परेशान हो कर बोली — "माँ तुम रो क्यों रही हो? क्या बात है?"

पर उसकी माँ ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर तक रोने के बाद जब वह कुछ सँभली तो बोली — "अगर वह बुढ़िया तुम्हें फिर से मिल जाये तो उससे कहना कि "मैं तो अभी बहुत छोटी हूँ।"

[75] Sabedda – name of the woman who went to pluck the cabbages and caught in the last.

पर वह लड़की तो सोलह साल की हो चुकी थी इसलिये उसको अब यह कहते हुए शर्म आ रही थी कि वह तो अभी बहुत छोटी है। सो अगली बार जब वह उस चुड़ैल से मिली तो उसने लड़की से पूछा — "तुम्हारी माँ ने क्या जवाब दिया?"

"उसने कहा है कि मैं तो अब बड़ी हो गयी हूँ।"

"ओह तब तुम अपनी नानी के साथ आओ क्योंकि उसके पास तुम्हारे लिये बहुत सारी सुन्दर सुन्दर भेंटें हैं।" यह कहते हुए उसने उस लड़की को पकड़ लिया।

वह उसको अपने घर ले गयी और मुर्गीखाने में बन्द कर दिया। वह वहाँ उसको रोज खूब अच्छा खाना खिलाती रही ताकि वह खा खा कर मोटी हो जाये।

कुछ दिनों के बाद उस चुड़ैल ने सोचा कि अब वह उसको जा कर देख कर आये कि वह कैसी हो गयी है। उसने वहाँ पहुँच कर उस लड़की से कहा — "ज़रा मुझे अपनी छोटी उँगली तो दिखाओ।"

लड़की ने उस मुर्गीखाने में रहने वाले एक चूहे को पकड़ रखा था सो उसने उस चुड़ैल को अपनी छोटी उँगली दिखाने की बजाय उस चूहे की पूँछ दिखा दी।

वह चुड़ैल बोली — "अरे तुम तो अभी भी बहुत पतली हो। तुम ठीक से खाना खाती रहो।"

पर कुछ देर बाद ही वह चुड़ैल उस लड़की को खाने का मन रोक नहीं पायी सो वह उसको वहाँ से निकाल कर ले गयी और बोली — "बेटी तुम तो बहुत तन्दुरुस्त हो। मैं स्टोव जलाती हूँ ताकि मैं अपने लिये डबल रोटी बना सकूँ।"

कह कर उसने स्टोव जलाया और डबल रोटी बनाने की तैयारी करने लगी। चुड़ैल ने डबल रोटी का आटा मला और लड़की से डबल रोटी का आटा स्टोव के अन्दर रखने को कहा तो लड़की बोली — "नानी, मुझे आटा स्टोव में रखना नहीं आता।"

"मैं बताती हूँ आटा स्टोव में अन्दर कैसे रखते हैं। यह आटा इधर खिसका दो।" लड़की ने आटा उसके पास खिसका दिया और उस चुड़ैल ने उस आटे को ओवन में रख दिया।

चुड़ैल फिर बोली — "अच्छा अब वह बड़ी वाली प्लेट उठा लो जिससे मैं यह ओवन बन्द कर दूँ।"

"नानी वह प्लेट तो बहुत बड़ी है मैं उसे कैसे उठाऊँ?"

चुड़ैल बोली — "अच्छा ठीक है उसे भी मैं ही उठा लेती हूँ।"

जब वह भारी प्लेट उठाने के लिये झुकी तो लड़की ने उसकी टाँगें पकड़ कर उसको ओवन में धकेल दिया और फिर उसने वही बड़ी प्लेट उठा कर ओवन बन्द कर दिया जिस से वह चुड़ैल उस ओवन में बन्द हो गयी और मर गयी।

यह सब कर के वह वहाँ से अपने घर भाग ली अपनी माँ से यह कहने के लिये कि अब उस चुड़ैल की बन्द गोभी का सारा खेत उनका था।

18 होशियार लड़की[76]

होशियार स्त्रियों की यह कहानी इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक शिकारी था जिसके एक पत्नी और दो बच्चे थे – एक बेटा और एक बेटी। वे सब एक जंगल में रहते थे जहाँ कभी कोई नहीं आता था। इसलिये वे दुनियाँ के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। कभी कभी उनक पिता ही शहर जाया करता था और वहाँ से खबरें लाया करता था।

एक बार एक राजा का बेटा शिकार खेलने निकला तो जंगल में रास्ता भटक गया। और जब वह अपना रास्ता ढूँढ रहा था कि रात हो गयी। वह थका हुआ था और भूखा था। ज़रा सोचो कि उसे कैसा लग रहा होगा।

पर तभी दूर उसने एक रोशनी चमकती हुई देखी तो वह उसकी तरफ बढ़ चला और शिकारी के घर आ गया। वहाँ आ कर उसने कुछ खाने के लिये और रहने की जगह माँगी।

शिकारी ने तुरन्त ही उसे पहचान लिया तो वह बोला — "योर हाईनैस। हमने तो हमारे पास जो कुछ था वह खा लिया है पर अगर हम आपके लिये कुछ भी ला सकें तो आप मेहरबानी कर के उससे सन्तुष्ट हो जाइयेगा। हम क्या कर सकते हैं? हम शहर से बहुत दूर

[76] The Clever Girl. A Tale from Italy

रहते हैं। हम तो वह चीज़ भी रोज रोज नहीं ला सकते जो हमें रोज चाहिये।"

इस बीच उसके पास एक मुर्गा पका हुआ रखा हुआ था। राजकुमार उसको अकेला नहीं खाना चाहता था सो उसने शिकारी के परिवार को बुलाया। मुर्गे का सिर उसने शिकारी को दिया। उसकी पीठ उसकी माँ को दी। टाँगें उसके बेटे को दीं। उसके पंख बेटी को दिये और बाकी बचा हुआ उसने खुद खा लिया।

इस घर में केवल दो पलंग थे जो एक ही कमरे में थे। बूढ़े लोग तो घुड़साल में जा कर सो गये। उन्होंने अपना कमरा राजकुमार को दे दिया था।

जब लड़की ने देखा कि राजकुमार सो गया तो उसने अपने भाई से कहा — "मैं तुमसे शर्त लगाती हूँ कि तुम यह नहीं बता पाओगे कि राजकुमार ने जिस तरह से मुर्गे का हम सब में बाँटा उस तरह से उसने क्यों बाँटा।"

"क्या तुम जानती हो? तो मुझे बताओ।"

लड़की बोली — "उसने मुर्गे का सिर पिता जी को इसलिये दिया क्योंकि वह परिवार के सरदार हैं। उसकी पीठ माँ को इसलिये दी क्योंकि घर की सारी जिम्मेदारी उनके ऊपर है। तुमको टाँगें उसने इसलिये दीं ताकि तुम जल्दी जल्दी बाहर के काम कर सको। पंख उसने मुझे इसलिये दिये ताकि मैं उड़ कर अपने लिये अपना पति पकड़ सकूँ।"

राजकुमार ने तो केवल बहाना बना रखा था सोने का। वह अभी सोया नहीं था। वह तो अभी तक जाग हुआ था। वह ये सब बातें सुन रहा था। लड़की की बातों से उसे लगा कि यह लड़की तो बड़ी होशियार है। वह सुन्दर भी थी सो वह उससे प्रेम करने लगा।

अगले दिन सुबह उसने शिकारी का घर छोड़ दिया और दरबार में पहुँचा। तुरन्त ही उसने शिकारी के लिये पैसों का एक थैला भेजा और लड़की के लिये उसने पूरे चाँद की शक्ल का एक केक भेजा। 30 पैटीज़ भेजीं और एक पका हुआ मुर्गा भेजा जिनके साथ तीन सवाल थे —

जंगल में क्या वह महीने की 30वीं रात थी या चाँद पूरा था और क्या मुर्गा रात को बोला था।"

अब नौकर हालाँकि बहुत ही विश्वास वाला था पर फिर भी उस खाने को देख कर उसके मुँह में पानी भर आया। उसने उनमें से पन्द्रह पैटीज़ तुरन्त ही खा लीं। एक अच्छा बड़ा टुकड़ा केक का खा लिया और सारा मुर्गा खा लिया।

नौजवान लड़की सब समझ गयी। उसने राजकुमार को वापस सन्देश भेजा – चाँद पूरा नहीं था उतार पर था। 15वीं रात थी और मुर्गा चक्की पर गया था।" उसके बाद उसने लिखा था कि चिड़िया को तीतर के लिये माफ कर दिया जाये।

राजकुमार ने उसके सन्देश का मतलब समझ लिया। उसने नौकर को बुलाया और डाँटते हुए कहा — "अरे ओ रोग। तूने

मुर्गा भी खा लिया पन्द्रह पैटीज़ भी खा लीं और एक बड़ा टुकड़ा केक का भी खा लिया। उस लड़की को धन्यवाद दे कि उसने तेरी जान बचा ली वरना मैं तुझे अभी फाँसी पर लटकवा देता।"

X X X X X X X

इसके कुछ महीने बाद शिकारी को कहीं से एक सोने की ओखली मिल गयी तो उसने सोचा कि वह उसको राजकुमार को दे आता है। पर उसकी बेटी बोली — "पिता जी आपकी इस भेंट पर आपकी हँसी उड़ायी जायेगी। पता है राजकुमार क्या कहेंगे "यह ओखली तो बहुत सुन्दर और अच्छी है पर इसका मूसल कहाँ है।"

पिता ने अपनी बेटी की बातों पर ध्यान नहीं दिया और वह सोने की ओखली राजकुमार को देने के लिये चल दिया। पर जब वह राजकुमार के पास पहुँचा तो वैसा ही हुआ जैसा उसकी बेटी ने कहा था।

राजकुमार का जवाब सुन कर शिकारी के मुँह से निकला — "ओह। यही मेरी बेटी ने कहा था। काश मैंने उसकी बात सुनी होती।"

यह सुन कर राजकुमार की उत्सुकता बढ़ गयी उसने तुरन्त ही पूछा — "आपकी बेटी ने क्या कहा था।"

"यही योर मैजेस्टी जो आपने अभी कहा।"

राजकुमार बोला — "अगर तुम्हारी बेटी अपने आपको इतना ही होशियार समझती है तो उससे कहना कि वह चार औंस रुई से मेरे लिये सौ ऐल[77] लम्बा कपड़ा बुन कर दे। अगर वह नहीं बना कर देगी तो मैं तुम दोनों को फाँसी पर लटकवा दूँगा।"

पिता बेचारा रोता हुआ घर वापस आया। उसको यकीन था कि बस अब दोनों पिता और बेटी मर जायेंगे। जब उसकी बेटी उससे मिलने आयी तो उसने पिता से पूछा — "पिता जी आप रो क्यों रहे हैं।"

पिता ने उसे बताया कि वह क्यों रो रहा था। तो वह सुन कर बोली — "अरे पिता जी बस इतनी सी बात। आप मुझे रुई ला कर दे दें और बाकी मैं सँभाल लूँगी।"

पिता ने उसे रुई ला कर दे दी तो उसने उसकी चार रस्सियाँ बनायीं और अपने पिता को राजकुमार को देने के लिये कहा और कहा कि उनसे जा कर कहियेगा कि जब भी इसमें से वह धागा बनवा लेंगे मैं सौ ऐल कपड़ा बुन दूँगी।"

राजकुमार ने जब यह जवाब सुन उसको तो यही समझ नहीं आया कि वह इसके जवाब में क्या कहे। फिर उसने पिता और बेटी को सजा देने के बारे में बिल्कुल नहीं सोचा।

अगले दिन वह लड़की से मिलने जंगल गया। उसकी माँ तो मर गयी थी और उसका पिता खेत पर उसे खोदने गया हुआ था।

[77] One Ell = 18". So 100 Ell long means 50 yards.

राजकुमार ने दरवाजा खटखटाया पर दरवाजा किसी ने नहीं खोला। उसने दरवाजा और ज़ोर से खटखटाया पर फिर भी किसी ने दरवाजा नहीं खोला। वह लड़की तो उसकी तरफ से जैसे बहरी थी।

अन्त में जब वह बाहर इन्तजार करते करते थक गया तो उसने पैर मार कर दरवाजा तोड़ दिया और अन्दर जा कर बोला — "ओ बेशऊर लड़की तुझे यह किसने सिखाया कि मेरे जैसे आदमी के लिये तू दरवाजा न खोले। तेरे माता पिता कहाँ हैं।"

"किसको पता था कि वहाँ आप हैं। मेरे पिता तो वहीं हैं जहाँ उन्हें होना चाहिये और मेरी माँ अपने पापों के लिये रो रही है। अब आप यहाँ से चले जायें क्योंकि मुझे आपकी बात सुनने की बजाय और भी काम करने हैं।"

यह सुन कर राजकुमार गुस्से में भर कर वहाँ से चला गया और उसके पिता से उसकी बेटी के भद्दे व्यवहार की शिकायत की पर पिता ने उसे माफ कर दिया।

आखिर में यह देख कर कि लड़की कितनी होशियार थी उसने उससे शादी कर ली। शादी बड़े धूमधाम से हुई पर इसमें एक घटना घट गयी जिससे राजकुमारी बेचारी परेशानी में फँस गयी।

एक रविवार को दो किसान चर्च जा रहे थे। उनमें से एक किसान के पास एक हाथ गाड़ी थी और दूसरे के पास एक गधी थी जिसको बच्चा होने वाला था।

मास के लिये घंटी बजी तो दोनों चर्च में घुस गये। गाड़ी वाले ने अपनी गाड़ी बाहर छोड़ दी थी और गधी वाले ने अपनी गधी गाड़ी से बाँध दी थी।

जब वे लोग चर्च में थे तो गधी ने बच्चा दे दिया। अब गधी का मालिक और गाड़ी का मालिक दोनों ही यह कहने लगे कि गधी का बच्चा मेरा है।

जब मामला नहीं सुलझा तो वे राजकुमार के पास गये। राजकुमार ने फैसला सुनाया कि गधी का बच्चा गाड़ी वाले का है। उसका कहना था कि इस बात की ज़्यादा सम्भावना थी कि गधी के मालिक ने गधी को गाड़ी से बाँध दिया हो ताकि वह गधी के बच्चे पर अपना झूठा दावा कर सके। बजाय इसके कि गाड़ी वाले ने अपनी गाड़ी गधी के साथ बाँधी हो।

गधी का मालिक अपने अधिकार के लिये पक्का था। सारे लोग भी उसी की तरफ थे। पर राजकुमार ने तो उसके लिये सजा सुना दी थी और अब कहने के लिये कुछ रह नहीं गया था।

गधी का मालिक बेचारा राजकुमारी के पास गया। तो राजकुमारी ने उसे सलाह दी कि वह शहर के चौराहे पर अपना मछली पकड़ने वाला जाल डाल दे। राजकुमार वहाँ से जरूर गुजरेगा और उसे देखेगा।

उसने वैसा ही किया। जब राजकुमार उधर से गुजरा तो उसने गधी के मालिक से पूछा — "यह तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

गधी के मालिक ने जवाब दिया — “योर मैजेस्टी। मैं यहॉ मछलियॉ पकड़ रहा हूॅ।”

राजकुमार बोला — “तुम बेवकूफ हो। तुम क्या समझते हो कि तुम्हें यहॉ चौराहे पर मछलियॉ मिल जायेंगी?”

गधी के मालिक ने जैसा राजकुमारी ने उसे सिखाया था उसी तरह से जवाब देते हुए कहा — “मेरे लिये चौराहे पर मछलियॉ पकड़ना आसान है बजाय उस गाड़ी के जिसने गधे का बच्चा दिया हो।”

यह सुन कर राजकुमार ने उसकी सजा वापस ले ली पर जब वह महल वापस आया तो यह जानते हुए कि यह जवाब राजकुमारी का था उसने राजकुमारी को तुरन्त ही बुलाया। उसके आ जाने पर उसने उससे कहा — “अब तुम एक घंटे के अन्दर अन्दर अपने घर जाने के लिये तैयार हो जाओ। तुम अपने साथ अपनी एक सबसे प्रिय चीज़ को ले जा सकती हो।”

राजकुमारी को यह सुन कर कोई दुख नहीं हुआ। उसने रोज से ज़्यादा अच्छी तरह से खाना खाया। राजकुमार के लिये शराब बनायी जिसमे उसने थोड़ी सी सोने की दवा मिल दी।

जब वह गहरी नींद सो गया तो उसको एक गाड़ी में डलवाया और अपने घर ले गयी। यह जनवरी का महीना था सो उसके घर की छत खुली पड़ी थी। रात को जब बर्फ पड़ी तो वह राजकुमार के ऊपर भी पड़ी।

राजकुमार ने उससे पूछा — "यह सब क्या है।"

पत्नी बोली — "यह मैं हूँ। आपने कहा था कि में अपनी सबसे प्रिय चीज़ ले कर अपने घर चली जाऊँ सो मैं आपको ले कर अपने घर आ गयी।"

राजकुमार यह सुन कर बेतहाशा हँस पड़ा। उसके बाद दोनों में सुलह हो गयी। राजकुमार राजकुमारी को ले कर महल चला गया।

19 गुलाम बादशाह और उसका बेटा गुल[78]

एक बार की बात है कि एक बादशाह था जिसका नाम गुलाम था। उसका एक अकेला बेटा था जिसका नाम गुल था। बचपन से ही वह जंगलों और मैदानों में जाने का शौकीन था। और अब हालाँकि वह बड़ा हो गया था फिर भी उसका बहुत सारा समय शिकार में ही बीतता था।

उसका पिता बादशाह अपने बेटे की यह दशा नहीं देख सकता था। वह इसके बारे में बहुत चिन्तित रहता था। सो एक दिन उसने अपने वज़ीरों को एक साथ बुलाया और उनसे कहा — "मेरा बेटा अब शादी के लायक हो गया है। उसके लिये कोई लड़की ढूँढो और शादी कर के उसको ज़िन्दगी में स्थिर हो जाने दो।"

वज़ीरों ने उसके लिये लड़की बेकार ही ढूँढी क्योंकि शाहज़ादे ने अपना शिकार का प्रोग्राम नहीं छोड़ा। जब वह शाम को शिकार से वापस लौटता तो बादशाह उसे रोज ही समझाता पर उसकी समझ में ही नहीं आता और बादशाह का समझाना बेकार ही जाता।

एक दिन बादशाह ने कहा — "अगर तुम शादी नहीं करोगे तो हर आदमी यही कहेगा कि कोई तुमसे अपनी बेटी की शादी करना

[78] Gholam Badshah and His Son Ghool. Taken from the book "Indian Nights Entertainment" by Charles Swynnerton. 1892. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

नहीं चाहता। इससे तुम्हारी बदनामी भी होगी और अपमान भी होगा।"

शाहज़ादा जवाब देता — "पर मैं शादी नहीं करना चाहता।"

और फिर मामला अगले दिन के लिये टल जाता।

एक दिन मौसम बहुत गर्म था। शाहज़ादा रोज की तरह शिकार पर था। शिकार से थक कर वह घर वापस आ रहा था कि सुस्ताने के लिये एक कुँए पर रुक गया। वहाँ कुछ लड़कियाँ पानी भर रही थीं कि उसने उनमें से एक लड़की से कहा कि वह उसे पानी पिला दे।

एक चटपटी नौजवान लड़की ने उससे कहा — "तो तुम ही वह शाहज़ादे हो जिससे कोई लड़की शादी नहीं करना चाहती।"

शाहज़ादा गुल यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ। उसने वह पानी लेने से भी मना कर दिया जो वह लड़की उसे पिला रही थी। वह उठा और वहाँ से चला गया। वह अपने मन में सोच रहा था कि आज वह अपने पिता से कहेगा कि वह शादी करेगा और उसी लड़की से करेगा जिसने उसे ताना मारा था।

आगे चलने पर उसे एक बुढ़िया मिली तो उसने उससे पूछा कि वह लड़की कौन थी। किसकी बेटी थी। बुढ़िया बोली कि वह अलीम लोहार की बेटी थी। शाहज़ादे ने सोचा कि वह चाहे किसी राजा की बेटी हो या फिर लोहार की इस बात से उसे कोई मतलब नहीं वह तो बस उसी लड़की से शादी करेगा।

शाम को जब वह घर पहुँचा तो उसके पिता ने फिर उससे शादी की बात छेड़ी तो यह जान कर बहुत खुश हुआ कि वह शादी करने पर राजी हो गया है। सो उसने अपने वज़ीरों को एक बार फिर बुलाया और उनसे कहा कि वे उसकी शादी का इन्तज़ाम करें। उसके लिये कोई अच्छी लड़की ढूँढें।

वज़ीर बोले — "आप हमें राजा का नाम बतायें जिससे आप अपना रिश्ता जोड़ना चाहते हैं हम लोग उसी राजा के दरबार चले जाते हैं। और फिर शाहज़ादे साहब अपनी दुलहिन को वहीं से ले आयेंगे।"

पर शाहज़ादे ने जवाब दिया — "आपको बाहर किसी लड़की को ढूँढने की जरूरत नहीं है। मैंने अपनी दुलहिन चुन ली है। मैं अलीम लोहार की बेटी से शादी करूँगा।"

यह सुनते ही बादशाह गुस्से से भर गया। वह गुस्से से भर कर बोला — "क्या। क्या मेरी कुलीनता अब उस नीच गिरे हुए खानदान से जुड़ेगी।"

वज़ीरों ने चतुराई से बादशाह को जवाब दिया — "हुजूर क्या फर्क पड़ता है। यह तो केवल नौजवानों का सपना है। आप उन्हें उस लड़की से शादी करने दीजिये। इस बीच हम उनकी हैसियत के अनुसार एक और दूसरी लड़की ढूँढ लेंगे।"

बादशाह शान्त हो गया और उसने अपने बेटे गुल के लिये उस लोहार की बेटी को लाने का आदेश दिया। जब वे उस गरीब

आदमी के घर चले गये तो लोहार ने बड़े दुख से अपने हाथ जोड़े और पूछा — "बादशाह मुझसे पूछ क्यों रहे हैं जबकि वह मुझे हुक्म दे सकते हैं। पर क्योंकि वह मुझसे पूछ रहे हैं तो मैं उसे अपने आपसे अलग नहीं करना चाहता।"

लोहार का यह जवाब बादशाह तक पहुँचा दिया गया जिसे इस मामले में ना तो सुननी ही नहीं थी। उसने हुक्म दिया कि लोहार से कहो कि वह अपनी बेटी को दो महीने के अन्दर अन्दर मेरे पास भेज दे।

लड़की खुद यह सोचती थी कि वह इस सौभाग्य के लायक ही नहीं थी सो उसने अपने पिता से विनती की कि वह बादशाह से एक साल की इजाज़त माँग लें। लोहार की यह बात मान ली गयी और बादशाह ने कह दिया कि उसका यह समय एक साल के लिये बढ़ाया जाता है।

वह बोली — "यह बड़े दुख की बात है कि मैं केवल एक लोहार की बेटी हूँ। जब मैं शाहज़ादे की पत्नी बन जाऊँगी तो मैं ऐसा क्या करूँ कि लोगों के दिलों में हमारे लिये भी कोई इज़्ज़त हो। मै देखती हूँ कि मैं अपनी अक्लमन्दी बादशाह के सलाहकारों पर भी जाँच सकती हूँ या नहीं।"

उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी। हमारे खेत के तरबूज अभी छोटे हैं। मैं कुछ बिना पके हुए घड़े बनाती हूँ फिर मैं उन्हें रंग दूँगी।

फिर हर एक में मैं एक एक छोटा फल डाल दूँगी और उन्हें उनमें बढ़ने दूँगी। जब वे पूरे बढ़ जायेंगे तब मैं बादशाह के वज़ीरों को य्ह चुनौती दूँगी कि वह बर्तन को बिना तोड़े उस फल को बाहर निकाल दें। तब हम देखेंगे कि बादशाह के वज़ीर लोग ज़्यादा अक्लमन्द हैं या फिर हमारे लोग।"

लड़की ने जैसा कहा था वैसा ही किया। उसने कच्ची मिट्टी के कुछ बर्तन बनाये और उनमें हर एक में एक एक छोटा तरबूज रख दिया। बर्तनों को रंग दिया।

जब तरबूज बढ़ गये पक गये तो उसने दो बर्तन बादशाह के पास भेजे और उनको लिखा कि वह अपने वज़ीरों से कहें कि वे बर्तन को बिना तोड़े तरबूज बर्तन से बाहर निकाल दें।

बादशाह ने अपने वज़ीरों को वह चिट्ठी पढ़ कर सुनायी और उनसे कहा कि वे अपनी अपनी अक्लमन्दी दिखायें। वज़ीरों की सारी कोशिशें बेकार गयीं वे उनमें से किसी भी तरबूज को बिना बर्तन तोड़े बर्तन में से नहीं निकाल सकते थे।

दो तीन दिन तक वे कोशिश करते रहे पर उनसे तरबूज नहीं निकला। उन्हें यह भी पता नहीं चला कि वह बर्तन कच्ची मिट्टी का था पका हुआ नहीं था। हालॉकि इसको वे उसे बजा कर आसानी से पता लगा सकते थे पर यह उनके दिमाग में आया ही नहीं।

आखिर बादशाह ने वे दोनों बर्तन लोहार की लड़की को वैसे के वैसे ही यह कहते हुए वापस भेज दिये कि "मेरे देश में इतना अक्लमन्द कोई आदमी नहीं है।"

लड़की तो यह खबर सुन कर बहुत खुश हो गयी।

जब उसने वे बर्तन अपने हाथ में लिये तो वह बोली — "अब मेरी समझ में आया कि ये बादशाहों के दरबारी क्या होते हैं और बादशाह भी क्या होते हैं।"

उसने दरबार को एक विनती की कि वह दरबार में हाजिर होना चाहती है। और जब वह वहाँ पहुँची तो उसने एक बहुत ही गीला कपड़ा लिया और उसे बर्तन के चारों तरफ लपेट दिया और तब तक उसे वहाँ रखे रही जब तक वह मिट्टी बहुत मुलायम नहीं हो गयी।

फिर उसने उन बर्तनों की गरदनें खींच कर उन बर्तनों में से तरबूज निकाल लिये। फिर उसने उन गरदनों को उसी जगह लगा भी दिया जिससे वे फिर से पहले जैसे बर्तन बन गये।

उसने वे बर्तन वज़ीरों को वे बर्तन दे कर कहा — "कोई आदमी अपने शब्दों से पहचाना जाता है और कोई बर्तन अपनी आवाज से पहचाना जाता है।

जैसे किसी मिट्टी के बर्तन के असली स्वभाव को तुम उसकी आवाज से ही पहचान सकते हो इसी तरह से मैंने तुम्हें बजा कर देख लिया और मैंने देख लिया कि तुम लोगों के अन्दर कोई गहराई नहीं

है। और अब जबकि एक साल पूरा हो गया है बादशाह के हुक्म का पालन किया जायेगा।"

जब एक साल पूरा होने को था तो लोहार ने बादशाह से विनती करते हुए लिखा कि उसके पास साधन बहुत कम हैं इसलिये वह कम मेहमानों का ही स्वागत कर पायेगा। बादशाह ने कहा कि "मेरे दरबार से चार सौ लोग शादी में आयेंगे पर इन सबका खर्चा तुम्हें मैं दूँगा सो तुम पैसे की चिन्ता न करो।"

कह कर उसने उसे सब लोगों के लिये पैसे भिजवा दिये।

आखिर शादी का दिन आ गया। लोग इकट्ठे होने शुरू हुए। पर लोहार को लगा कि बादशाह का भेजा हुआ पैसा कम था वह यह सोचते हुए कि यहाँ पर बहुत सारे लोग हैं एक कुलीन आदमी के पास गया और अपनी परेशानी बतायी।

कुलीन आदमी ने कहा कि वह पैसा वह लड़की को उसके दहेज में दे दे और उसे लड़की के साथ बादशाह को भेज दे। इस बीच उसने दरबारी लोगों से बात की तो वे सब उस शादी में लोहार की सहायता करने के लिये तैयार हो गये। शादी की दावत अच्छे से निबट गयी।

जब सब खत्म हो गया। शाहज़ादा और लोहार की बेटी की शादी हो गयी। बादशाह अपनी बारात ले कर अपने महल वापस चले गये। दुलहिन और दहेज दोनों बादशाह के घर चले गये और नये दुलहे और दुलहिन को उनके अपने महल में ठहरा दिया गया।

दो तीन दिन के गुजर जाने के बाद एक सुबह शाहज़ादा गुल बहुत जल्दी उठा और उसन अपना कोड़ा उठा कर उस लड़की को बड़ी निर्दयता से पीटना शुरू कर दिया।

वह बोला — "यह तुम्हारा मेरे ऊपर उधार था उस ताने का जो तुमने मुझे कुँए पर मारा था।"

लड़की बेचारी वह मार चुपचाप सहती रही। अब हर दो तीन दिन बाद यही दृश्य दोहराया जाता। शाहज़ादा अपने हाथ से अपनी दुखी पत्नी के कन्धों पर मारता और उसके साथ बुरा व्यवहार करता।

एक सुबह जब शाहज़ादा उठा और उसे मारने ही वाला था तो लड़की बोली — "एक गरीब काम करने वाले आदमी की बच्ची को इस तरह मार कर तुम्हारी कौन सी शान बढ़ती है।

अगर तुम आदमी हो तो किसी राजा की लड़की से शादी कर के दिखाओ। अगर तुम जीत सकते हो तो उसे जीत कर दिखाओ और हिम्मत हो तो उसे इस तरह मार कर दिखाओ। क्या तुम मुझे केवल इसी लिये मारते हो क्योंकि मैं एक लोहार की बेटी हूँ।"

यह ताना सुन कर शाहज़दे को इतना बुरा लगा कि उसने अपने हाथ से अपना कोड़ा फेंक दिया। और प्रण किया कि वह घर के अन्दर तब तक नहीं घुसेगा जब तक वह किसी राजा की बेटी से शादी नहीं कर लेगा।

अब पड़ोसी राज्य के राजा की एक लड़की थी जो अभी अभी अपनी सुन्दरता के लिये मशहूर हुई थी हालाँकि वह बोल नहीं सकती थी। तो शाहज़ादे ने उसी लड़की से शादी करने का विचार किया।

उसने अपना एक विश्वासपात्र दास चुना अपना घोड़ा लिया कई खच्चरों पर बहुत कीमते गहने और जवाहरात लादे और उस पड़ोसी राजा के दरबार की ओर चल दिया।

वह धीरे धीरे चलता रहा जब तक कि वह उसके दरबार में नहीं पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर उसने जब शाहज़ादी के बारे में कुछ जानकारी मालूम करनी चाही तो उसे इसके सिवा कुछ और ज़्यादा नहीं मालूम पड़ सका कि वह बोल नहीं सकती।

इसके अलावा कि उससे पहले जो भी कोई शाहज़ादा उससे शादी करने की इच्छा से आया उसे उसके साथ शतरंज खेलनी पड़ी। उससे हार जाने पर जो बहुत कड़ी कड़ी सजाऐं उनको भुगतनी पड़ीं वे वर्णन से बाहर थीं।

फिर भी शाहज़ादे गुल को अपनी होशियारी पर इतना भरोसा था कि उसने निडर हो कर अपने दास को शाहज़ादी के पास यह समाचार ले कर भेजा कि वह आया हुआ है और उससे शादी के लिये उसका हाथ माँगा।

शाहज़ादी ने कहा — "यह बहुत जरूरी है कि तुम्हारे मालिक शर्तों को समझ लें। हमारे बीच तीन बाजियाँ होंगी। अगर वह

पहली बाजी हार जाते हैं तो वह अपना घोड़ा हारेंगे। दूसरी बाजी हारने पर उनका सिर मेरी दया पर होगा। और अगर वह तीसरी बाजी भी हारेंगे तो यह मेरा अधिकार होगा कि मैं उन्हें अपनी घुड़साल में अपने सईस की जगह दे दूँ।"

शाहज़ादे ने तुरन्त ही उसकी तीनों शर्तें मान लीं। इस घटना की सारे शहर में मुनादी पिटवा दी गयी।

जब शहर वालों ने जानी पहचानी मुनादी की आवाज सुनी तो सबके मुँह से एक आह निकल गयी। वे बोले — "अब "अन्धी बुद्धि" का मारा एक और आदमी शाहज़ादी से शादी करने आ गया। जैसे और लोग हार चुके हैं वैसे ही यह भी हार जायेगा।"

जब शाहज़ादा महल में आया तो उसे अन्दर बुलाया गया। वहाँ शाहज़ादी एक बहुत ही कीमती कालीन पर बैठी हुई थी और शतरंज उसके सामने बिछी हुई थी।

खेल शुरू हुआ तो शाहज़ादा पहली बाजी हार गया फिर दूसरी और फिर तीसरी बाजी भी हार गया। उसे हरा कर शाहज़ादी बोली — "जाओ ओ बहाने बनाने वाले। तुम भी अपने से पहले आने वाले लोगों के पास जाओ। तुम केवल मेरे सईस बनने के लायक हो।" सो यह अभागा उम्मीदवार भी उसके एक घोड़े का सईस बन गया।

कुछ समय निकल गया कि लोहार की बेटी ने देखा कि उसका पति उसके पास कई दिनों से नहीं आ रहा। उसने सोचा कि वह देखेगी कि उसका क्या हुआ।

उसने एक कुलीन नौजवान का वेश बनाया। अपने इस नये वेश में वह बहुत सुन्दर और आकर्षक लग रही थी। कई मील लम्बी यात्रा के बाद वह एक चौड़ी और गहरी नदी के पास आयी। जब वह उसे पार करने के लिये वहाँ एक नाव का इन्तजार कर रही थी उसने देखा कि पानी धारा में एक चूहा बहा जा रहा था।

वह डूबता हुआ चूहा चिल्लाया — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। मेरी जान बचाओ।"

लोहार की बेटी ने सोचा "कोई चूहा मेरी क्या सहायता करेगा फिर भी मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।" सोच कर उसने अपने भाले की नोक पानी के अन्दर कर दी। चूहा उस पर चढ़ गया। लड़की ने भाला खींच लिया और चूहा भाले के साथ साथ बाहर आ गया।

पानी टपकते हुए प्राणी को उसने सँभाल कर अपने घोड़े वाले थैले में रख लिया।

चूहे ने पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

लड़की ने जवाब दिया — "मैं न बोल पाने वाली शाहज़ादी के राज्य जा रहा हूँ।"

चूहा बोला — "पर वहाँ जाने का फायदा क्या है? तुम्हें वहाँ क्या मिलेगा शाहज़ादी के पास एक जादू की बिल्ली है। उस जादू

की बिल्ली के सिर पर एक जादू की रोशनी है जिसकी वजह से उसे कोई देख नहीं सकता।

इस तरह बिना दिखायी दिये वह बिल्ली शाहज़ादी के पास जितने भी उम्मीदवार आते हैं और उसके साथ शतरंज खेलते हैं उन सबके मोहरों को इधर उधर कर देती है और सब उससे हार जाते हैं।"

यह सुन कर लोहार की बेटी उसे प्यार से सहलाने लगी और उसके साथ खेलने लगी।

फिर उसने चूहे से कहा — "मेहरबानी कर के तुम मेरी सहायता करो क्योंकि मैं भी उस शाहज़ादी के साथ शादी कर के अपनी किस्मत बनाना चाहता हूँ।"

उसी पल उसके दिमाग में यह भी आया कि शायद उसके पति ने वहाँ अपनी किस्मत बनाने की कोशिश की होगी पर वह यह मौका हाथ से गँवा बैठे होंगे।

इस पर चूहे ने लड़की की ओर देखा और बोला — "तुम्हारे हाथ पैर तो लड़कियों जैसे हैं हालाँकि तुमने कपड़े आदमियों जैसे पहन रखे हैं। पहले मुझे तुम यह बताओ कि क्या तुम वास्तव में एक लड़का हो या फिर मेरी ही अक्ल काम नहीं कर रही है।"

तब उसने उस छोटे से प्राणी को अपनी कहानी शुरू से ले कर आखीर तक बता दी। और साथ में यह भी बता दिया कि अब वह अपने पति शाहज़ादा गुल को पाने के लिये निकली है। वह आगे

बोली — "अब मुझे अपने पति को ढूँढने में और उनका अपना पहले वाला ओहदा और सम्मान पाने में तुम्हारी सहायता चाहिये।"

अब यह तो एक चूहा था जो किसी के किये गये उपकार को भूल नहीं सकता था बल्कि दूसरों की सहायता में ही लगा रहता था। उसने कहा — "तुम मुझे अपने कपड़ों में छिपा कर अपने साथ ले चलो। और अगर तुम मेरी सलाह मानोगी तो तुम शाहज़ादी को जरूर हरा दोगी और तुम्हारी इच्छाऐं जरूर पूरी हो जायेंगी।"

उसके बाद चूहे ने शाहज़ादी को जीतने के लिये कुछ निर्देश दिये। इस तरह आनन्ददायक बातें करते करते वे शाहज़ादी की राजधानी पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने आराम किया।

अगले दिन लोहार की बेटी को शाहज़ादी के कमरे में ले जाया गया तो उसने शाहज़ादी से बात ऐसे शुरू की कि वह शाहज़ादी की जगह बैठना चाहेगा और शाहज़ादी उसकी जगह बैठे। उसकी विनती मान ली गयी। इस तरह वह उस तरफ बैठ गयी जिस तरफ से शाहज़ादी की बिल्ली उस कमरे में आया करती थी।

खेल शुरू हुआ पर बहुत जल्दी लड़की ने देख लिया कि शतरंज का बोर्ड कुछ बदल जाता था। इससे वह बराबर हार रही थी। उसने धीरे से अपने कपड़ों में से चूहा बाहर निकाला तो पर वह उसे अपनी मुट्ठी में कस कर पकड़े रही।

तुरन्त ही उसने किसी जानवर के भागने की आवाज सुनायी पड़ी। यह जानवर शाहज़ादी की बिल्ली ही थी जो उसी समय कमरे

में घुसी थी। वह अपनी मालकिन का दिया हुआ काम भूल गयी थी और चूहे के ऊपर कूदने के लिये बेचैन थी।

हालाँकि बिल्ली लड़की को दिखायी नहीं दे रही थी पर फिर भी अन्दाज से उसने उसे हाथ से उसे उस जगह मारा जहाँ वह सोचती थी कि उसकी रोशनी होगी। इत्तफाक से उसका हाथ वहीं लगा जहाँ रोशनी थी। रोशनी नीचे गिर गयी और बिल्ली अब सबको दिखायी देने लगी।

इस अचानक मार से डर कर वह सीधी उस कमरे में से बाहर भाग गयी।

जब शाहज़ादी ने यह सब देखा तो वह भी डर गयी और अपनी सुध बुध भूल गयी। अब उसे हराने में कोई मुश्किल नहीं थी। वह तीनों बाजियाँ हार गयी। उसी समय फिर से मुनादी पिटने लगी जिससे कि सारे शहर वाले जान गये कि खेल का परिणाम क्या रहा।

अब इस शाहज़ादी से शादी करने में एक शर्त और बाकी थी जिसमें उसे अपना एक हाथ देने के लिये बाध्य किया जा सकता था। उसके बाद ही उससे शादी करने वाला उससे सूरज निकलने से पहले तीन बार बोलेगा।

साथ में यह भी नियम था कि हर बार जब भी वह बोलेगी तो दासी एक ढोल पीटेगी ताकि राजा की सारी प्रजा को पता चल जाये।

चूहा लोहार की बेटी से बोला — "देखा। मैंने जो तुम्हारी सहायता की वह बेकार नहीं गयी। अब हम देखेंगे कि यह जिद्दी शाहज़ादी बोलती है या नहीं। तुम्हारे सोने की जगहों के बीच में कोई परदा भी नहीं होगा।

तुम मुझे अपने पास ही रखना और जब तुम बिस्तर में हो तो तुम मुझे खुला छोड़ देना। मैं शाहज़ादी के बिस्तर में घुस जाऊँगा और फिर तुम उसे बोलने के लिये उकसाते रहना।"

जब वे आराम करने चले गये और शाहज़ादी के महल में जा कर लेट गये तो लोहार की बेटी ने नकली आवाज में कहा — "ओ सुन्दर शाहज़ादी। मेरी ऑखों की रोशनी। क्या तुम मुझसे कुछ बोलोगी नहीं?"

शाहज़ादी ने एक भी शब्द न बोलने के लिये सोच रखा था। पर चूहे ने जो उसके पलंग की एक टॉग के पास बैठा हुआ था शाहज़ादी की आवाज में बहुत ही प्रेम से कहा — "मेरे प्यारे शाहज़ादे। तुम्हारे कहने पर तो मैं हमेशा के लिये बोल सकती हूँ।"

जब शाहज़ादी ने यह सुना तो सोचा "यह शाहज़ादा तो जादू का गुरू लगता है। कि यह मेरे पलंग की टॉग से मेरी आवाज में बुलवा सकता है और मेरी ओर से जवाब भी दे सकता है।"

तब गुस्से में भर कर कॉपती हुई वह मरी हुई लकड़ी से बोली — "कल सुबह मैं तुम्हें अपनी मालकिन का अपमान करने के लिये जलवा दूँगी।"

जिस पल दासी ने ये शब्द सुने वह मीनार पर दौड़ी गयी और मुनादी पीटने वाला ढोल बजा दिया। इसे सुन कर देश की सारी जनता बहुत खुश हो गयी।

उसी समय लोहार की बेटी खुशी से बोली — "सलाम आलेकुम। मेरे जादूगर के पलंग की टाँग को।"

इसके जवाब में चूहा बोला — "मेरे बादशाह तुमको भी वालेकुम सलाम।"

इसके कुछ देर बाद ही लोहार की बेटी गुस्से से भरी शाहज़ादी से फिर बोली — "अब यह रात तो हमें इस छत के नीचे गुजारनी ही है तो ओ प्यारी शाहज़ादी मुझे सुलाने के लिये कोई कहानी ही सुनाओ।"

अब चूहा पलंग की दूसरी टाँग की ओर चला गया था। वह तुरन्त ही बोला — "क्या मैं तुम्हें वह बताऊँ जो मैंने अपनी आँखों से देखा या फिर वह बताऊँ जो मेरे साथ घटा।"

लोहार की बेटी ने जवाब दिया — "सबसे अच्छी कहानी जिसमें दोनों हों। जो तुमने देखा भी हो और तुम्हारे साथ घटा भी हो।"

चूहा बोला — "ठीक है। अब मैं तुम्हें वह कहानी सुनाती हूँ जिसे मैंने देखा भी है सुना भी है और मेरे साथ घटा भी है। एक शहर में एक डाकू रहता था जो बहुत बड़े पैमाने पर डाके डालता था।

एक दिन उसने अपनी होशियारी किसी दूसरे शहर में जाँचने की सोची तो वह कुछ दिन के लिये किसी और शहर चला गया। अपनी पत्नी को वह घर पर ही छोड़ गया। जब उसकी पत्नी अपने घर में अकेले रह रही थी तो उसके घर में एक चोर आया। तुम मुझे ठीक से सुनते रहना सो मत जाना।

इस चोर ने उस स्त्री के साथ कुछ ऐसी चाल खेली कि उसने उस चोर को अपना पति समझ लिया और उसे अपने घर में घुसा लिया। उसके पति को घर छोड़े हुए काफी दिन बीत गये थे।

आखिर उसका पति घर आया तो उसने देखा कि एक चोर उसके घर में रह रहा था। उसने सोचा "क्या यह मेरी पत्नी का कोई सम्बन्धी है जो हमारे घर में आ कर रुका है?"

खैर उसने उसे सलाम किया और घर के अन्दर घुसा तो चोर ने चालाकी से उससे पूछा — "जनाब आप कौन हैं?"

पति बोला — "यह मेरा घर है। मेरी पत्नी यहाँ रहती है।"

चोर बोला — "नहीं। यह स्त्री जो यहाँ रहती है वह तुम्हारी पत्नी नहीं है वह तो मेरी पत्नी है। तुम तो कोई बुरे आदमी लगते हो। मैं अभी पुलिस को बुलाता हूँ और अभी तुम्हारी पिटायी करवाता हूँ।"

पति यह सुन कर हक्का बक्का रह गया। उसने अपनी पत्नी से पूछा — "क्या तुम मुझे नहीं जानतीं प्रिये। मैं तुम्हारा पति।"

स्त्री बोली — "नहीं यह ठीक नहीं है। तुम मेरे पति नहीं हो मैं तुम्हें नहीं जानती। मैंने तो पहले कभी तुम्हें देखा भी नहीं। यही मेरे पति हैं।"

पति बोला — "अरे वाह। यह तो बड़ी ज़ोरदार बात निकली।" उस समय वह किसी दूसरी जगह सोने चला गया।

अगली सुबह बहुत सारे पड़ोसी इकट्ठे हुए और उन्होंने पति का पुराने दोस्त की हैसियत से उसका स्वागत किया और पत्नी से कहा — "तुमसे शायद कहीं गलती लग गयी है। यही तुम्हारा असली पति है वह दूसरा वाला नहीं।"

दोनों के बीच लगातार झगड़ा चलता रहा सो दोनों जज के पास पहुँचे जहाँ स्त्री ने यह कह कर सारा झगड़ा सिलटा दिया कि चोर ही उसका पति था क्योंकि वही उसको घर के लिये सबसे ज़्यादा पैसा ला कर देता था।

तब चोर ने पति से पूछा — "तुम क्या हो?"

"मैं डाकू हूँ और तुम क्या हो?"

"मैं चोर हूँ।"

चोर जो अब डाकू की पत्नी को पसन्द करने लगा था डाकू से बोला — "ऐसा करते हैं हम दोनों अपनी अपनी होशियारियों का मुकाबला करते हैं। पहले तुम मुझे यह दिखाओ कि तुम क्या कर सकते हो। और अगर तुम चाहो तो पहले मैं शुरू कर सकता हूँ। मैं चोर भी हूँ और धोखा भी दे सकता हूँ।

अगर तुम अपने डाकू के काम में मेरी चोरी और धोखाधड़ी से कुछ ज़्यादा अच्छा कर सकते हो तो यह स्त्री तुम्हारी। पर अगर ऐसा नहीं हुआ तो फिर यह स्त्री मेरी हुई।

तब चोर ने कुछ बहुत बढ़िया कपड़े खरीदे और एक पालकी में बैठा और अपने आपको एक कपड़े का व्यापारी घोषित कर दिया। जब वह वहाँ सड़कों पर घूम रहा था तो वह एक सर्राफे की दूकान पर गया जो अपने आपको बहुत ही आदरणीय समझता था अगर उसकी दूकान पर कोई ऐसा आदमी आता था जो उससे पहले से ही मशहूर होता था।

सो इस चोर को आते देख कर वह उठा और उससे सिर झुका कर सलाम किया। नकली व्यापारी ने उससे बड़ी शान से पूछा — "क्या आपके पास मोती हैं?"

सर्राफ ने जवाब दिया — "हाँ हैं हुजूर।"

चोर ने कहा — "तो मुझे आपके पास जो सबसे अच्छे वाले मोती हों वे दिखाइये।"

सर्राफ ने तुरन्त ही एक बहुत सुन्दर डिब्बा निकाला। चोर ने उसे खोला और देखा कि उसमें मोतियों की कई लड़ें रखी हुई थीं। वह उन्हें देखने लगा। देखभाल कर उसने उस डिब्बे को उसे वापस कर दिया कि ये मोती वे मोती नहीं थे जिन्हें वह चाहता था। मुझे इनसे ज़्यादा अच्छे मोती चाहिये।

"आपके पास इससे ज़्यादा अच्छे कोई और मोती नहीं हैं?"

तब सर्राफ तीन चार और दूसरे डिब्बे निकाल लाया। चोर ने उनमें से एक डिब्बा निकाला और उन मोतियों को जाँचने का बहाना किया तो उसने चुपके से उनमें से दो लड़ें निकाल कर अपनी आस्तीन में छिपा लीं।

फिर उसने सर्राफ से पूछा — "आपके पास इस किस्म के मोतियों के और कितने डिब्बे होंगे?"

"सात हैं।"

चोर बोला — "मैं जल्दी ही आपके पास फिर आऊँगा।"

कह कर वह वहाँ से उठ गया और सीधा राजा के पास पहुँचा। राजा अपने दरबार में बैठा हुआ था। वहाँ जा कर उसने राजा को सलाम किया। राजा ने उससे पूछा — "ओ व्यापारी। अब तक तुम्हारा हमारे देश में कैसा व्यापार चल रहा है।"

चोर बोला — "सरकार। आपके देश में मेरे ऐसे मोतियों के सात डिब्बे लूट लिये गये।"

राजा ने तुरन्त ही चोर को एक पहरेदार दिया और पहरेदार को हुक्म दिया कि वह उस सर्राफ की दूकान को बन्द कर के तुरन्त ही ताला लगवा दे और उसे गिरफ्तार कर लिया जाये।

जब वे दूकान पर पहुँचे तो चोर ने उसी डिब्बे की तरफ इशारा कर के कहा जिसमें से उसने मोती की लड़ें निकाली थीं "मेरे सारे डिब्बे ऐसे ही थे। सिपाहियों ने तब उससे डिब्बा ले लिया और सर्राफ को गिरफ्तार कर के राजा के पास ले गये।

चोर ने पूछा — "अगर ये डिब्बा तुम्हारा है तो इसमें मोतियों की कितनी लड़ियाँ हैं।"

सर्राफ बोला — "सौ।"

चोर बोला — "नहीं नहीं। इसमें सौ नहीं बल्कि केवल अट्ठानवे लड़ियाँ हैं।"

राजा बोला — "ठीक है। लड़ियों को गिनो।"

लड़ियाँ गिनी गयीं। दरबार ने पाया कि चोर ठीक बोल रहा था।

चोर बोला — "मेरे मोतियों के सारे डिब्बे चुरा लिये गये हैं और अब वे सब गैरकानूनी ढंग से इसी के पास हैं। अगर यह डिब्बा मेरा न होता तो मैं इसमें रखी मोतियो की लड़ियो की संख्या कैसे जानता।"

राजा बोला — "हाँ यह तो तुम सच ही कह रहे हो। यह डिब्बा तो वाकई तुम्हारा ही है।"

और उसने दूसरे डिब्बों को ला कर उन्हें भी चोर को देने के लिये कहा। सर्राफ को डंडों से मारा गया और उसे जेल में डाल दिया गया।

वह डाकू जो इस चोरी को देख रहा था यह देख कर दंग रह गया। अब वह इस तरह की चोरी को देख कर अपना डाका कैसे डाले जो वह उससे जीत जाये यही सोचता रह गया। खैर वह चोर

के साथ जुड़ गया। दोनों घर गये और स्त्री को जा कर कहानी बतायी।"

चूहा आगे बोला — "तुम्हें यह भी पता होना चाहिये कि बुद्धि का पिता यानी जिसने ये मोती एक साधारण से चोर और धोखेबाज को दिये वही इस सुन्दर शाहज़ादी का पिता भी है। यही मैंने देखा भी है और यही मैंने सुना भी है। वही मैंने तुमसे कह भी दिया।"

शाहज़ादी आखीर के शब्द सुन कर अपने आपको रोक न सकी। वह पलंग के पाये से बोली — "सुबह को तुम भी कटवा दिये जाओगे और अपने झूठ बोलने वाले भाई के साथ आग में डलवा दिये जाओगे।" बस उसका बोलना था कि दासी फिर मीनार पर गयी और ढोल बजा आयी जिसे सुन कर जनता फिर बहुत खुश हो गयी।

लोहार की बेटी तुरन्त ही हँसते हुए बोली — "सलाम आलेकुम।"

चूहे ने जवाब दिया — "वालेकुम सलाम।"

कुछ समय फिर गुजर गया तो लोहार की बेटी फिर बोली — "ओ खुश करने वाली प्राणी और सबसे ज़्यादा आकर्षक शाहज़ादी। तुमने मुझे बहुत अच्छी कहानी सुना कर मेरा दिल खुश कर दिया पर रात तो अभी भी लम्बी और कठिन है। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मुझे एक कहानी और सुना दो।"

अब तक चूहा पलंग के तीसरे पाये की तरफ जा चुका था। वह बोला — "अब मैं तुम्हें वह कहानी सुनाती हूँ जिसे मैंने अपनी आँखों से देखा भी है और अपने कानों से सुना भी है। मेरी पहली कहानी तो चोर के बारे में थी। अब तुम उस डाकू की कहानी सुनो।

अगले दिन डाकू ने चोर से कहा — "अब मेरी बारी है। इस मामले में यह बहुत जरूरी है कि तुम अपने मुँह से एक शब्द भी नहीं बोलोगे जैसे मैं तुम्हारे साथ चुप रहा नहीं तो तुम्हारा इनाम मारा जायेगा।" चोर ने उसकी यह शर्त मान ली और दोनों एक बार फिर से उसी शहर की ओर चले।

कुछ देर तक डाकू इधर उधर अपना दिमाग मारता रहा और सोचता रहा कि वह चोर को कैसे नीचा दिखाये। उसने सोचा "मुझे कोई ऐसी योजना बनानी चाहिये जिससे यह चोर तो जेल चला जाये और इसका सामान मेरे पास आ जाये।"

इधर उधर पूछने पर उसे पता चला कि राजा अपने घर की छत पर सोता था। उसका महल नदी के किनारे एक बहुत ही सुन्दर जगह पर था। डाकू ने चोर से कहा कि वह उसके काम में उसके साथ रहे जैसे कि वह रहा था और बिल्कुल चुप रहे।

डाकू ने कुछ लोहे की बड़ी बड़ी कीलें लीं और महल की ओर चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने दीवार में वे कीलें ठोकीं और किसी तरीके से छत पर चढ़ गया। जब वह ऊपर पहुँचा तो उसने

देखा कि राजा तो सो गया है। उसके पास केवल एक पहरेदार है जो इधर उधर चक्कर काट रहा है।

जब उसे मौका दिखायी दिया तब उसने पहरेदार को काट दिया और नदी में डाल दिया। उसके कपड़े आदि पहन कर वह पहरेदार के रूप में इधर उधर घूमने लगा। जबकि चोर एक ओर बैठ कर यह सब ध्यान से देखने लगा।

कुछ देर बाद राजा की आँख खुली तो उसने पुकारा "सन्तरी।" पहरेदार उसके पास गया और बोला "जी सरकार।"

राजा बोला — "यहाँ मेरे पास बैठो और मुझे एक कहानी सुनाओ ताकि में आराम से सो सकूँ।"

सो डाकू राजा के पास बैठ गया और राजा को सर्राफ चोर और मोतियों की कहानी सुनाने लगा। जब चोर ने यह सब सुना तो वह डर के मारे थर थर काँपने लगा।

उसने डाकू को कई बार इशारा किया कि वह या तो उस कहानी का रुख मोड़ दे या फिर कोई और कहानी सुनाये या फिर उसका नाम न ले पर डाकू ने ऐसा बहाना किया कि जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं और अपनी कहानी सुनाता ही रहा।

कि अचानक उसने फिर राजा को अपनी कहानी सुनानी शुरू कर दी कि किस तरह से वह लोहे की कीलें दीवार में गाड़ कर महल की छत पर चढ़ा था और फिर उसने सन्तरी को मार गिराया था।

राजा चिल्लाया — "या अल्लाह। फिर तुम कौन हो। तुम मुझे अभी अभी बताओ कि तुम कौन हो?"

डाकू बोला — "जनाब। आप चिन्ता न करें आप घबरायें भी नहीं। मैं डाकू हूँ।"

चिन्ता करते हुए राजा ने पूछा — "तो फिर मेरा सन्तरी कहाँ है?"

डाकू बोला — "मैंने अभी अभी उसका मरा हुआ शरीर नदी में फेंका है।"

यह सुन कर तो राजा बहुत ही चिन्तित हुआ। उसने सोचा "यह तो अभी मुझे भी काट कर फेंक सकता था पर इसने फेंका नहीं। यह कोई भला आदमी दिखायी देता है।"

यह सोच कर राजा को थोड़ी सी तसल्ली हुई। वह बोला "अच्छा ज़रा मेरे पास आओ।"

डाकू बोला — "पर योर मैजेस्टी। मैं तो आपको एक चोर की कहानी सुना रहा था। क्या आपको यह पता है कि यह आदमी इस समय आपके पीछे खड़ा हुआ है और यह वही चोर है और वह सर्राफ बिल्कुल बेकुसूर है उसने कोई अपराध नहीं किया।" कह कर वह चोर को राजा के कान के पास तक ले गया।

सुबह होने वाली हो रही थी। राजा के नौकर चाकर आने लगे थे। चोर पकड़ लिया गया था और सर्राफ को समय आने पर छोड़ दिया गया।

राजा जब अपनी राजगद्दी पर बैठा तो उसने हुक्म दिया कि मोतियों को सर्राफ और डाकू में बराबर बराबर बाँट देना चाहिये। और चोर को बन्दूक से उड़ा देना चाहिये।

इसके बाद डाकू खुशी खुशी अपने घर वापस लौट गया और जा कर अपनी पत्नी और अपने घर पर कब्जा कर लिया।"

चूहा आगे बोला — "बस अब इसके बाद मुझे आगे इसमें यही जोड़ना है कि इस बुद्धिमती का पिता जो डाकू को दूसरों की चीज़ें देता है वह भी इसी आकर्षक स्त्री का पिता है।"

यह सुन कर तो शाहज़ादी और भी अधिक गुस्से से भर गयी। वह ज़ोर से बोली — "ओ झूठ बोलने वाली आत्मा। सुबह होने पर मैं तुझे भी जलवा दूँगी।"

यह सुन कर दासी एक बार फिर आखिरी बार मीनार पर ढोल बजाने गयी। लोगों ने जब तीसरी बार ढोल की आवाज सुनी तो अपने बच्चों से कहा — "कल शाहज़ादी की शादी हो जायेगी।"

लोहार की बेटी बोली — "सलाम आलेकुम।"

चूहा भी बोला — "वालेकुम सलाम।"

इसके बाद दोनों दोस्त अलग हो गये। चूहा अपने रास्ते चला गया और लोहार की बेटी आँखें बन्द कर के सो गयी। अगली सुबह सारे शहर में हलचल थी। पूरे शहर में छुट्टी थी।

लोहार की बेटी सुबह समय से पहले ही उठ गयी। बहुत ही सावधानी से तैयार हुई और बाहर घुड़साल में चली गयी। वहाँ उसने

अपने पति गुल को देखा जो सईस की पोशाक में था और एक घोड़े के बालों में ब्रश कर रहा था।

उसने उसको बड़े प्यार से एक पल के लिये देखा तो उसकी ऑखों से एक ऑसू गिर पड़ा। उसने जल्दी ही अपने आपको सॅभाल लिया और महल लौट आयी। सारा दिन दावतें खेल चलते रहे आनन्द मनता रहा। फिर पुजारी जी भी आये।

बहुत सारे आदरणीय लोगों की उपस्थिति में लोहार की बेटी और शाहज़ादी दोनों की मुसलमान रीति रिवाज से शादी हो गयी। जब शादी के रीति रिवाज खत्म हो गये तब दुलहे ने अपनी दुलहिन से कहा — "मैंने तुम्हें बहुत सारी मुश्किलें होते हुए भी न्यायपूर्वक जीत लिया है। अब मेरी इच्छा के अनुसार तुम छह महीनों तक मेरे कमरे में नहीं आओगी।"

नकली शाहज़ादे की बुद्धि इतनी तेज़ थी कि उसके ससुर ने उसका बहुत आदर किया और उससे अपने देश के बारे में अक्सर राय लेते रहे। उसके बोलने और व्यवहार का ढंग इतना अच्छा था कि उसने वहॉ सबका दिल जीत लिया।

उसका सबसे पहला काम था राजा से विनती करना कि वह शाहज़ादी के घोड़ों पर काम करने वाले सब बदकिस्मत शाहज़ादों को छोड़ दे। उसकी यह विनती स्वीकार कर ली गयी पर क्योंकि यह हुक्म उसकी तरफ से आया था सो वह उन सबको छोड़ने में बहुत सावधान थी।

उसने बाकी सबको तो छोड़ दिया पर अपने पति को नहीं छोड़ा। उसके लिये उसका हुक्म यह था कि हर सुबह वह उसके लिये जीन कसा हुआ लगाम पड़ा हुआ घोड़ा ले कर आये और उसके साथ वहीं जाये जहाँ वह उसे ले जाये।

शाहज़ादा गुल ने देखा कि उसके सारे साथी तो आजाद हो कर अपने अपने घर जा चुके हैं और वह अभी भी यहाँ की शाहज़ादी की सेवा में लगा हुआ हूँ। यह सोच कर वह रो पड़ा। "मैं अकेला ही गुलामी में लगा हुआ हूँ।"

काफी समय बाद एक दिन लोहार की लड़की राजा के पास गयी और बोली — "हे राजा। मुझे आपसे एक बात कहनी है। मुझे अपने सम्बन्धियों से मिलने के लिये अपने देश जाना है।" राजा ने उसे इजाज़त दे दी।

राजा ने कुछ घुड़सवार उसके साथ कर दिये और यात्रा में उसके और अपनी बेटी के लिये आराम का सब सामान साथ रखवा दिया। उसके बाद लोहार की बेटी ने शाहज़ादा गुल से कहा कि वह उसके घोड़े के पास से कभी कहीं दूर न जाये। और उसके ऊपर भी उसने कुछ पहरेदार लगा दिये ताकि वह कहीं भाग न जाये।

जब चलते चलते कई दिन बीत गये तो शाहज़ादे गुल ने देखा कि वे लोग तो उसी के देश जा रहे थे। "उफ़ जब वह लोहार की बेटी मुझे वहाँ इस हाल में देखेगी तो क्या कहेगी।"

जब उसका घर दो तीन दिन की यात्रा पर रह गया तो वे एक रात रात के सोने के लिये बीच में रुके तो लोहार की बेटी ने अपने पति को बुलाया और उससे कहा — "मुझे एक बहुत जरूरी काम आ गया है जो मैं तुम्हें नहीं बता सकता पर तुम इतना समझ लो कि मुझे अपना वेश बदलना जरूरी है।

इसके लिये क्या तुम मुझे अपने सईस वाले कपड़े दोगे और बदले में तुम मेरे वाले कपड़े ले सकते हो ताकि मैं जब यहाँ न होऊँ तब तुम मेरी जगह ले सको। यहाँ तुम एक महीना रुको। कुछ दिनों बाद ही मैं तुमसे आ कर मिलता हूँ।"

शाहज़ादे को उसकी इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ पर उसकी आज्ञा का पालन करते हुए उसने अपने मालिक की पोशाक पहन ली और अपनी पोशाक उसे दे दी।

पर लोहार की बेटी ने क्या किया कि उसने सईस की पोशाक और उसका ब्रश आदि एक बक्से में ताला लगा कर और उसे अपने साथ ले कर खुद चोरी से अपने पिता के घर खिसक ली।

दो दिन निकल गये पर लोहार की बेटी नहीं लौटी तो शाहज़ादे गुल ने सोचा "इस शाहज़ादे ने हमसे शाहज़ादी और उनके काफिले के साथ यहाँ एक महीने के लिये रहने के लिये कहा है। मेरे पिता भी एक ताकतवर राजा हैं और मेरा घर भी पास ही है तो क्यों न मैं शाहज़ादी को अपने घर ले जाऊँ और उनसे जा कर कहूँ कि मैं इसे जीत लाया हूँ।"

सो उस रात उसने कुछ हुक्म दिये और तीसरे दिन अपने महल पहुँच गया। वह जीतते हुए महल में घुसा। सब जगह यह मुनादी पिटवा दी गयी कि शाहज़ादा गुल मशहूर न बोलने वाली शाहज़ादी को जीत कर घर ले आये हैं।

जब लोगों ने उसे शहर की सड़कों पर अपने पिता के साथ अपने घोड़े पर घूमते देखा जो अपने सिपाहियों के साथ उसके साथ साथ हर घर में घूमने निकला था तो उनको सच्चाई का पता भी चल गया।

अगले दिन शाहज़ादे ने अपने ससुर लोहार के पास सन्देश भेजा कि वह अपनी बेटी को उसके पति के घर भेज दे। जैसे ही वह महल आयी उसने उससे कहा — "तुमने इसी शाहज़ादी के लिये मुझे ताना मारा था न। अब तुम क्या कहती हो। क्या मैंने इसे नहीं जीता?"

उसने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया — "क्या सचमुच में तुमने ही इसे जीता या फिर मैंने इसे जीता।"

शाहज़ादे ने उसका विरोध करते हुए कहा — "हाँ इसे मैंने ही तो जीता है।"

लड़की ने भी कहा — "नहीं इसे मैंने जीता।" कह कर उसने अपना छोटा सा पैर जमीन पर दे कर मार दिया। तुरन्त ही एक नौकर अन्दर से एक बक्सा ले आया।

सबको वहाँ से बाहर भेज दिया गया उसके बाद उसने वह बक्सा खोला और उसमें से एक जोड़ी सईस के कपड़े और उसका ब्रश निकाला और उनको उसे दिखा कर बोला — "क्या यह सब तुम्हारा है या मेरा?"

शाहज़ादा तो उसे देखता ही रह गया। एक पल के लिये तो वह कुछ भी न बोल सका। फिर वह हकलाता हुआ बोला — "ये तो मेरे हैं।"

लड़की ने फिर पूछा — "अब बताओ कि इस शाहज़ादी को तुमने जीता या मैंने जीता?"

वह नीची निगाह कर के बोला — "तुमने।"

लड़की आगे बोली — "अगर तुम अपने पिता के वज़ीरों के साथ उन मिट्टी के बर्तनों का भेद पता नहीं लगा सके तो तुम इस बिना बोलने वाली शाहज़ादी को कैसे जीत सकते थे। पर अब तुम इसे ले लो यह तुम्हारी ही है। इससे शादी कर लो और फिर हम सब खुशी खुशी एक साथ रहेंगे।"

20 एक राजा और चार लड़कियों की कहानी[79]

एक बार की बात है कि एक राजा था जो दिन में तो अपने सिंहासन पर बैठ कर न्याय किया करता था और रात को भेष बदल कर शहर की सड़कों पर घूमा करता था।

एक शाम वह किसी बागीचे के पास से गुजर रहा था कि उसने एक पेड़ के नीचे चार लड़कियाँ बैठी देखीं। वे चारों बड़े प्यार से बातें कर रही थीं। उसको उनकी बातें जानने की उत्सुकता हुई तो वह वहीं रुक कर उनकी बातें सुनने लगा।

उनमें से एक लड़की बोली — "मुझे तो ऐसा लगता है कि सबसे ज़्यादा खुशी माँस खाने में मिलती है और वही सबसे ज़्यादा स्वाददार खाना भी होता है।"

दूसरी लड़की बोली — "मैं ऐसा नहीं सोचती। मुझे लगता है कि वाइन से ज़्यादा स्वाददार कुछ भी नहीं।"

तीसरी लड़की बोली — "नहीं तुम दोनों गलत हो। इन सबसे अच्छा तो प्यार का स्वाद है। उससे ज़्यादा स्वाददार कुछ नहीं।"

यह सुन कर चौथी लड़की बोली — "माँस, वाइन और प्यार बेशक बहुत स्वाददार हैं पर झूठ बोलने से ज़्यादा प्यारी चीज़ तो दुनियाँ में कोई है ही नहीं।"

---

[79] The Story of the King and the Four Girls. (Tale No 22)

ये बातें करने के बाद वे लड़कियाँ वहाँ से अपने अपने घर चली गयीं। राजा भी जो अब तक उनकी बातें बड़ी रुचि से सुन रहा था जिस जिस घर में वे गयी थीं उस घर का पता देख कर अपने महल वापस आ गया। वह उनके घर पर चौक से निशान लगा आया था।

अगले दिन उसने अपने वज़ीर को बुलाया और उससे कहा कि वह किसी को गली में भेजे और उस गली में मैंने जिन जिन घरों पर निशान लगा रखे हैं उनके मालिकों को मेरे पास बुलवाया जाये। वज़ीर खुद गया और उन चारों मकानों के मालिकों को राजा के पास ले आया।

राजा ने उनसे पूछा — "क्या आप लोगों के एक एक बेटी है?"

उन्होंने कहा — "हाँ है।"

राजा ने कहा — "तो अपनी बेटियों को मेरे पास ले कर आओ।"

पर लोगों ने इस बात के लिये मना किया कि उनकी बेटियों का महल में आना उचित नहीं है। राजा बोला "ऐसी कोई बात नहीं है। तुम लोग उनके बारे में बिल्कुल चिन्ता न करो। वे जब तुम्हारी बेटियाँ हैं तो वे मेरी भी बेटियाँ हैं। इसके अलावा तुम लोग चाहो तो उन्हें अकेले में ला सकते हो।"

सो राजा ने उन्हें लाने के लिये चार परदा लगी हुई पालकियाँ भेजीं और उन चारों को महल बुलवाया। महल में उन्हें ला कर एक बड़े कमरे में बिठा दिया गया। वहाँ से राजा ने उन्हें एक एक कर के बुलाया।

उसने पहली लड़की को बुलाया और उससे कहा — "कल रात जब तुम अपनी साथिनों के साथ बागीचे में बैठी हुई थीं तब तुम क्या कह रही थीं।"

लड़की डर गयी और सहमते हुए बोली — "सरकार मैंने आपके खिलाफ कुछ नहीं कहा।"

राजा बोला — "नहीं नहीं वह बात नहीं है। मैं तो बस यह जानना चाहता हूँ कि तुम कल कह क्या रही थीं।"

लड़की बोली — "मैं तो बस यह कह रही थी कि माँस का स्वाद सबसे ज़्यादा अच्छा होता है।"

राजा ने पूछा — "तुम किसकी बेटी हो?"

"मैं एक भाब्रा की बेटी हूँ।"

राजा बोला — "अगर तुम भाब्रा जाति की हो जिसमें माँस नहीं खाया जाता तो तुम माँस के स्वाद के बारे में क्या जानती हो। क्योंकि वे तो इतने पक्के हैं कि जब वे पानी पीते हैं तो उसके ऊपर कपड़ा लगाते हैं कहीं ऐसा न हो कि वे गलती से भी कोई कीड़ा न पी जायें।"

इस पर लड़की बोली — “आप ठीक कह रहे हैं सरकार लेकिन मुझे ऐसा लगा कि माँस बहुत स्वाददार होना चहिये। मेरे घर के पास एक कसाई की दूकान है तो मैंने देखा कि जो लोग माँस खरीद कर ले जाते हैं वे उसमें से कुछ भी बरबाद नहीं करते। इसका मतलब है कि वह बहुत कीमती होता होगा।

मैंने यह भी देखा है कि जब वे उसका माँस खा लेते हैं तो कुत्ते उसकी हड्डी को बड़े लालचीपने से खाते रहते हैं और तब तक खाते रहते हैं जब तक वह भाले की नोक की तरह से चमक नहीं जाती।

उसके बाद भी कौए आते हैं और उसे ले जाते हैं और जब वे उसे खत्म कर लेते हैं तब चींटियाँ उसके ऊपर इकट्ठी हो जाती हैं। ये ही सब बातें यह साबित करती हैं कि माँस सबसे स्वाददार होता है।”

राजा उसके तर्क सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला — “हाँ बिटिया। माँस बहुत स्वाददार होता है। हर कोई उसे पसन्द करता है।” राजा ने उसे एक बहुत सुन्दर भेंट दे कर वापस भेज दिया।

फिर राजा ने दूसरी लड़की को बुलाया और उससे भी वही सवाल पूछा जो उसने पहली लड़की से पूछा था कि वह पिछली रात अपनी साथिनों से क्या कह रही थी।

वह भी राजा के इस सवाल से डर गयी सहमते हुए बोली — “सरकार मैं आपके बारे में तो कुछ भी नहीं कह रही थी।”

राजा बोला — "यह तो तुम ठीक कह रही हो पर तुम कह क्या रही थीं।"

लड़की बोली — "मैं क्या कह रही थी। हाँ मैं कह रही थी कि वाइन का स्वाद सबसे अच्छा होता है।"

राज ने फिर पूछा — "तुम किसकी बेटी हो?"

लड़की बोली — "मैं एक मुल्ला की बेटी हूँ।"

राजा बोला — "अच्छा मजाक है दिल बहलाने के लिये। मुल्ला लोग तो वाइन से बहुत ही नफरत करते हैं। तब तुम उसके स्वाद के बारे में क्या जानती हो।"

इस पर लड़की बोली — "यह सच है कि मैंने कभी वाइन छुई भी नहीं पर मैं बड़ी आसानी से समझ सकती हूँ कि वह कितनी स्वाददार होती होगी। मैं अपने पिता के घर की छत पर बैठ कर पढ़ती हूँ। घर के नीचे कुछ वाइन की दूकानें हैं।

एक दिन मैंने देखा कि वहाँ दो बहुत अच्छे कपड़े पहने लोग आये। उनके साथ उनके नौकर भी थे। उन नौकरों ने उनके लिये वाइन खरीदी और वे वाइन पीने बैठ गये।

कुछ समय बाद वे उठ गये और वहाँ से चले गये। पर वे कुछ झूमते हुए चले जा रहे थे। तो मैंने सोचा कि ये लोग इतने मस्त हो कर जा रहे हैं कि कभी इस दीवार से टकरा जाते हैं तो कभी उस दीवार से इसलिये अब ये दोबारा यहाँ वाइन पीने नहीं आयेंगे।

पर मैं गलत थी। अगले दिन वे लोग पीने के लिये फिर से वहाँ हाजिर थे और फिर वही कर रहे थे। इसलिये मैंने सोचा कि यह कोई बहुत अच्छी चीज़ होगी नहीं तो ये लोग यहाँ उसी चीज़ को पीने के लिये फिर नहीं आते जिसे पी कर इनसे चला भी नहीं जा रहा था।"

राजा बोला — "तुम ठीक कह रही हो बिटिया। वाइन का स्वाद बहुत अच्छा होता है।" कह कर उसने उसे भी एक बहुत अच्छी भेंट दी और विदा किया।

राजा ने फिर तीसरी लड़की को बुलाया और उससे भी वही सवाल पूछा जो उसने पहली दोनों लड़कियों से पूछा था कि "कल शाम तुम पेड़ के नीचे बैठी हुई अपनी साथिनों से क्या कह रही थीं।"

लड़की बोली — "सरकार मैं आपके बारे में कुछ नहीं कह रही थी।"

राजा बोला — "यह तो ठीक है पर तुम वहाँ कह क्या रही थीं।"

लड़की बोली — "मैं कह रही थी कि दुनियाँ भर में प्यार करने जैसी दूसरी कोई स्वाददार चीज़ नहीं है।"

राजा बोला — "पर प्यार करने के लिये तो तुम अभी बहुत छोटी हो। प्यार करने के बारे में तुम क्या जानती हो? तुम किसकी बेटी हो?"

लड़की बोली — "मैं एक मिरासी[80] की बेटी हूँ। यह आप सच कह रहे हैं कि प्यार करने के बारे में मैं अभी बहुत छोटी हूँ पर किसी तरह से मुझे लगा कि प्यार करना अवश्य ही बहुत ही मीठा होता होगा।

जब मेरा छोटा भाई पैदा हुआ था तो मेरी माँ इतने ज़्यादा कष्ट में थी कि उनके जीने की उम्मीद ही नहीं रह गयी थी। पर कुछ समय बाद उन्हें अपने पुराने दिनों की याद आयी और उन्होंने अपने प्रेमियों को पहले की तरह से फिर से बुलाना शुरू कर दिया। इससे मुझे लगा कि प्यार बहुत मीठा होता है।"

राजा बोला — "तुम ठीक कह रही हो। इस बात को मना नहीं किया जा सकता।" राजा ने उसे भी उसी कीमत के बराबर की एक भेंट दी और विदा किया।

अब उसने चौथी लड़की को बुलाया और उससे भी वही सवाल पूछा — "तुम कल शाम पेड़ के नीचे बैठ कर अपनी साथिनों से क्या कह रही थीं।"

लड़की कुछ डरी हुई सी बोली — "सरकार मैं आपके बारे में कुछ नहीं कह रही थी।"

राजा बोला — "फिर भी तुम क्या कह रही थीं?"

लड़की बोली — "मैं तो सरकार यह कह रही थी कि जो लोग झूठ बोलते हैं उन्हें झूठ बोलने में बहुत आनन्द आता है।"

---

[80] Translated for the word "Bard". Mirasi sings other's praises. Bhat's wives are usually dancing girls.

राजा ने पूछा — "तुम किसकी बेटी हो?"

लड़की बोली — "मैं एक किसान की बेटी हूँ।"

राजा बोला — "तो तुमने यह कैसे सोच लिया कि झूठ बोलने में लोगों को आनन्द आता है।"

लड़की ने मुस्कुरा कर कहा — "आप खुद एक दिन झूठ बोलेंगे।"

राजा ने पूछा — "कैसे। इस बात से तुम्हारा क्या मतलब है?"

लड़की बोली — "अगर आप मुझे दो लाख रुपये दें और छह महीने का समय दें तो मैं वायदा करती हूँ कि मैं अपनी इस बात को साबित कर दूँगी।"

राजा ने उसकी शर्तें मान कर उसे दो लाख रुपये और छह महीने का समय दे दिया। और एक वैसी ही भेंट जैसी कि उसने दूसरी लड़कियों को दी थी दे कर उसे विदा किया।

छह महीने बाद उसने उस लड़की को फिर बुलाया और उसे उसका वायदा याद दिलाया। इस बीच लड़की ने वहाँ से दूर एक जंगल में एक बहुत सुन्दर महल बनवाया जिस पर उसने राजा का दिया हुआ पैसा खर्च किया था।

उसमें खुदायी का बहुत अच्छा काम किया गया था बहुत सुन्दर चित्र लगे हुए थे सिल्क और साटन के परदे लगे हुए थे। सो राजा से उसने कहा "आप मेरे साथ आइये। वहाँ आपको भगवान दिखायी देगा।"

राजा ने अपने दो मन्त्री अपने साथ लिये और लड़की के साथ चल दिया। शाम तक वे सब महल पहुँच गये।

लड़की ने कहा कि यह महल भगवान का घर है। पर भगवान इसमें एक बार में केवल एक अकेले आदमी को ही दर्शन देते हैं। वह उसे भी दर्शन नहीं देंगे जिसका जन्म बिना शादी किये हुए माता पिता से हुआ होगा। इसलिये आप सब इसमें एक एक कर के घुसें और भगवान के दर्शन करें।"

राजा बोला — "ठीक है। मेरे मन्त्री मुझसे पहले जायेंगे। मैं इन दोनों के बाद में जाऊँगा।"

सो राजा के दोनों में से एक मन्त्री महल के दरवाजे से अन्दर घुसा तो वह एक बहुत ही सुन्दर सलीकेदार कमरे में आ गया। वह वहाँ चारों तरफ देख रहा था और सोच रहा था कि "कौन जानता है कि भगवान मुझे यहाँ दर्शन देंगे या नहीं। अगर मैं शादी के बाहर का बच्चा हुआ तो। पर फिर भी यह जगह तो भगवान के रहने के लायक जगह है।"

बहुत ध्यान से देखने पर भी वह भगवान को वहाँ देख न सका। उसने सोचा अगर मैं बाहर जा कर यह बोला कि मुझे तो यहाँ भगवान कहीं नहीं दिखायी दिये तो राजा और दूसरे मन्त्री मुझे शादी के बाहर का बच्चा कहेंगे। इसलिये मेरे सामने तो बस एक ही रास्ता खुला है कि मैं बाहर जा कर यह कहूँ कि "हाँ मैंने यहाँ भगवान के दर्शन किये हैं।"

यह सोच कर वह बाहर गया तो राजा ने उससे पूछा कि "क्या तुम्हें भगवान के दर्शन हुए?"

"जी हॉ बिल्कुल। मुझे भगवान के दर्शन हुए।"

राजा को विश्वास नहीं हुआ तो उसने फिर पूछा — "क्या तुम्हें सचमुच में भगवान के दर्शन हुए?"

मन्त्री बोला — "जी हॉ सरकार। मुझे सचमुच में भगवान के दर्शन हुए।"

राजा ने फिर पूछा — "तो उन्होंने तुमसे क्या कहा?"

मन्त्री तुरन्त बोला — "भगवान ने कहा कि जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूॅ उसे किसी से मत कहना।"

अब राजा ने दूसरे मन्त्री से अन्दर जाने के लिये कहा तो वह भी राजा का हुक्म पालन करने के तुरन्त ही अन्दर चला गया। पर जैसे ही उसने महल की देहलीज़ लॉघी तो सोचा "कहीं मैं भी तो शादी से बाहर का बच्चा नहीं।"

क्योंकि वह भी जब कमरे में पहुॅच गया तो अपने चारों तरफ देखने लगा और उसे भी वहॉ कोई भगवान वगवान नहीं दिखायी दिये तो वह भी यह सोचने पर मजबूर हो गया कि शायद वह जरूर ही शादी से बाहर का बच्चा है इसी लिये उसे भगवान के दर्शन नहीं हुए।

पर अगर मैं बाहर जा कर यह कहूॅगा कि मुझे भगवान के दर्शन नहीं हुए तब तो मेरी बड़ी बदनामी होगी लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे

इसलिये मेरे लिये यही कहना ठीक होगा कि मुझे भगवान दिखायी दिये थे।" यह सोच कर वह महल से बाहर निकल आया।

उसके बाहर निकलते ही राजा ने उससे पूछा — "क्या तुम्हें भगवान के दर्शन हुए?" तो मन्त्री ने ज़ोर दे कर कहा कि न केवल उसने भगवान को देखा है बल्कि उसने उनसे बातें भी की हैं।

अब राजा की बारी थी। वह भी यह सोचते हुए कमरे के अन्दर घुसा कि जब उसके मन्त्रियों को भगवान ने दर्शन दिये हैं तो वह तो राजा है वह उसे जरूर ही दर्शन देंगे।

पर उसे तो अन्दर जा कर बड़ा अफसोस हुआ जब उसे ऐसी कोई भी चीज़ दिखायी नहीं दे जिसे वह भगवान कह सकता। तब उसने सोचा "इस भगवान को जो जहाँ भी है जब मेरे दोनों मन्त्रियों ने देखा है और इसे कोई मना भी नहीं कर सकता तो इसका मतलब यह है कि उन दोनों के माता पिता दोनों ही ठीक से शादी शुदा थे।

पर क्या यह सम्भव है कि अगर मुझे भगवान ने दर्शन नहीं दिये तो मैं शादी से बाहर का पैदा हुआ बच्चा हूँ। यह तो विचार ही बहुत खराब है। यह बात मुझे मजबूर करती है कि मैं भी यही कहूँ कि मुझे भी भगवान के दार्शन हुए हैं।"

यह सोच कर राजा भी महल से बाहर निकला और आ कर अपने मन्त्रियों और लड़की से मिला। चालाक लड़की ने राजा से पूछा — "राजा साहब। क्या आपको अन्दर भगवान के दर्शन हुए?"

राजा ने बड़े विश्वास के साथ कहा — "हॉ। मुझे भगवान के दर्शन हुए।"

लड़की ने फिर पूछा — "क्या सच में?"

राजा ने फिर कहा — "हॉ निश्चित रूप से।"

लड़की ने राजा से यही सवाल तीन बार पूछा और राजा ने तीनों बार बेशर्मी से वही जवाब दिया कि उसने अन्दर भगवान को देखा है।

तब लड़की ने कहा — "राजा साहिब। क्या आपको कोई समझ है? यह जानते हुए भी कि भगवान एक आत्मा है क्या आप भगवान को देख सकते हैं?"

यह सुन कर राजा को उस लड़की की बात याद आ गयी कि "उसने कहा था कि एक दिन आप भी झूठ बोलेंगे।" सो हॅस कर वह बोला कि उसने महल में कोई भगवान नहीं देखा।

यह सुन कर दोनों मन्त्री भी शरमा गये और सच स्वीकार किया कि उन्होंने भी कोई भगवान नहीं देखा था।

तब लड़की बोली — "हम गरीब लोग कभी कभी अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये झूठ बोलते हैं पर आपको किस बात का डर था। इसलिये झूठ बोलना कभी कभी आदमी को आकर्षित करता है और उनके लिये झूठ बोलना भी एक मीठे स्वाद से कम नहीं है।"

उस लड़की से बजाय गुस्सा होने के कि राजा से झूठ बुलवाने का उसने इस तरह का प्लान बनाया राजा उससे इतना खुश हुआ

कि उसने उससे शादी कर ली। बहुत थोड़े ही समय में वह उसकी प्राइवेट सलाहकार बन गयी और साथ में उसके राजकाज में भी हाथ बॅटाने लगी।

इस तरह से एक सादी सी लड़की अपनी होशियारी की वजह से रानी बन गयी और एक इज़्ज़तदार पद पर मशहूर हो गयी।

List of Stories of “Intelligent Women in Folktales”

1. Girl Who Saved Herself by Telling Stories
2. The Peasant's Wise Daughter
3. Catherine, Sly Country Lass
4. Catherine the Wise
5. The Wise Little Girl
6. The Chief Who Was no Fool
7. Intelligent Daughter
8. First Sword and the Last Broom
9. Bejeweled Boot
10. Two Daughters
11. Cunning Wife
12. Chang Ku Lao's Test
13. One Hundred Cattle
14. Ansige Karamba, the Glutton
15. Work for the Demon
16. Why the Fish Laughed
17. The Garden Witch
18. The Clever Girl
19. Gholam Badshah and His Son Ghool.
20. The Story of the King and the Four Girls

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022